दैनिक जागरण
विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार
Sunday
वर्ष 72 अंक 153 पृष्ठ 12
रीवा, रविवार 02 मार्च, 2025
फाल्गुन शुक्ल पक्ष 03, विक्रम संवत् 2081
नगर मूल्य 5 रुपए
www.dainikjagranmpcg.com

बहस के बाद व्हाइट हाउस से निकाले गए जेलेंस्की

रात को ही छोड़ा अमेरिका, लंदन पहुंचे जहां यूरोप के नेता यूक्रेन के मसले पर आज करेंगे बैठक, रूस को घेरने की बनाएंगे रणनीति

वॉशिंगटन, लंदन, जेएनएन। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोडिमिर जेलेंस्की को अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के साथ बहस के बाद व्हाइट हाउस से निकाल दिया गया। इसके बाद उन्होंने रात में ही अमेरिका छोड़ दिया और लंदन पहुंच गए, जहां रविवार को यूरोपीय नेता यूक्रेन के मसले पर बैठक करेंगे। वे रूस को घेरने की नीति बनाएंगे।

ट्रंप व जेलेंस्की के बीच शुक्रवार को करीब 10 मिनट तक तीखी बहस हुई थी। व्हाइट हाउस के एक अधिकारी ने मीडिया को बताया कि बहस के बाद यूक्रेन के डेलिगेट्स ओवल ऑफिस से निकलकर दूसरे कमरे में चले गए थे। अमेरिकी टीम वहीं रुकी रही। इस दौरान ट्रंप ने उपराष्ट्रपति जेडी वेंस, विदेश मंत्री मार्को रुबियो और एनएसए माइक वाल्ट्ज से बातचीत की। इसके बाद ट्रंप ने माइक वाल्ट्ज और रुबियो से कहा कि वे जाकर खुद जेलेंस्की से कह दें कि उनके जाने का वक्त हो गया है। ये दोनों अधिकारी जब गेस्ट रूम में पहुंचे तो जेलेंस्की डिनर की तैयारी कर रहे थे। मीडिया रिपोर्ट्स में कहा गया है कि जेलेंस्की से कह दिया गया कि वे व्हाइट में नहीं रुक सकते। हालांकि जेलेंस्की ने माइक वाल्ट्ज और रुबियो से कहा कि वे चीजों को अब भी ठीक कर सकते हैं। जेलेंस्की ने फिर से ट्रंप के साथ बातचीत करने की इच्छा जाहिर की, लेकिन उन्हें यह मौका नहीं दिया गया। इसके बाद भारतीय समय के अनुसार शनिवार सुबह करीब 11 बजे जेलेंस्की यूक्रेन पहुंच गए। उधर, जेलेंस्की को व्हाइट से निकालने के बाद ■ शेष पृष्ठ 7 पर

अमेरिका का सहयोग जरूरी: जेलेंस्की

अमेरिका से जेलेंस्की लंदन पहुंचे। यहां उन्होंने शनिवार को एक के बाद एक 14 ट्वीट कर कहा कि वे शांति चाहते हैं। उन्होंने यूक्रेन को समर्थन देने के लिए अमेरिका का शुक्रिया अदा किया और कहा कि उनके लिए राष्ट्रपति ट्रंप का समर्थन पाना बेहद जरूरी है। यूक्रेन को अमेरिका के समर्थन की सख्त जरूरत है। उन्होंने लिखा कि वे मिनरल डील के लिए तैयार हैं और ये समझौता हुआ तो सुरक्षा गारंटियों की ओर ये पहला कदम होगा। अपने ट्वीट में जेलेंस्की ने यूक्रेन और अमेरिका के मजबूत रिश्तों की अहमियत की बात की और लिखा कि उन्हें उम्मीद है कि यूक्रेन को अमेरिका का साथ मिलेगा। हालांकि, जेलेंस्की ने ट्रंप से माफी मांगने से इंकार कर दिया। उन्होंने कहा कि जब तक सुरक्षा की गारंटी नहीं मिल जाती, वे किसी पीस डील में शामिल नहीं होंगे। जेलेंस्की ने कहा कि वे ट्रंप का सम्मान करते हैं। बहस दोनों के लिए अच्छी नहीं रही, लेकिन ट्रंप को यह समझने की जरूरत है कि यूक्रेन, रूस को लेकर अपना रवैया एक दिन में नहीं बदल सकता।

फ्रांस-जर्मनी सहित 13 देशों की बैठक आज

लंदन में रविवार को यूरोपीय देशों की एक समिट होनी है। इस समिट में फ्रांस, जर्मनी, डेनमार्क, इटली समेत 13 देश शामिल होंगे। साथ ही नाटो के महासचिव और यूरोपीय संघ और यूरोपीय काउंसिल के प्रेसिडेंट भी शामिल होंगे। यह बैठक ब्रिटेन ने आयोजित की है, जिसमें यूक्रेन के मसले पर विचार-विमर्श होगा। इस बीच यूरोप के सभी देशों ने जेलेंस्की के प्रति अपना समर्थन जताया है। नॉर्वे, नीदरलैंड, पोलैंड, यूरोपीय यूनियन, जर्मनी, ब्रिटेन जैसे यूरोपीय देशों के अलावा कनाडा और ऑस्ट्रेलिया ने भी जेलेंस्की के प्रति समर्थन जताया है।

जेलेंस्की युद्ध के लिए बेहद उन्मादी: रूस

रूस ने शनिवार को यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोडिमिर जेलेंस्की की अमेरिकी यात्रा को पूरी तरह से विफल करार दिया और भड़कते हुए दो टूक कहा कि जेलेंस्की युद्ध जारी रखने के लिए जुनूनी हैं। वह युद्ध उन्मादी हैं। रूसी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता मारिया जखारोवा ने एक बयान में कहा, नव-नाजी शासन के प्रमुख जेलेंस्की की सनक से यूक्रेन के आम लोग परेशान हैं। जेलेंस्की की वॉशिंगटन यात्रा के बाद यूक्रेन में रूस के लक्ष्य में कोई बदलाव नहीं आया। उन्होंने कहा कि रूस का लक्ष्य यूक्रेन का विसैन्यीकरण और नाजीवाद को समाप्त करना है। रूस अपना लक्ष्य हासिल कर रहा है।

फरवरी में सरकार को जीएसटी से मिले 1.84 लाख करोड़ रुपए

नई दिल्ली, जेएनएन। सरकार को फरवरी में जीएसटी से 1.84 लाख करोड़ रुपए मिले। सालाना आधार पर इसमें 9.1 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। शनिवार को जारी किए गए आंकड़ों के मुताबिक, एक साल पहले यानी फरवरी 2024 में सरकार ने 1.68 लाख करोड़ रुपए जीएसटी से कलेक्ट किए थे। एक महीने पहले यानी जनवरी में सरकार ने जीएसटी से 1.96 लाख करोड़ रुपए जुटाए थे, जो पिछले साल जनवरी के मुकाबले 12.3 प्रतिशत ज्यादा थे। वहीं, फरवरी लगातार 12वां महीना रहा, जब मंथली कलेक्शन 1.7 लाख करोड़ से ज्यादा रहा। 2024-25 में अब तक 18.24 लाख करोड़ जीएसटी से आ चुके हैं। अभी मार्च का कलेक्शन आना बाकी है। ग्रॉस टैक्स कलेक्शन के लिहाज से नवंबर-2024 जीएसटी लागू होने से लेकर अब तक का तीसरा सबसे बड़ा कलेक्शन मंथ रहा था।

केरल हाईकोर्ट ने पुलिस को फटकारा, रेप के आरोपी को अग्रिम जमानत

शिकायतकर्ता अगर महिला है तो भी उसकी हर बात सही नहीं मानी जा सकती

कोच्चि, जेएनएन। केरल हाईकोर्ट ने कहा कि यौन अपराधों सहित सभी आपराधिक मामलों में यह नहीं माना जा सकता कि शिकायतकर्ता महिला है तो उसकी कही गई हर बात सच होगी, क्योंकि आजकल ऐसे मामलों में निर्दोष लोगों को फंसाने की प्रवृत्ति पनप रही है।

जस्टिस पीवी कुन्हीकृष्णन ने यह टिप्पणी एक पूर्व महिला कर्मचारी का यौन उत्पीड़न करने के आरोपी को अग्रिम जमानत देते हुए की। हाईकोर्ट ने कहा कि इस मामले में पुलिस ने ठीक से जांच नहीं की। आरोपी ने कहा था कि महिला ने उसके साथ गाली गलौच की थी। कोर्ट ने कहा, शिकायतकर्ता की तरफ से दर्ज मामले की एकतरफा जांच नहीं की जा सकती। पुलिस को दोनों पक्षों के बयान सुनने चाहिए। उस हिसाब से जांच को आगे बढ़ाना चाहिए। कोर्ट ने कहा- अगर शिकायतकर्ता झूठ निकले तो उस पर कार्रवाई जरूर करें। कोर्ट ने पुलिस अधिकारियों से कहा कि जांच के दौरान ही आपराधिक मामलों में सच्चाई का पता लगाने के लिए सतर्क और सजग रहना चाहिए। इसलिए आपराधिक मामलों में अंतिम रिपोर्ट प्रस्तुत करने से पहले अनाज से भूसा अलग करना पुलिस का काम है।

यह था मामला

यह पूरा मामला एक कंपनी के दो कर्मचारियों से जुड़ा है। पीड़ित महिला जिस कंपनी में काम करती थी, आरोपी वहां मैनेजर था। महिला ने आरोप लगाया था कि आरोपी ने यौन इरादे से उसके हाथ पकड़ लिए थे। हालांकि आरोपी ने इससे इंकार किया। आरोपी ने खुद महिला के खिलाफ दुर्व्यवहार की शिकायत की थी। पूरी बातचीत को उसने रिकॉर्ड भी किया था। इसे पेन ड्राइव में भरकर पुलिस को सौंप दिया था। उसने यही पेन ड्राइव अदालत में पेश की।

प्रदूषण कम करने के लिए सरकार का फैसला

दिल्ली में 15 साल पुराने वाहनों को पेट्रोल-डीजल नहीं मिलेगा

नई दिल्ली, जेएनएन। दिल्ली में 15 साल और उससे ज्यादा पुराने वाहनों को 31 मार्च से पेट्रोल-डीजल नहीं दिया जाएगा। दिल्ली में बढ़ते एयर पॉल्यूशन को कंट्रोल करने के लिए दिल्ली सरकार ने यह कदम उठाया है। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने कहा, इस फैसले की जानकारी केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्रालय को जल्द दी जाएगी। हम पेट्रोल पंपों पर गैजेट लगा रहे हैं जो 15 साल से पुराने वाहनों की पहचान करेंगे।

सिरसा ने कहा कि दिल्ली सरकार वाहनों से होने वाले उत्सर्जन और प्रदूषण को रोकने के लिए कड़े कदम उठा रही है। शहर की सभी ऊंची इमारतों, होटलों पर एंटी-स्मॉग गन लगाना अनिवार्य किया गया है। सिरसा के मुताबिक दिल्ली में लगभग 90 प्रतिशत पब्लिक सीएनजी बसों को दिसंबर 2025 तक सिस्टेमेटिक तरीके से हटा दिया जाएगा। इनकी जगह इलेक्ट्रिक बसें चलाई जाएंगी जो स्वच्छ और टिकाऊ पब्लिक ट्रांसपोर्ट के लिए बेस्ट हैं।

बता दें कि दिल्ली में पर्यावरण सबसे बड़ी समस्या है। दिल्ली में 18-19 नवंबर 2024 को कई इलाकों का एयर क्वालिटी इंडेक्स 400 के पार था जो खतरनाक ■ शेष पृष्ठ 7 पर

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर कुलियों से मिले राहुल

स्टेशन पर भगदड़ के दौरान मदद के लिए धन्यवाद दिया

नई दिल्ली, जेएनएन। लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने शनिवार को नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर कुलियों से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने उनकी समस्याएं सुनीं और समाधान का भरोसा दिलाया। स्टेशन पर मौजूद कुली दीपेश मीणा ने कहा कि हम बहुत खुश हैं कि राहुल गांधी हमसे मिलने आए। उन्होंने हमारी सभी समस्याएं ध्यान से सुनीं। हमें उम्मीद है कि वे हमारी परेशानियों को हल करेंगे। वह करीब 40 मिनट तक हमारे साथ रहे और हमारी बातों को गंभीरता से सुना। हम खुश हैं कि उन्होंने हमारे बीच आकर हमारी बात सुनी। बता दें कि राहुल गांधी से मुलाकात को लेकर कुलियों में जबर्दस्त उत्साह था। उनका कहना है कि पहली बार

कोई बड़ा नेता उनके बीच आया और उनकी समस्याओं को सुना। वहीं, राहुल गांधी ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि अक्सर सबसे अंधकार भरे समय में ही इंसानियत की रोशनी सबसे ज्यादा चमकती है। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भगदड़ के दौरान कुली भाइयों ने इंसानियत की मिसाल पेश करते हुए कई यात्रियों की जान बचाई थी।

कॉमर्शियल गैस सिलेंडर 6 रु. महंगा

नई दिल्ली, जेएनएन। शनिवार से 19 किलो वाला कॉमर्शियल गैस सिलेंडर 6 रुपए तक महंगा हो गया है। दिल्ली में इसकी कीमत 6 रुपए बढ़कर 1803 हो गई। पहले ये 1797 में मिल रहा था। कोलकाता में यह 6 रुपए बढ़कर 1913 में मिल रहा है, पहले इसके दाम 1907 थे। मुंबई में सिलेंडर 1749 रुपए से 5.5 रुपए बढ़कर 1755.50 रुपए हो गया है। चेन्नई में सिलेंडर 1965 रुपए पर मिल रहा है। हालांकि, 14.2 किलोग्राम वाले घरेलू गैस सिलेंडर की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में यह 803 और मुंबई में 802.50 में मिल रहा है।

कर्नाटक में उत्पादों पर कन्नड़ लिखना जरूरी

बेंगलुरु, जेएनएन। कर्नाटक सरकार ने सरकारी ऑफिस, एजुकेशनल इंस्टीट्यूट और बिजनेस में कन्नड़ भाषा को अनिवार्य करने का आदेश जारी किया है। इस कदम का मकसद प्रशासन, शिक्षा और बिजनेस में कन्नड़ भाषा को बढ़ावा देना है। सरकार के मुताबिक यह फैसला कन्नड़ लैंग्वेज कॉम्प्रीहेंसिव डेवलपमेंट एक्ट के तहत लिया गया है। ये 2022 में लागू किया गया था, जो 12 मार्च 2025 से प्रभावी होगा। इसका उद्देश्य कन्नड़ भाषा का व्यापक विकास और स्थानीय लोगों को बेहतर अवसर देना है।

टाटा ग्रुप ने बेची अपनी एक कंपनी

मुंबई, जेएनएन। टाटा ग्रुप की कंपनी टाटा कम्युनिकेशन्स ने अपनी 100 फीसदी स्वामित्व वाली सब्सिसियरी कंपनी टाटा कम्युनिकेशंस पेमेंट सॉल्यूशंस लिमिटेड (टीसीपीएसएल) को विदेशी कंपनी को बेच दिया है। इस कंपनी को ऑस्ट्रेलिया की डिजिटल पेमेंट और फाइनेंशियल सर्विसेज कंपनी फिन्डी की भारतीय शाखा ट्रांजैक्शन प्राइवेट लिमिटेड ने खरीदा है। हालांकि टाटा समूह ने यह नहीं बताया है कि उसे अपनी एक कंपनी क्यों बेचनी पड़ी, लेकिन मार्केट में अफवाह है कि टाटा ग्रुप आर्थिक समस्याओं से जूझने लगा है।

मध्यप्रदेश सरकार ने किसानों को दी बड़ी सौगात
नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री
डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री
किसान
आभार सम्मेलन
गरिमामयी उपस्थिति
डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री
गेहूं उपार्जन पर ₹175 प्रति क्विंटल बोनस देगी प्रदेश सरकार
गेहूं खरीदी मूल्य ₹2600 प्रति क्विंटल निर्धारित
खरीफ 2024 के धान उपार्जन पर ₹4000 प्रति हेक्टेयर दी जायेगी प्रोत्साहन राशि
अन्नदाता की खुशहाली के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प को पूरा करने में महत्वपूर्ण योगदान देता मध्यप्रदेश
2 मार्च 2025 I दोपहर 12:00 बजे
मुख्यमंत्री निवास, भोपाल
31 मार्च 2025 तक
गेहूं उपार्जन के लिए किसानों का पंजीयन
15 मार्च से 5 मई 2025 तक
प्रदेश स्तरीय गेहूं उपार्जन
D-11205/24
सीधा प्रसारण
Webcast.gov.in/mp/cmevents
@Cmmadhyapradesh
@jansampark.madhyapradesh
@Cmmadhyapradesh
@jansamparkMP
JansamparkMP

वर्ष 68 अंक 153 पृष्ठ 12
भोपाल, रविवार 02 मार्च, 2025
फाल्गुन शुक्ल पक्ष 03, विक्रम संवत् 2081
नगर मूल्य 5 रुपए

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार
दैनिक जागरण
www.dainikjagranmpcg.com

"अशांत पानी में शांति रूपी मछली को खोज निकालना सबसे सटीक कूटनीति होती है।
- पोप जॉन पॉल द्वितीय

गोविंदपुरा केमिकल फैक्ट्री में आग, नहीं हुई कोई जनहानि

18 दमकलों ने पांच घंटे में पाया काबू, हवा के झोंके से आग की लपटों ने आसपास के कारखानों को भी चपेट में लिया

क्राइम रिपोर्टर, भोपाल। गोविंदपुरा औद्योगिक क्षेत्र में आनंद आर्गेनिक केमिकल फैक्ट्री में शनिवार दोपहर करीब डेढ़ बजे भीषण आग लग गई। फैक्ट्री में रखे करीब 45 हजार लीटर ज्वलशीन केमिकल में लगी आग देखते ही देखते विकराल रूप ले लिया। कर्मचारी आग की भयावहता देख जान बचाकर बाहर की तरफ भागे। तुरंत ही फायर अमला, पुलिस को सूचनी दी। करीब 15 मिनट बाद शहरभर के 7 फायर स्टेशन से सिलसिलेवार पहुंची 18 दमकलों ने आग बुझाना शुरू किया। करीब 5 घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया जा सका। 38 पानी के टैंकर लगातार दमकलों को पानी पहुंचाने में जुटे रहे। फैक्ट्री अरेरा कॉलोनी निवासी आनंद चावला की बताई गई है। फैक्ट्री में पेंट बनाया जाता है। प्रारंभिक जांच में आग शार्ट सर्किट से लगना सामने आया है। आगजनी का प्रकरण दर्ज किया गया है। आग से कितना नुकसान हुआ है, इसका आकलन फैक्ट्री मालिक के साथ किया जा रहा है। थाना प्रभारी हेमंत श्रीवास्तव ने बताया कि शाम होने के कारण एफएसएल की टीम घटनास्थल का निरीक्षण नहीं कर सकी। रविवार को एफएसएल की टीम घटनास्थल का निरीक्षण करेगी।

दमकल कर्मियों ने कार शो-रूम बचाया

फैक्ट्री के पास ही वरेण्यम मोटर्स का कार शो-रूम है। हवा की वजह से लपटें कार शो-रूम की तरफ आ रही थीं। दमकल कर्मियों ने आग की भवायहता देख शो-रूम के अंदर खड़ी कारों को बाहर निकाला। इसके अलावा केमिकल फैक्ट्री के पीछे की तरफ की झाड़ियों को हटाकर आग को फैक्ट्री के अंदर ही काबू कर रखा। हालांकि, आग से केमिकल फैक्ट्री के आजू-बाजू की दो फैक्ट्रियों में भी नुकसान हुआ है।

50 फीट ऊंचाई तक लपटें शहरभर से दिखा धुंआ

केमिकल में लगी आग की लपटें करीब 50 फीट ऊंचाई तक उठ रही थीं। फैक्ट्री में लगी आग का धुंआ शहरभर से दिखाई दे रहा था। करीब 50 कर्मचारी आग पर काबू पाने मशक्कत करते रहे। पांच घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। डेढ़ बजे से लगी शाम साढ़े 6 बजे तक में काबू हो सकी। दमकलों को अंदर जाने के लिए फैक्ट्री की दीवार तक जेसीबी से तोड़नी पड़ी। आग पिछले हिस्से में रखे केमिकल में लगी थी। आग इतनी भीषण हो गई कि फैक्ट्री के सामने खड़ा लोडिंग आटो भी जल गया।

संक्षिप्त खबरें

राज्य निर्वाचन आयुक्तों की कॉन्फ्रेंस आज से

भोपाल, जेएनएन। सिवनी जिले के पेंच राष्ट्रीय उद्यान में देश के 22 राज्यों के निर्वाचन आयुक्तों की तीन दिवसीय कॉन्फ्रेंस रविवार से शुरू होगी। शनिवार को सभी राज्य निर्वाचन आयुक्त और सचिव पेंच पहुंच गए हैं। 31वीं वार्षिक कॉन्फ्रेंस को एमपी से राज्य निर्वाचन आयुक्त मनोज श्रीवास्तव लीड कर रहे हैं। कॉन्फ्रेंस में एमपी राज्य निर्वाचन आयोग की तरफ से पेपरलेस बूथ के जरिए कराए जाने वाले चुनाव का प्रजेंटेशन दिया जाएगा। साथ ही चुनावी चुनौतियों से निपटने व नवाचारों और स्थानीय निकाय चुनाव के लिए कौन से संवैधानिक प्रोविजन की आवश्यकता है, इस बात पर भी चर्चा होगी। बता दें कि एमपी में राज्य निर्वाचन आयुक्त कार्यालय पेपरलेस और डिजिटल बूथ पर काम कर रहा है।

बीएएमएस: अब 12 नहीं 18 माह में होंगी परीक्षाएं

कार्यालय संवाददाता, भोपाल। बैचलर ऑफ आयुर्वेदिक मेडिसिन एण्ड सर्जरी (बीएएमएस) साढ़े पांच साल की यूजी डिग्री अब पहले जैसी नहीं रही। अब हर साल होने वाली परीक्षाओं को फर्स्ट प्रॉफ, सेकेंड प्रॉफ व थर्ड प्रॉफ में आयोजित किया जाएगा। अब परीक्षाएं प्रति 12 माह में नहीं 18 माह में हुआ करेंगी। हर प्रॉफ 18 माह का होगा। सत्र 2021-22 बैच से अब पूरी बीएएमएस डिग्री के दौरान केवल तीन मुख्य परीक्षायें होंगी। आयुष मेडिकल एसोसिएशन के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. राकेश पाण्डेय ने बताया कि पूर्व की तुलना में पेपरों की संख्या में वृद्धि हुई है। अब फायनल प्रॉफ में आठ विषयों के अंतर्गत 13 सैद्धांतिक व 7 प्रायोगिक पेपर्स होंगे।

ढाबों में परोसी जा रही थी शराब, 16 पर केस

मुख्य संवाददाता, भोपाल। शनिवार को आबकारी विभाग की दो अलग-अलग टीमों ने सूखी सेवनिया एवं बैरागढ़ क्षेत्र में अवैध रूप से शराब परोसने वाले ढाबों और बेचने वाले तस्करों पर कार्रवाई की। आबकारी महकमे को यहां अवैध तौर पर शराब बेचे जाने और पिलाने की शिकायतें मिली थीं। टीमों ने चौकसे ढाबा, संस्कृति ढाबा, न्यू विक्की ढाबा, कोहिनूर ढाबा और सूखी सेवनिया में अवैध शराब बेचने के आरोपी राज पाल यादव के यहां कार्रवाई की।। संचालकों के अलावा अवैध रूप से मदिरापान करने वालों के खिलाफ भी प्रकरण दर्ज किए गए। शनिवार को आबकारी अमले ने कुल 16 प्रकरण दर्ज कर 48 बीयर, 3 पेटी देशी मदिरा और डेढ़ पेटी विदेशी मदिरा जब्त की है।

शेहला राशिद पर नहीं चलेगा मुकदमा

नई दिल्ली, जेएनएन। दिल्ली की अदालत ने जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी की पूर्व उपाध्यक्ष शेहला राशिद के खिलाफ देशद्रोह का मुकदमा वापस लेने की मंजूरी दे दी। चीफ मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट अनुज कुमार सिंह ने 27 फरवरी को अभियोजन पक्ष की ओर से दायर एप्लीकेशन पर यह आदेश दिया। एप्लीकेशन के मुताबिक दिल्ली के उपराज्यपाल ने शेहला के खिलाफ मुकदमा चलाने की मंजूरी वापस ले ली है। एलजी ने 23 दिसंबर, 2024 को शेहला पर मुकदमा चलाने की मंजूरी दी थी। अब एक स्क्रीनिंग कमेटी की सिफारिश पर यह मंजूरी वापस ले ली है। शेहला के खिलाफ 2019 में देशद्रोह और दंगे भड़काने के आरोप में मामला दर्ज हुआ था।

पीथमपुर में हर घंटे जलाया जा रहा 135 किलो जहरीला कचरा

भोपाल और दिल्ली से की जा रही निगरानी, शनिवार शाम तक 4050 किलो कचरा जला

पीथमपुर, जेएनएन। पीथमपुर में भोपाल की यूनियन कार्बाइड का रासायनिक कचरा नष्ट करने की प्रक्रिया दूसरे दिन भी जारी रही। शनिवार रात 9 बजे तक करीब 4050 किलो कचरा जलाया जा चुका था। हर घंटे 135 किलो कचरा जलाया जा रहा है। मध्यप्रदेश प्रदूषण विभाग के रीजनल अधिकारी श्रीनिवास द्विवेदी के अनुसार 10 टन कचरा जलाने में सोमवार 3 मार्च दोपहर तक का समय लग सकता है। उन्होंने बताया कि कचरा जलाए जाने की प्रति घंटे पर मॉनिटरिंग हो रही है। अभी तक कचरा सामान्य रूप से जल रहा है। किसी भी प्रकार का व्यवधान नहीं आया। कंपनी परिसर में लगे डिस्प्ले पर जानकारी ऑनलाइन प्रसारित की जा रही है। साथ ही भोपाल और दिल्ली से भी मॉनिटरिंग हो रही है। प्लांट के पास 500 से ज्यादा पुलिस बल तैनात है। रोजाना की तरह ■ शेष पृष्ठ 7 पर

महिलाओं ने काली पट्टी बांध किया प्रदर्शन, केस दर्ज

कचरा जलाने के विरोध में पांच महिलाओं ने काली पट्टी बांधकर प्रदर्शन किया। इनके खिलाफ केस दर्ज किया गया है। शनिवार रात 9 बजे सेक्टर एक थाने में धारा 223 बीएनएस के तहत कार्रवाई की गई। इन महिलाओं ने महाराणा प्रताप बस स्टैंड पर प्रदर्शन किया था। इन्होंने लोगों को बताया कि कचरा जलाने से गंभीर बीमारी होने और मौत का खतरा है। प्रदर्शनकारी महिलाओं ने सुप्रीम कोर्ट और हाई कोर्ट के आदेश का हवाला देकर विरोध किया। पुलिस का कहना है कि महिलाओं ने बिना तथ्यों के लोगों को भ्रमित करने का प्रयास किया।

हर 8 घंटे में बदली जा रही शिफ्ट

मध्यप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के रीजनल अफसर श्रीनिवास द्विवेदी के मुताबिक इस काम में 20 से 30 लोगों का स्टाफ लगा है। हर 8 घंटे में शिफ्ट बदली जा रही है। भोपाल और दिल्ली से भी प्रदूषण विभाग निगरानी कर रहा है। तय मापदंड के अनुसार ही कचरे को इंसीनरेटर में डाला जा रहा है। कंट्रोल रूम से मॉनिटरिंग की जा रही है। हर घंटे का डेटा तैयार किया जा रहा है। बता दें कि इंसीनरेटर को 27 फरवरी की रात 10 बजे से शुरू किया गया था जो लगभग 12 से 14 घंटे बिना कचरा डाले चलाया गया, ताकि प्राथमिक दहन कक्ष का तापमान 850 और द्वितीयक दहन कक्ष का तापमान 1100 डिग्री सेंटीग्रेड से जयादा हो जाए। इसमें प्रति घंटे 500 से 600 लीटर प्रतिघंटे डीजल की खपत हो रही है।

रीवा के डॉक्टरों ने किया बड़ा ऑपरेशन, मरीज को दी नई जिंदगी

कटा हाथ लेकर 28 साल का युवक पहुंचा अस्पताल, डॉक्टरों ने दोबारा जोड़ दिया

6 घंटे तक चला ऑपरेशन, बर्न यूनिट, आर्थो के डॉक्टरों ने बढ़ाया मान

रीवा। 28 साल के युवक को संजय गांधी अस्पताल के डॉक्टरों ने नया जीवन दे दिया। युवक कटा हाथ लेकर संजय गांधी अस्पताल इलाज के लिए पहुंचा। युवक की हालत देखते ही डॉक्टरों ने तुरंत ऑपरेशन कर हाथ जोड़ने का फैसला लिया। 6 घंटे ऑपरेशन चला। ऑपरेशन सफल रहा। मरीज का हाथ दोबारा डॉक्टरों ने जोड़ दिया है। इस ऑपरेशन ने फिर एसजीएमएच को नई पहचान दी है।

मिली जानकारी के अनुसार 25 फरवरी को ग्राम सलैया जिला सीधी निवासी अनिल साकेत उम्र 28 वर्ष का बायां हाथ मशीन से लकड़ी काटने के दौरान कलाई से अलग हो गया था। मरीज को सीधी से चिकित्सा महाविद्यालय रीवा से संबद्ध संजय गांधी स्मृति चिकित्सालय रीवा में उसी दिन 9.30 बजे लाया गया था। एसजीएमएच में शल्य चिकित्सकों ने मरीज को तुरंत भर्ती कर हाथ को जोड़ने का निर्णय लिया। चिकित्सालय में पदस्थ प्लास्टिक सर्जन डॉक्टर अजय पाठक व वरिष्ठ चिकित्सकों की टीम ने संबंधित मरीज का सफल ऑपरेशन किया। इस जटिल ऑपरेशन की प्रक्रिया में करीब 6 घंटे लगे। इस शल्य क्रिया में अस्थि रोग विभाग के डॉक्टर बीबी सिंह एवं निश्चेतना विभाग के डॉक्टर अरविंद राठिया, आशुतोष का विशेष योगदान रहा। इस जटिल ऑपरेशन के सफल होने पर अस्पताल अधीक्षक डॉ राहुल मिश्रा ने टीम को बधाई दी है। संजय गांधी अस्पताल स्वास्थ्य सुविधअें में हर दिन नए सुधार लगा रहा है। मरीजों को सुविधाएं देने में डॉक्टर बेहतर करने में जुटे हुए हैं। इसी का नतीजा है कि कटे हुए हाथ को जोड़कर डॉक्टरों ने मरीज को नया जीवन दे दिया।

कोकराझार से भूटान के गेलेफू तक दौड़ेगी ट्रेन, पटरी बिछाने सर्वे पूरा

69 किमी रेल लाइन प्रोजेक्ट पर खर्च होंगे 3500 करोड़

गुवाहाटी, जेएनएन। आप जल्द ही ट्रेन से पड़ोसी देश भूटान जा सकेंगे। भारतीय रेलवे ने असम के कोकराझार से भूटान के गेलेफू तक रेलवे ट्रैक बिछाने के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) को पूरा कर लिया है। पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे (एनएफआर) के प्रवक्ता ने शनिवार को कहा, प्रस्तावित रेलवे लाइन के लिए अंतिम लोकेशन सर्वे पहले ही पूरा हो चुका है। अब डीपीआर की मंजूरी का इंतजार है। प्रस्तावित 69.04 किलोमीटर लंबी यह रेलवे लाइन असम के कोकराझार स्टेशन को भूटान के गेलेफू से जोड़ेगी। इस परियोजना पर 3,500 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत आएगी। प्रस्तावित रेलवे लाइन दोनों देशों के बीच व्यापार, पर्यटन और सांस्कृतिक मेल- जोल बढ़ाकर भारत-भूटान संबंधों को और मजबूत करेगी। इससे कनेक्टिविटी में भी सुधार होगा। भूटान- भारत के पहले रेलवे लिंक से निर्बाध परिवहन की सुविधा मिलेगी। रेलवे लाइन बोडोलैंड क्षेत्र को व्यापार केंद्र के रूप में स्थापित करेगी, जिससे स्थानीय समुदायों को लाभ होगा। बता दें कि कुछ महीने पहले पीएम मोदी की भूटान यात्रा के दौरान कई समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए थे। इसमें रेल लिंक परियोजना भी शामिल रही। अब इस पर काम करने की तैयारी है। दोनों देशों ने रेल परियोजनाओं को लेकर एमओयू पर हस्ताक्षर किए थे। इस समझौते के अनुसार भारत और भूटान के बीच दो रेल मार्ग बनाने की योजना है। जिसमें कोकराझार-गेलेफू और बनारहाट-समत्से शामिल हैं। दोनों देशों के बीच रेल यात्रा के शुरू हो जाने से भारत और भूटान के बीच दूरी कम हो जाएगी। इसके साथ ही दोनों देशों के बीच व्यापार की रफ्तार भी तेज होने की उम्मीद है। असम के लिए ये रेल परियोजना नई उम्मीद खोलेगी।

नवाचार | गांव के 1000 से ज्यादा लोग बनाते हैं यूट्यूब वीडियो, हजारों की तादाद में सबस्क्राइब

रायपुर का यूट्यूब गांव जहां हर कोई डिजिटल कंटेंट क्रिएटर

रायपुर, जेएनएन। छत्तीसगढ़ में स्थित तुलसी गांव डिजिटल कंटेंट क्रिएटर का केंद्र बन गया है, जहां 1,000 से ज़्यादा निवासी यूट्यूब वीडियो बनाते हैं। इनकी प्रतिभा को देखते हुए रायपुर जिला प्रशासन ने भी इन क्रिएटर्स के कौशल को बढ़ाने और ज्यादातर दर्शकों तक पहुंचने में मदद करने के लिए बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने की पहल की है।

डिजिटल कंटेंट क्रिएटर का धमाका पूरी दुनिया में हो रहा है और यूट्यूब और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफ़ॉर्म क्रिएटिविटी और रील और वायरल कंटेंट पोस्ट करने का केंद्र बन गए हैं। डिजिटल युग में कंटेंट क्रिएटर के हुनर ने अनगिनत लोगों को रातों-रात मशहूर बना दिया है और उन्हें शोहरत और पैसा दिलाया है। इसी क्षेत्र में छत्तीसगढ़ राज्य के तुलसी नाम का एक छोटे से गाँव को कंटेंट क्रिएटर विलेज या भारत का यूट्यूब विलेज का दर्जा दिया जा रहा है। यह गांव रायपुर, छत्तीसगढ़ से सिर्फ एक घंटे की ड्राइव पर स्थित है, जहां इसके 4,000 निवासियों में से 1,000 से ज्यादा लोग सबसे लोकप्रिय वीडियो-शेयरिंग प्लेटफॉर्म यू ट्यूब के लिए सक्रिय रूप से सामग्री तैयार करते हैं। इनके 40 से ज्यादा चैनल और हजारों सबस्क्राइबर्स हैं। तुलसी की डिजिटल सामग्री निर्माण का केंद्र बनने की यात्रा 2016 में शुरू हुई जब दो निवासियों, जय और ज्ञानेंद्र शुक्ला ने यूट्यूब वीडियो बनाने में अपना हाथ आजमाने का फैसला किया। जय, एक शिक्षक, और ज्ञानेंद्र, एक पूर्व नेटवर्क इंजीनियर हैं। दोनों को ही वीडियो संपादन या डिजिटल उत्पादन में कोई पूर्व अनुभव नहीं था। ज्ञानेंद्र ने बताया- हम कुछ मजेदार बनाना चाहते थे और यू ट्यूब पर पोस्ट करना चाहते थे। कॉपीराइट मुद्दों और तकनीकी चुनौतियों जैसी बाधाओं का सामना करने के बावजूद, दोनों ने आगे बढ़ना जारी रखा।

40 लोकप्रिय सक्रिय यूट्यूब चैनल

आज, तुलसी के पास लगभग 40 सक्रिय यू ट्यूब चैनल हैं, जिनमें से कई काफी लोकप्रिय हो रहे हैं। 'बैक बेंचर्स क्रिएशन' (24,800+ सब्सक्राइबर) और 'निमगा छत्तीसगढ़िया' (9,200+ सब्सक्राइबर) जैसे चैनल राच्य में लोकप्रिय हैं। ज़्यादातर चैनल यू ट्यूब विज्ञापन से 20,000-40,000 रुपये प्रति माह कमाते हैं और कुछ क्रिएटर्स ने छोटे पैमाने पर विज्ञापन और प्रोडक्ट सपोर्ट के लिए अनुबंध भी हासिल किए हैं।

जिला प्रशासन का सहयोग

रायपुर जिला प्रशासन ने तुलसी के कंटेंट क्रिएटर्स के लिए बुनियादी सुविधाएं जुटाने की पहल की है। रायपुर के जिला कलेक्टर सर्वेश्वर भूरे ने बताया- हम इन कलाकारों को अपने कौशल को निखारने और अपनी रचनात्मक क्षमता को अधिकतम करने में मदद करने के लिए अत्याधुनिक स्टूडियो और डिजिटल वातावरण बना रहे हैं।

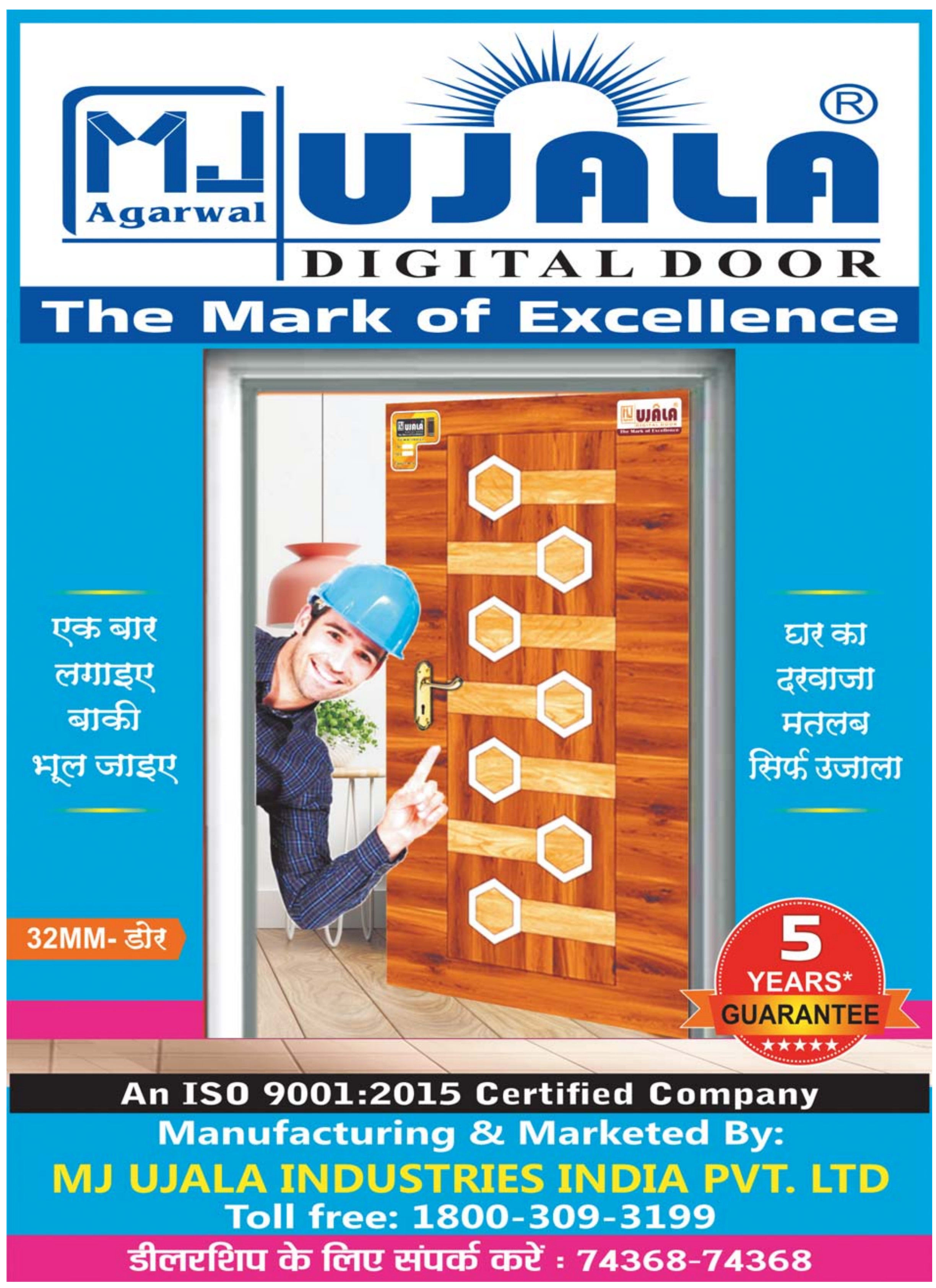

सड़कों के खस्ताहाल होने से दुर्घटनाएं दुखद: किसान सुब्रत

रीवा। भारतीय किसान यूनियन मध्यप्रदेश प्रदेश के अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय किसान समन्वय समिति के सदस्य किसान सुब्रत ने मध्यप्रदेश सरकार, रीवा संभाग के आयुक्त एवं जिला प्रशासन से मांग किया है कि रोड टैक्स, टोल टैक्स लेने के बाद भी सड़कों के गड्ढे, पटरी ,नाली ,संकेतक ,सीमित गति सीमा के बोर्ड ना होने से दुर्घटनाएं घटती हैं। सम्बन्धित निर्माण कम्पनी से लेकर अधिकारियों के खिलाफ भी कार्रवाई होनी चाहिए। किसान सुब्रत ने कहा है कि जो भी सड़कें निर्माणाधीन हैं, गारन्टी रख रखाव की है उनमें निर्माण कर रहीं कम्पनी का नाम ,सम्बन्धित विभाग के अधिकारी का नाम टेलीफोन नम्बर, निर्माण की शर्तें बोर्ड में लिखाकर लगाये जाएं। बेला से सिलपरा बन रहीं रिंग रोड में जितने गावों के किसानों की भूमि का अधिग्रहण किया गया, उसका मुआवजा किस आधार पर निर्धारित किया गया, जांच का विषय है। प्रधानमंत्री सड़क से लेकर सभी सड़कों का निरीक्षण करा आवश्यक सुधार कराये जाएं।

रासेयो का नेतृत्व प्रशिक्षण शिविर अमरकंटक में आज से

रीवा। सात दिवसीय राष्ट्रीय सेवा योजना का राज्य स्तरीय नेतृत्व प्रशिक्षण शिविर अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय की संगठन व्यवस्था में आज 2 मार्च से 8 मार्च तक अमरकंटक में आयोजित किया जा रहा है। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि इंदर सिंह परमार उच्च शिक्षा मंत्री मध्य प्रदेश शासन होंगे। शिविर की अध्यक्षता प्रोफेसर राजेंद्र कुमार कुड़रिया कुलगुरु अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा एवं विशिष्ट अतिथि हिमाद्री सिंह, सांसद शहडोल एवं बुंदेलाल सिंह मार्को, विधायक, विधानसभा क्षेत्र पुष्पराजगढ़, अनूपपुर तथा विशिष्ट अतिथि अमरकंटक नगर परिषद की अध्यक्ष पार्वती देवी रहेंगी। शिविर में मध्य प्रदेश के अंतर्गत आने वाले विभिन्न विश्वविद्यालयों के 600 छात्र-छात्राएं हिस्सा लेंगे।

राजस्व का लक्ष्य नहीं हुआ पूरा, आज से शुरू होगी मार्च की रिकवरी की कार्रवाई

उपभोक्ताओं पर यदि बिल बकाया है और दूसरा कनेक्शन ले रखें हैं तो वह भी कटेगा, कुर्की भी होगी

एई से लेकर जेई और आउटसोर्स कर्मचारियों को मिलेगा वसूली का लक्ष्य 10 हजार से ऊपर के बकायादारों को जारी होगी कुर्की नोटिस

जागरण, रीवा

बिजली बिल के बकायादारों के खिलाफ अब विभाग सख्ती करने जा रहा है। पुराना बिल नहीं भरने वालों को कुर्की का पहला नोटिस जारी होगा। इसके बाद कार्रवाई की जाएगी। सोमवार से विद्युत विभाग नोटिस के साथ ही कार्रवाई शुरू कर देगा।

ज्ञात हो कि विद्युत विभाग शहर संभाग लगातार कैश और एरियर डिमांड की वसूली में फेल रहा है। जनवरी पेड फरवरी में 18 करोड़ का लक्ष्य विभाग को मिला था लेकिन 10.80 करोड़ तक ही मामला अटक गया। अब इसकी भरपाई मार्च महीने में की जाएगी। मुख्य अभियंता ने कमजोर रिकवरी पर शहर संभाग के सभी अधिकारियों की क्लास लगा दी। सभी को मार्च महीने में 24 करोड़ का शतप्रतिशत लक्ष्य पूरा करने के निर्देश दिए हैं। इतना ही नहीं, सभी अधिकारियों और आउटसोर्स कर्मचारियों पर भी वसूली का लक्ष्य तय करने के लिए कहा गया है। बकायादारों के खिलाफ कार्रवाई का असर सोमवार से नजर आने लगेगा।

कैश डिमांड तक नहीं कर पाए पूरा

शहर संभाग को फरवरी में 11.50 करोड़ का कैश डिमांड का लक्ष्य मिला था। विभाग वह लक्ष्य भी पूरा नहीं कर पाया। एरियर सहित 18 करोड़ का लक्ष्य था। शहर संभाग के खाते में फरवरी महीने में सिर्फ 10.80 करोड़ ही आए। यही वजह है कि मुख्य अभियंता ने कमजोर राजस्व वसूली पर अधिकारियों की शनिवार को क्लास लगा दी और हर हालत में मार्च महीने में शतप्रतिशत लक्ष्य को पूरा करने का अल्टीमेटम भी दे दिया है।

कुर्की का नोटिस जारी किया जाएगा

10 हजार से ऊपर के जितने भी पुराने बकायादार हैं, उनकी लिस्ट तैयार की जाएगी। इसके बाद फीडरवार सभी बकायादारों को कुर्की का पहले नोटिस जारी किया जाएगा। कुर्की नोटिस और समयावधि में भी यदि उपभोक्ता ने बिल जमा नहीं किया तो उसके खिलाफ वसूली की कार्रवाई की जाएगी।

कहीं भी हो, कनेक्शन काटा जाएगा

यदि किसी उपभोक्ता ने रीवा जिला में कनेक्शन लिया था, यहां का बिल जमा किए बिना ही कहीं दूसरी जगह चले गए हैं, या फिर बिल जमा किए बिना दूसरा कनेक्शन उपयोग कर रहे हैं तो उन्हें भी नहीं छोड़ा जाएगा। मुख्य अभियंता ने ऐसे उपभोक्ताओं के चालू कनेक्शन भी काटने के निर्देश दिए हैं। जब तक पुराना बकाया उपभोक्ता चुका नहीं देते तब तक कोई दूसरा कनेक्शन भी उपयोग नहीं कर पाएंगे। इस मर्तबा विभाग बकायादारों के खिलाफ सख्ती दिखाएगी।

लगातार फेल हो रहा है विभाग

कैश डिमांड और एरियर वसूली में शहर संभाग लगातार फेल हो रहा है। वसूली का आंकड़ा कम हुआ है। ठंड के मौसम में उम्मीद थी कि शहर संभाग कैश डिमांड के साथ ही एरियर की भी वसूली कर लेगा लेकिन इसमें कामयाब नहीं हो पाए। यही वजह है कि शहर संभाग लगातार फेल होता चला गया। अब पुराने बिलों की वसूली को लेकर मुख्य अभियंता ने सख्ती दिखाई है और सभी का लक्ष्य भी तय कर दिया है।

पीडब्ल्यूडी के इंजीनियरों ने कार्रवाई रोकने सौंपा ज्ञापन, हड़ताल पर जाने की दी चेतावनी

लोक निर्माण मंत्री के आदेश पर हो रही है निर्माण कार्यों की जांच और कार्रवाई

जागरण, रीवा। लोक निर्माण विभाग के मंत्री ने निर्माण कार्यों की रेंडम जांच और कार्रवाई के आदेश जारी कर दिए हैं। ऐसे में सभी जिलों में किए गए कार्यों की जांच की जा रही है। गड़बड़ी मिलने पर संबंधित इंजीनियरों पर कार्रवाई की जा रही है। इस कार्रवाई का विभाग के इंजीनियरों ने विरोध शुरू कर दिया है। उप मुख्यमंत्री को ज्ञापन सौंप कर इस कार्रवाई पर रोक लगाने की मांग की गई है। साथ ही यह भी चेतावनी दी गई है कि यदि कार्रवाई पर रोक नहीं लगाई जाती है तो सभी इंजीनियर 4 मार्च से अनिश्चितकालीन हड़ताल पर चले जाएंगे।

इंजीनियरिंग एसोसिएशन का कहना है कि मध्यप्रदेश लोक निर्माण विभाग के मंत्री राकेश सिंह द्वारा प्रदेश में घटिया निर्माण पर अंकुश लगाने के लिए हाल ही में प्रारंभ की गई कार्यों की जांच प्रक्रिया एवं जांच के उपरांत मैदानी अमले पर की जा रही एक पक्षीय दण्डात्मक कार्रवाई से लोक निर्माण विभाग के इंजीनियरों में रोष व्याप्त है। हर माह की 05 एवं 20 तारीख को विभिन्न परिक्षेत्रों के मुख्य अभियंता दूसरे परिक्षेत्रों में जाकर रेण्डम निरीक्षण के आधार पर जांच प्रतिवेदन प्रस्तुत कर संबंधित उपयंत्रियों एवं अनुविभागीय अधिकारियों पर एक पक्षीय कार्यवाही करते हुए निलंबित किया जा रहा है। इंजीनियरों ने इस कार्यप्रणाली पर विरोध दर्ज कराते हुए इस कार्यवाही को तत्काल रोकने की मांग की गई है। ज्ञापन सौंप कर यह सूचित किया है की यदि यह प्रक्रिया को शीघ्र ही बंद नहीं किया गया तो लोकनिर्माण विभाग के समस्त अभियंता 4 मार्च से अनश्चितकालीन हड़ताल पर चले जाएंगे। पीडब्ल्यूडी विभाग के इंजीनियरों में कार्रवाई को लेकर खासा रोष व्याप्त है और प्रतिनिधिमंडल ने उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ला से मुलाकात कर मैदानी अधिकारी एवं उपयंत्रियों के विरुद्ध की जा रही एक पक्षीय कार्यवाही के कारण 1 मार्च से अनिश्चितकालीन अवकाश पर जाने का ज्ञापन दिया गया। मैदानी अधिकारी एवं उपयंत्रियों की समस्याओं के संबंध में चर्चा हुई। प्रतिनिधि मंडल में वरिष्ठ इंजीनियर शैलेंद्र दुबे कमलाकांत गर्ग, विजय शुक्ला, राजेश श्रीवास्तव,पी के सिंह ,रवींद्र श्रीवास्तव, अरुण शुक्ला, रामराज पटेल ,अंगिरा तिवारी, आर एस वर्मा इत्यादि शामिल थे।

अभियंताओं ने यह की है मांग

सौंपे गए ज्ञापन के माध्यम से अभियंताओं ने मांग की है कि कार्यवाही के बाद दोषी पाए जाने पर एक पक्षीय कार्यवाही की जगह निर्माण कार्य में सुधार करने के लिए समय दिया जाए। विभाग में मैदानी अमले की भारी कमी को शीघ्र पूर्ण किया जाए। तब तक वैकल्पिक व्यवस्था के लिए नियुक्ति की जाए और दंडात्मक कार्यवाही ठेकेदार पर ही अधिरोपित की जाए, क्योंकि निर्माण कार्य ठेकेदार द्वारा ही किया जाता है। विभागीय अमले को निलंबित न किया जाए।

इन जिलों में हो चुकी है कार्रवाई

अभी तक नर्मदापुरम जिले के बारी से तनकला सिमापा मार्ग में पाई गई कमियों के कारण संजय रायकर कार्यपालन यंत्री नर्मदापुरम को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया। अनुविभागीय अधिकारी आरपी शर्मा व उपयंत्री कैलाश को निलंबित किया गया। ठेकेदार मेसर्स बिंदल डेवलपर्स को ब्लैक लिस्ट में खलने मुख्य अभियंता को निर्देशित किया गया। इसी तरह कटनी बरही-इंदारताला मार्ग परफार्मेंस गारंटी के अंतर्गत ठेकेदार के द्वारा सम्पूर्ण मरम्मत कार्य नहीं करने के कारण शहडोल के संभागीय प्रबंधक म.प्र. सड़क विकास निगम की एक वेतन वृद्धि रोकने तथा ठेकेदार मेसर्स टीबीसीएल को ब्लैकलिस्ट किया गया है। वहीं झाबुआ शामकीय महाविद्यालय पेटलावद में अतिरिक्त अध्ययन कक्ष निर्माण कार्य में अनियमितता पर कार्यपालन यंत्री (भवन) अलसिंह भिड़े को कारण बताओ नोटिस एवं ठेकेदार मेसर्स राजगढ़ जिला धार को बलैक लिस्टेड करने के निर्देश दिए गए। छतरपुर जिले में 250 मीटर कन्या जयराम के निर्माण कार्य में अनियमितताओं के कारण कार्यपालन यंत्री (भवन) छतरपुर केएस परस्ते को कारण बताओ नोटिस एवं अनुविभागीय अधिकारी एसके पाण्डेय एमपी भटनागर को निलंबित तथा ठेकेदार मेसर्स आरके कंस्ट्रक्शन छतरपुर को ब्लैक लिस्ट किया गया है। इसी तरह इसके पहले 7 फरवरी को पन्ना जिले में वन स्टाप सेंटर भवन के काम में कमी के आधार पर उपयंत्री को कारण नोटिस जारी हुआ था। वहीं ग्वालियर जिले में मार्ग के निरीक्षण में ठेकेदार मानक स्तर का काम नहीं किए जाने एवं कार्य में विलंब के कारण ठेकेदार मेसर्स कामतानाथ बीस्ट्रोन मुरैना को ब्लैक लिस्ट करने के निर्देश दिए गए।

ऑटो चालक ने पुलिस को सौंपा महिला का पर्स

पेश की इमानदारी की मिसाल

जागरण, रीवा। मऊगंज जिले में एक ऑटो चालक ने ईमानदारी की मिसाल पेश की। बताया गया कि बरांव मोड़ के समीप ऑटो में महिला का पर्स छूट गया था, जिसके बाद वह पुलिस थाना मऊगंज पहुंचा और महिला का पर्स पुलिस को सौंप दिया। जानकारी दी गई कि पूजा साकेत निवासी दादर 28 फरवरी की सुबह 10 बजे अपने बच्चों का आधार कार्ड बनवाने कलेक्टर कार्यालय मऊगंज आई थी। आधार कार्ड सेंटर में भीड़ होने की वजह से वह कलेक्टर कार्यालय के सामने से एक ऑटो में सवार हुई और बरांव मोड़ के समीप बच्चों को लेकर उतर गई और उसका पर्स ऑटो में ही छूट गया। पर्स में 1100 रुपए नकद, मोबाइल फोन, चॉदी का पायल सहित कई दस्तावेज थे। पहले तो महिला ने ऑटो की तलाश की पर जब ऑटो का कहीं पता नहीं चला तो पुलिस थाना मऊगंज पहुंचकर रिपोर्ट लिखाई थी। इधर पुलिस ने भी रिपोर्ट के आधार पर ऑटो की तलाश शुरू की। शनिवार को दोपहर करीब तीन बजे ऑटो चालक महिला का पर्स लेकर पुलिस थाना मऊगंज पहुंचा और पर्स पुलिस को सुपुर्द किया। पुलिस ने महिला को बुलाकर उसे पर्स सौंप दिया है। महिला ने बताया है कि पर्स में जो भी समान थे, सब सुरक्षित हैं।

गेंहू उपार्जन एवं खाद्यान्न वितरण की समीक्षा बैठक 4 को

रीवा। कलेक्ट्रेट सभागार में 4 मार्च को प्रातः 11 बजे से संभागीय समीक्षा बैठक आयोजित की जा रही है। बैठक की अध्यक्षता प्रमुख सचिव खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति रश्मि अरूण शमी करेंगी। बैठक में वर्ष 2025-26 में गेंहू उपार्जन की तैयारियों तथा सार्वजनिक वितरण प्रणाली से खाद्यान्न वितरण की जिलेवार समीक्षा की जाएगी। बैठक में आयुक्त खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति, संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास, प्रबंध संचालक मार्कफेड, प्रबंध संचालक मध्यप्रदेश वेयरहाउस कार्पोरेशन, प्रबंध संचालक नागरिक आपूर्ति निगम, प्रबंध संचालक एपेक्स बैंक, महाप्रबंधक एफसीआई, नियंत्रक मापतौल, कमिश्नर रीवा संभाग तथा संभाग के सभी जिलों के कलेक्टर एवं संबंधित विभागीय अधिकारी शामिल होंगे।

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस में नेशनल सेमीनार 3-4 मार्च को

भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित और कंप्यूटर विज्ञान पर होगा विचार-विमर्श

जागरण, रीवा । शहर के प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शासकीय आदर्श विज्ञान महाविद्यालय में आगामी 3-4 मार्च को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जाएगा। यह संगोष्ठी भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित और कंप्यूटर विज्ञान विषय पर केंद्रित होगी और इसका आयोजन गणित और कंप्यूटर विज्ञान विभाग द्वारा महाविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (आईक्यूएसी) के सहयोग से किया जा रहा है। इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित और कंप्यूटर विज्ञान के योगदान को रेखांकित करना और आधुनिक तकनीकों के साथ इनकी प्रासंगिकता को उजागर करना है। भारतीय गणितज्ञों जैसे आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त और रामानुजन के कार्यों ने न केवल प्राचीन काल में बल्कि आज भी वैश्विक गणित और कंप्यूटर विज्ञान को प्रभावित किया है। इस संदर्भ में, यह संगोष्ठी शोधकर्ताओं, शिक्षकों और विद्यार्थियों को एक मंच प्रदान करेगी जहां वे भारतीय ज्ञान परंपरा के गूढ़ रहस्यों को समझ सकें और इनका आधुनिक विज्ञान में उपयोग कर सकें।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. रविन्द्र नाथ तिवारी ने संगोष्ठी के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा में गणित और विज्ञान का योगदान अतुलनीय है। यह संगोष्ठी हमें भारतीय विद्वानों के योगदान को समझने और आधुनिक तकनीकी विकास में उनकी प्रासंगिकता को स्थापित करने का अवसर प्रदान करेगी। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. दिनकर प्रसाद शुक्ला ने बताया कि गणित और कंप्यूटर विज्ञान के क्षेत्र में भारतीय परंपरा का योगदान केवल ऐतिहासिक नहीं, बल्कि समकालीन तकनीकी विकास में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस संगोष्ठी के माध्यम से हम भारतीय गणितीय विधियों को आधुनिक कंप्यूटर विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास करेंगे। सह-संयोजक एवं आईक्यूएसी समन्वयक डॉ. नीलम पाण्डेय ने कहा कि यह आयोजन शोधार्थियों, शिक्षकों और विद्यार्थियों को भारतीय गणितीय सिद्धांतों को आधुनिक तकनीकों से जोड़ने का अवसर प्रदान करेगा। संगोष्ठी में भारतीय गणितीय इतिहास, वैदिक गणित, संख्यात्मक गणना, भारतीय तर्कशास्त्र और कंप्यूटर विज्ञान में भारतीय योगदान जैसे विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान दिए जाएंगे। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग और साइबर सुरक्षा जैसे आधुनिक क्षेत्रों में भारतीय गणितीय सिद्धांतों के अनुप्रयोगों पर भी चर्चा होगी। इस शैक्षिक आयोजन से न केवल महाविद्यालय बल्कि संपूर्ण शैक्षिक समुदाय को लाभ होगा और भारतीय गणित एवं कंप्यूटर विज्ञान की गौरवशाली परंपरा को पुनर्जीवित करने में सहायता मिलेगी।

समर्थन मूल्य पर 2600 प्रति क्विंटल होगी गेहूं की खरीदी

रीवा। शासन द्वारा रबी विपणन वर्ष 2025-26 में समर्थन मूल्य पर गेंहू का उपार्जन इंदौर, उज्जैन, भोपाल एवं नर्मदापुरम् में एक मार्च से तथा शेष संभागों में 17 मार्च से किया जाना था। इसमें परिवर्तन करते हुए राज्य सरकार ने किसानों की मांग पर पूरे प्रदेश में एक साथ 15 मार्च से ही खरीदी करने का निर्णय लिया है। इस संबंध में खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविन्द सिंह राजपूत ने बताया कि रबी विपणन वर्ष 2025-26 में भारत सरकार द्वारा समर्थन मूल्य में 150 प्रति क्विंटल की वृद्धि करते हुए 2425 रूपये प्रति क्विंटल समर्थन मूल्य घोषित किया गया है। जबकि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व वाली किसान हितैषी प्रदेश सरकार द्वारा गेंहू उत्पादक किसानों के हित में बडा और ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए समर्थन मूल्य 2425 रूपये के अतिरिक्त 175 रूपये प्रति क्विंटल बोनस देने की घोषणा मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव द्वारा की गई है। श्री राजपूत ने बताया कि राज्य के किसानों से 2600 रूपये प्रति क्विंटल की दर से समर्थन मूल्य पर गेंहू खरीदी की जायेगी। खाद्य मंत्री ने किसानों के हित में लिये गये इस बड़े निर्णय के लिये मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का आभार जताते हुये इसे खेती को लाभ का धंधा बनाने की ओर सरकार द्वारा उठाये जा रहे कदमों का एक हिस्सा बताया है।

Kalyan Singh Super Specialty Cancer Institute
कल्याण सिंह अति विशिष्ट कैंसर संस्थान
C.G. City, Sultanpur Road, Lucknow-226002
सी.जी. सिटी, सुल्तानपुर रोड, लखनऊ–226002
(An Autonomous Institute of the Govt. of Uttar Pradesh)
(उत्तर प्रदेश सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)
Email: office.sscih@gmail.com

Notice

Advertisement No. KSSSCI/ER-06/1-9/2024-25 Dated:01.01.2025

Advertisement No. KSSSCI/ER-06/1-9/2024-25 Dated 01.01.2025 for the Direct Recruitment to various non-teaching posts hereby stand cancelled.

Advt. No. KSSSCI/PRO-23/2024-25 DIRECTOR

पश्चिम मध्य रेल
वाणिज्य विभाग–जबलपुर मंडल

मंडल रेल प्रबंधक (वाणिज्य) पश्चिम मध्य रेल, जबलपुर भारत संघ के राष्ट्रपति के लिए एवं उनकी ओर से निम्नलिखित हेतु निर्धारित ई बोली आमंत्रित करता है। **Category** - NFR, **Tender Notice No. & Date** - JBP-C-NFR-LED-FLANGE-1 Dated 17/02/2025, **Assets Details** - जबलपुर डिवीजन के स्थानों पर एलईडी फ्लैज के माध्यम से आपूर्ति, स्थापना, रखरखाव और विज्ञापन के लिए अनुबंध। **Tender End** - 11/03/2025 15:00, संभावित बोलीदाताओं से अनुरोध है कि वे IREPS वेबसाईट (www.ireps.gov.in) पर E-Tender Leasing मॉड्यूल देखें। लॉट–वार विवरण उपर्युक्त के तहत उपलब्ध है। ई बोली सूचना मंडल रेल प्रबंधक (वाणिज्य) पश्चिम मध्य रेल जबलपुर के नोटिस बोर्ड पर भी उपलब्ध है।

(हस्ता.)
कृते मंडल रेल प्रबंधक(वाणिज्य)
पश्चिम मध्य रेल, जबलपुर

स्वच्छ भारत अभियान
एक कदम स्वच्छता की ओर

नाम एवं जन्मतिथि सुधार सूचना

मैं संगीता पाण्डेय, निवासी रीवा, म.प्र. शपथपूर्वक कथन करती हूं कि आर्मी नं. 3013372M, नायक राम कृष्ण पाण्डेय 24 राजपूत, मेरे बेटे के आर्मी रिकार्ड में मेरा नाम संगीता देवी पाण्डेय (SANGEETA DEVI PANDEY) एवं जन्मतिथि 03/05/1973 है जो कि गलत दर्ज हो गया था। जबकि मेरा सही नाम संगीता पाण्डेय (SANGEETA PANDEY) एवं सही जन्म तिथि 03/05/1977 है। अत: मेरे पुत्र के उक्त आर्मी रिकार्ड में मेरा नाम संगीता पाण्डेय (SANGEETA PANDEY) एवं सही जन्म तिथि 03/05/1977 दर्ज किया जाए एवं लिखा, पढ़ा व जाना जाए।

RN-80699 संगीता पाण्डेय

रेलवे की वाहन पार्किंग में चल रही मनमानी वसूली

निर्धातिर दर से अधिक पैसा वसूल रहे पार्किंग कर्मचारी, ड्रॉप एण्ड गो एरिया का भी नहीं मिल रहा लाभ

जागरण, रीवा। पश्चिम मध्य रेलवे के रीवा रेलवे स्टेशन में वाहन पार्किंग के नाम पर मनमानी वसूली का खेल जारी है। निर्धारित शुल्क से अधिक पैसा वाहन सवारों से वसूला जा रहा है। दो पहिया और चार पहिया वाहन पार्किंग में खड़ा करने वाले लोग इसके चलते परेशान हैं। मनमानी वसूली को लेकर जब वाहन चालक विरोध करने है तो पार्किंग में मौजूद कर्मचारी अभद्रता पर भी उतारू हो जाते हैं। मिली जानकारी के मुताबिक रीवा रेलवे स्टेशन में पार्किंग का ठेका आनंदी इंटरप्राइजेज को दिया गया है। बताया जा रहा है कि पार्किंग में दो तरह की रसीद काटी जा रही है। वाहन चालकों से बीस रूपए प्रति घंटा से लेकर 100 रूपए प्रति घंटा तक वसूला जा रहा है, इसके साथ ही 12 घण्टा व 24 घंटे से अधिक पार्किंग में वाहन खड़ा करने वाले लोगों से भी मनमानी पैसा पार्किंग कर्मचारी वसूल कर रहे हैं। चर्चा है कि आनंदी इंटरप्राइजेज द्वारा पार्किंग का ठेका पेटी में दिया गया है, साथ ही वह तीन से चार माह में नए व्यक्ति को पेटी में वाहन पार्किंग का कार्य दे रही है, जिसके चलते पार्किंग में वाहन चालकों से मनमानी वसूली की जा रही है। बताया जा रहा है कि वाहन चालकों द्वारा मनमानी वसूली की कई बार रेलवे के अधिकारियों से शिकायत भी की गई इसके बावजूद कार्रवाई नहीं होने के कारण मनमानी वसूली पर रोक नहीं लग रही। बताया जाता है कि लंबे समय से रीवा रेलवे स्टेशन में ड्रॉप एण्ड गो एरिया की सुविधा भी वाहन से आने-जाने वाले लोगों को नहीं मिल पा रही। सर्कुलेटिंग एरिया में जैसे ही वाहन पहुंचते हैं, पार्किंग के कर्मचारी उन पर टूट पड़ते हैं, और रूपयों की डिमांड शुरू कर देते हैं, जबकि नियम है कि ड्रॉप एण्ड गो का पैसा नहीं लगता। फिलहाल लंबे समय से रीवा रेलवे स्टेशन की पार्किंग में वाहन चालकों से निर्धारित राशि से अधिक पैसा वसूला जा रहा है, जिससे रेल मुसाफिरों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, वहीं जिम्मेदार इस ओर ध्यान नहीं दे रहे।

सूचना

जागरण पब्लिकेशन प्रा. लि. किसी तृतीय पार्टी के उत्पादकों वस्तुओं या सेवाओं का समर्थन नहीं करती है और न ही किसी तृतीय पार्टी के विज्ञापनों में छपी किसी जानकारी की सच्चाई या विश्वसनीयता की पुष्टि करती है। जागरण पब्लिकेशन प्रा. लि. पाठकों को प्रेरित करती है कि वे ऐसे किसी भी विज्ञापनदाता के साथ कोई भी लेन-देन करने की कार्रवाई से पहले उचित व जरुरी समझे जाने वाली जांच पड़ताल कर लेवे।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी महेश बाबू की पुण्यतिथि पर हुआ व्याख्यान माला का आयोजन

जागरण, रीवा। विंध्य क्षेत्र के प्रखर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. बाबू महेश प्रसाद श्रीवास्तव की 33वीं पुण्यतिथि पर आयोजित व्याख्यान माला के मुख्य अतिथि वरिष्ठ इतिहासकार एवं शिक्षाविद प्रो. पी. के. सरकार ने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के निकटतम सहयोगी स्व. महेश प्रसाद श्रीवास्तव एक ऐसी शख्सियत थे जिन्हें सत्ता का वैभव आजीवन आकर्षित नहीं किया। जिन्होंने आज़ादी के आंदोलन के मूल्य सत्य, प्रेम, सादगी, ईमानदारी और सच्चाई को सिर्फ पढ़ा नहीं बल्कि अपने सम्पूर्ण जीवन में जिया था। यदि एक पंक्ति में उनके व्यक्तित्व को परिभाषित किया जाए तो कहा जाएगा कि महेश बाबू मूल्यों के पर्याय और ईमानदारी के प्रतिबिंब थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता इंजी. वशिष्ठ मुनि शर्मा ने की। मुख्य वक्ता के रूप में एपीएसयू प्रो. एनपी पाठक व विशिष्ट अतिथि ज्वाइंट कमिश्नर दिव्या त्रिपाठी व मीसाबंदी सुभाष श्रीवास्तव उपस्थित रहे। इस वर्ष का महेश बाबू स्मृति सम्मान - 2025 वयोवृद्ध गाँधीवादी, अपने जीवन के 100वें वर्ष में प्रवेश करने वाले जीवट समाजसेवी सुरेंद्र मणि त्रिपाठी को प्रदान किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. एन. पी. पाठक ने कहा कि- वास्तव में बाबूजी हमारी स्मृतियों में सदैव जीवित रहेंगे। इस अवसर पर समाजसेवी एवं मीसाबंदी सुभाष श्रीवास्तव ने कहा कि ये मेरा सौभाग्य है कि मैं महेश बाबू के घर में जन्मा। इस अवसर पर शोभनाथ गुप्ता, यतीन्द्र सिंह सहित बड़ी संख्या में गणमान्य जन मौजूद रहे।

रमेश प्रताप सिंह के निधन पर रेडक्रॉस में हुई शोक सभा

रीवा। भारतीय रेडक्रॉस सोसाइटी रीवा के प्रशासनिक अधिकारी डॉक्टर सुरेंद्र प्रताप सिंह के बड़े भाई रमेश प्रताप सिंह बघेल का एक्सीडेंट के कारण गत 23 फरवरी को प्रार्थना हॉस्पिटल में उपचार के दौरान निधन हो गया । रमेश प्रताप सिंह के असामायिक निधन पर रेडक्रॉस सोसाइटी रीवा में शोक सभा डॉ प्रभाकर चतुर्वेदी रेडक्रॉस चेयरमैन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। डॉ प्रभाकर चतुर्वेदी ने बताया कि स्व. रमेश सिंह रेडक्रॉस के अजीवन सदस्य रहे हैं। पूर्व में सरस्वती शिशु मंदिर के प्रधानाचार्य के पद पर रह कर शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया तथा रेडक्रॉस के माध्यम सी समाज सेवा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देते रहे। शोक सभा में रेडक्रॉस चेयरमैन डॉ प्रभाकर चतुर्वेदी, पूर्व चेयरमैन डॉ सज्जन सिंह, वाइस प्रेसिडेंट जयंत खन्ना, वाइस चेयरमैन डॉक्टर ए के खान, डॉ राजेश सिंह,सचिव डॉ विनोद श्रीवास्तव,सह सचिव डॉ हर्ष सिंह परिहार, कोषाध्यक्ष प्रशांत जैन, कार्यकारिणी सदस्य एनपीएस परिहार, डॉ के के परोहा, डॉ सुशील त्रिपाठी, डॉ सीडी दुबे,वरिष्ठ अधिवक्ता सुशील तिवारी, मुकुंद मिश्रा,डॉ एचपी सिंह, डॉ सत्या तिवारी,भारती शर्मा, डॉ आदित्य तिवारी, डॉ एसके श्रीवास्तव,पूर्व सीएमएचओ डॉ आनंद महिंद्रा, शिखा श्रीवास्तव, प्रणात कनोडिया एवं रेडक्रॉस के अधिकारी कर्मचारी पीयूष मिश्रा, संजय शुक्ला,अशोक श्रीवास्तव, गौरव सिंह,पंकज सिंह, मनीष पाठक, डॉ प्रीतम मिश्रा,अर्चना शुक्ला, प्रीति शुक्ला,वंदना पांडेय,डॉ राघवेंद्र सिंह, नीरज पांडे, अतुल सोधिया,संदीप चतुर्वेदी, रोहिणी शर्मा,मनोज साकेत तथा श्रीमती सरोज सिंह,गुरुदत्त सिंह, डॉ के बी सिंह,ज्ञानेंद्र गौतम,सुरेश सिंह, यदुनाथ सिंह, महेंद्र सिंह, बीके सिंह, संतोष लखेरा,उदयभान सिंह, डॉ बी एल भुर्तिया,अशोक सिंह ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए मृतक आत्मा की शांति हेतु 2 मिनट का मौन रखकर परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की एवं इस भीषण दुख से उबरने हेतु ईश्वर प्रार्थना की।

न्यायालय कलेक्टर जिला मऊगंज (म.प्र.)
प्रकरण क्रमांक– 0025/अपील/2024–25

आम सूचना

राजेन्द्र प्रसाद पाठक तनय श्री अवधशरण उम्र 65 वर्ष निवासी मोलैया थाना लौर तहसील मऊगंज, जिला मऊगंज ......अपीलार्थी

बनाम

1. लालबहादुर सिंह श्री हरिदर्शन सिंह 2. अमित सिंह तनय श्री लालबहादुर सिंह 3. सुरेनद्रलाल तनय श्री रामसिया गुप्ता 4. राजेन्द्र पिता मोहनलाल 5. रामाश्रय पिता मोहनलाल 6. रामजी पिता मोहनलाल निवासी ग्राम झलवार थाना लौर तहसील व जिला मऊगंज।

.............उत्तरवादीगण

आवेदक राजेन्द्र प्रसाद पाठक तनय श्री अवधशरण उम्र 65 वर्ष निवासी मोलैया थाना लौर तहसील मऊगंज, जिला मऊगंज द्वारा अपील निर्णरू विरुद्ध अनुविभागीय अधिकारी तहसील मऊगंज द्वारा जरिये प्रकरण क्रमांक 0188/अ–6–अ में पारित आदेश दिनांक 11.11. 2022 के विरुद्ध न्यायालय कलेक्टर मऊगंज के यहां अपील धारा 44 (1) म.प्र. भू–राजस्व संहिता 1959 के तहत प्रस्तुत की गई है, जिसकी सूचना दिनांक 23.08.2024, 18.09. 2024, 24.01.2025 को क्रमशः अनावेदक को (राजेन्द्र पिता मोहनलाल, रामाश्रय पिता मोहनलाल, रामजी पिता मोहनलाल सभी निवासी ग्राम झलवार थाना लौर तहसील मऊगंज जिला मऊगंज) दी गई जो लिखे हुए पते पर नहीं होना बताया गया। अत: उपरोक्त अनावेदक को समाचार पत्रों के माध्यम से सूचित किया जाता है कि दिनांक 20.03.2025 को न्यायालय कलेक्टर मऊगंज के यहां समय दोपहर 01:00 बजे से सायं 6:00 के मध्य उपस्थित होकर अपना पक्ष समर्थन / अभिलेख प्रस्तुत करें। अनुपस्थित होने पर प्रकरण में एकपक्षीय कार्यवाही की जावेगी, जिसके लिए अनावेदक स्वत: जिम्मेदार होंगे।

प्रभारी अधिकारी
न्यायालय कलेक्टर
RN- 80771 जिला मऊगंज (म.प्र.)

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

कार्यालय जिला शिक्षा केन्द्र पन्ना
पुराना डाईट छात्रावास (डाईट परिसर) बेनीसागर मोहल्ला पन्ना–488001
दूरभाष क्रमांक (07732)–250094, 250156 ई मेल-zskrgsmpanna@rediffmail.com

क्र./जि.शि.के./ ईएण्डआर /2025/457 पन्ना, दिनांक : 28.02.2025

निविदा आमंत्रण सूचना

राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल का पत्र क्रमांक राशिके / ईएण्डआर/2025/524 भोपाल दिनांक 10–02–2025 के अनुक्रम में जिला पन्ना में अंतर्गत सत्र 2025–26 नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक योजनांतर्गत कक्षा 01 से 08 तक की पाठ्यपुस्तको एंव अन्य अध्ययन सामग्री यथा प्रयास, दक्षता उन्नयन एंव अन्य पुस्तको के परिवहन कार्य के लिए वाहन किराये पर लेने हेतु पंजीकृत फर्मो से ई–निविदाएं https://mptenders.gov.in पर आमंत्रित की जाती हैं। निविदा प्रारम्भ तिथि 20.02.2025, निविदाये प्रस्तुत करने हेतु अंतिम तिथि 05.03.2025 निर्धारित है। Tender ID-2025_RSK_404202_1 है। निविदा शर्तें तथा निविदा से संबंधित समस्त जानकारी एम पी टेण्डर की बेबसाईट https://mptenders.gov.in पर उपलब्ध है।

जिला परियोजना समन्वयक
जिला शिक्षा केन्द्र पन्ना

कार्यालय प्राचार्य, आदर्श उ.मा.वि. सिविल लाइन्स, रीवा (म.प.)
(माध्यमिक शिक्षा मण्डल म.प्र. भोपाल द्वारा संचालित)
E-mail address- mhssrewa@gmail.com Phone- (07662) 314157

आ.वि./प्रवेश/सूचना/ 918 /2025 दिनांक: 28/02/2025

मॉडल हा.से. स्कूल सिविल लाइन्स, रीवा में कक्षा 9वीं हेतु प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल म.प्र. भोपाल द्वारा संचालित प्रदेश के प्रतिष्ठित विद्यालय मॉडल स्कूल सिविल लाइन्स रीवा में सत्र 2025–26 के लिए कक्षा 9वीं हिंदी एवं अंग्रेजी माध्यम में प्रवेश फार्म MP Online के माध्यम से भरे जानें है। आयोजित प्रवेश परीक्षा के परिणाम अलग–अलग (हिन्दी /अंग्रेजी माध्यम) की मेरिट के आधार पर कक्षा 9वीं में प्रवेश दिया जावेगा।

MP Online से फार्म भरने हेतु आवश्यक दस्तावेज एवं तिथियाँ

1. प्रवेश परीक्षा के पंजीयन की प्रांरभिक तिथि – 01.03.2025
2. प्रवेश परीक्षा के पंजीयन की अंतिम तिथि –15.04.2025
3. प्रवेश परीक्षा दिनांक 20.04.2025 को समय प्रात: 9.00am से 11.00am तक विद्यालय में ही आयोजित की जायेगी
4. प्रवेश फार्म भरने हेतु MP Online की लिंक – https://osms.mponline.gov.in/mbssrewa एवं मॉडल स्कूल की वेवसाइट modelhssrewa.org.in
5. प्रवेश पजीयन फार्म भरने हेतु निम्न दस्तावेज आवश्यक है–
   (i) कक्षा 7 वी उत्तीर्ण अंकसूची
   (ii) छात्र/छात्रा का नवीनतम फोटो जिसमें दिनांक भी अंकित हो।
   (iii) समग्र आईडी
6. प्रवेश पंजीयन फार्म का शुल्क रु 200.00 एवं रू 25 पोर्टल चार्ज कुल राशि रु 20+25 रू 225.00 Online ही जमा की जा सकेगी।
7. प्रवेश परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्न कक्षा 8वीं स्तर के होंगे जो कि विषय–हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान एवं सामान्य ज्ञान से संबन्धित होंगे।

प्राचार्य
आदर्श उ.मा.वि.,
सिविल लाइन्स, रीवा (म.प्र.)

कड़ी इबादत का महीना रमज़ान मुबारक आज से

नमाज़ के साथ रखें जायेगे रोज़े

रीवा। रमज़ानुल मुबारक के चॉद की तस्दीक के लिये बीहर नदी के तट पर स्थित ईदगाह घोघर में शरीअत हिलाल तस्दीक कमेटी की बैठक कमेटी के सदर मुफ्ती मुहम्मद मुबारक अज़हरी की सदारत में शरू हुई। कमेटी के सेकेट्री एडवोकेट महमूद खान ने बताया कि रीवा शहर तथा उसके आस-पास के कस्बाई इलाकों मे कहीं से भी चॉद देखे जाने की तस्दीक हासिल नहीं हुई, लिहज़ा आम राय से यह फैसला किया गया कि 30 साबान पूरा कर 01 मार्च से बाद नमाज़ ईशा रात में तरावीह की 20 रकात विशेष नमाज़ का एहतेमाम किया जायेगा। इस नमाज़ में हाफिज-ए-कुरआन द्वारा कुरआन मजीद के 30 पारों का पाठ किया जाता है। कमेटी द्वारा पारित एक अन्य प्रस्ताव में नवगठित मऊगंज जिले के लिये वहां के स्थानीय इमामों तथा मुस्लिम समाज के प्रस्तावानुसार हाफिज कारी मुस्ताक अहमद कादरी को शहर काज़ी पद का नियुक्ति किये जाने की स्वीकृति प्रदान की गई। बैठक मे कमेटी के सदर मुफ्ती मुहम्मद मुबारक अज़हरी, नायब सदर नजीर खान, सेकेट्री एड. महमूद खान, खजांची अनस अब्बासी, ज्वाइन्ट सेकेट्री मो. आबाद खान, सम्मानित सदस्य एड. शौकत उमर निज़ामी, कार्यकारिणी सदस्य मोइनुद्दीन शेख, अली अहमद मंसूरी, हाजी यामीन खान, डॉ. महमूद खान, डॉ. शुऐब खान, सदस्य समीउल्ला खान बब्बू, परवेज मुस्तुफा, इस्लाम अहमद गुड्डू, निज़ामुद्दीन अंसारी, मसूदुल हक संजू, मो. वसीउल्ला अंसारी, जावेद अंसारी आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहें।

दो महिलाओं की हालात बिगड़ी, मेडिसिन आईसीयू में शिफ्ट किया गया

गांधी स्मृति चिकित्सालय के गायनी विभाग का मामला

रीवा। गांधी स्मृति चिकित्सालय में गर्भवती महिलाओं का ऑपरेशन किया गया था। ऑपरेशन के बाद पांच महिलाओं की हालत खराब हो गई थी। महिलाएं अचेत हो गईं थीं। इन महिलाओं का इलाज जारी है। इनमें से दो महिलाओं की हालत ज्यादा गंभीर हो गई है। इन्हें गायनी आईसीयू से मेडिसिन आईसीयू में शिफ्ट कर दिया गया है। ज्ञात हो कि गांधी स्मृति चिकित्सालय के स्त्री रोग विभाग में पांच गर्भवतियों को परिजनों ने भर्ती किया गया था। प्रसव पीड़ा के कारण परिजनों ने भर्ती किया था। सभी महिलाओं का ओटी में ऑपरेशन से डिलिवरी कराई गई। ऑपरेशन के बाद 5 महिलाओं की तबीयत बिगड़ गई। महिलाएं होश में ही नहीं आईं। इन सभी महिलाओं की हालत बिगड़ने पर उन्हें आईसीयू में भर्ती करना पड़ा। 24 घंटे सभी महिलाआं को निगरानी में रखा गया। इनमें से दो महिलाओं की हालत ज्यादा खराब हो गई। जिन्हें उपचार के लिए संजय गांधी अस्पताल के तृतीय तल में मेडिसिन विभाग के आईसीयू में शिफ्ट कर दिया गया है। इन दो महिलाओं में भी एक की हालत ज्यादा खराब है। ऑपरेशन के बाद बिगड़ी महिलाओं की तबीयत से हड़कंप मच गया है। भोपाल तक हंगामा मचा हुआ है। सूत्रों की मानें तो जिन महिलाओं की तबीयत बिगड़ी है, महिलाओं की तबीयत किस वजह से खराब हुई, इनके वजहों का अभी तक पता नहीं चल पाया है। मामले की जांच जारी है।

कंपाउंडिंग शिविर में जमा कराया गया 2.67 लाख रु. विकास अनुज्ञा शुल्क

रीवा। शहर में अवैध कालोनियों को वैध करने की प्रक्रिया तेजी से आगे बढ़ रही है। लोगों की सुविधा के लिए शिविर लगाकर लोगों से विकास अनुज्ञा शुल्क जमा कराया जा रहा है। शनिवार को ढेकहा में बनकुइया मार्ग पर बकिया कॉलोनी के पास आयोजित शिविर में लोगों द्वारा 2.67 लाख रु. विकास अनुज्ञा शुल्क जमा कराया गया। मध्य प्रदेश शासन के कॉलोनी डेवलपमेंट रूल 2021 के तहत नगर निगम रीवा द्वारा निगमायुक्त के निर्देशा पर पात्र अनाधिकृत कॉलोनियों में विधित प्रावधानों के अनुसार डिमांड संग्रह, नागरिक सुविधाएँ उपलब्ध कराने एवं भवन अनुज्ञा प्रक्रिया को सुगम बनाने हेतु शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। 01 मार्च को वार्ड 05 हेतु बनकुइयां तिराहे के आगे बकिया कॉलोनी धिरमा नाला के पास वीरेन्द्र कॉलोनी, सरफराज कॉलोनी एवं शेख कॉलोनी हेतु आयोजित शिविर में पात्र अनाधिकृत कॉलोनियों के रहवासियों द्वारा लाभ उठाते हुये 2 लाख 67 हजार रु. जमा कराये गये। इस क्रम में 03 मार्च को जोन 01, वार्ड 02 हेतु विन्ध्य बिहार कॉलोनी के पास बाल्मीकि कॉलोनी खसरा पड़रा 333/561 हेतु शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

होली के दिन छोड़कर सभी अवकाश के दिनों में भी होगी रजिस्ट्री

रीवा। वित्त वर्ष खत्म होने वाला है। मार्च महीने में अधिक से अधिक रजिस्ट्री का लक्ष्य सभी जिलों को दिया गया है। टारगेट पूरा करने के लिए अब पंजीयन कार्यालय अवकाश के दिनों में भी खुले रहेंगे। सिर्फ होली के दिन ही कार्यालय बंद रखे जाएंगे। इसके अलावा शनिवार, रविवार को भी कार्यालय खुले रहेंगे। बता दें कि मार्च महीना शुरू हो गया है। मार्च वित्तीय वर्ष का अंतिम महीना है। इस महीने में ही सारे टारगेट को पूरा करने का लोड विभागों पर रहता है। पंजीयन विभाग को भी लक्ष्य मिला है। यही वजह है कि लक्ष्य को पूरा करने के लिए महानिरीक्षक पंजीयन ने सभी जिला पंजीयन कार्यालयों को नया आदेश जारी कर दिया है। आदेश में शासन के राजस्व का हवाला दिया गया है। साथ ही यह भी आदेश दिया गया है कि पंजीयन कार्यालय 14 मार्च होली के दिन को छोड़कर अन्य सभी सार्वजनिक अवकाश के दिनों में भी खुले रखे जाएंगे। सभी जिला पंजीयक, उप पंजीयक कार्यालय शासकीय और पंजीयन कार्य के लिए खुले रहेंगे।

दवा विक्रेता संघ आज करेगा उप मुख्यमंत्री का सम्मान

रीवा। गार्डन में उप मुंख्यमंत्री मप्र शासन राजेन्द्र शुक्ल का सम्मान समारोह आयोजित करेगा। संघ के पदाधिकारी गानाजी ने बताया कि कार्यक्रम में जिले भर के केमिस्ट एकत्रित होंगे। इस दौरान कुछ वरिष्ठ सदस्यों का भी सम्मान किया जाएगा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के अलावा नगर निगम अध्यक्ष व्यंकटेश पाण्डेय, सीएमएचओ डॉ. संजीव शुक्ला, जिला टीबी अधिकारी डॉ. अनुराग शर्मा विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। जिला दवा विक्रेता संघ अध्यक्ष तरुणेन्द्र सिंह एवं सचिव शशि मिश्रा ने समस्त दवा विक्रेता से कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील की है।

मनीषा को मिली पीएचडी की उपाधि

रीवा। अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय द्वारा मनीषा माझी आत्मजा देवराज माझी को 'शहरी एवं ग्रामीण उपभोक्ताओं के क्रेता व्यवहार में विज्ञापन के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई है। मनीषा ने वाणित्य विषय पर यह शोध डॉ. दीपक नेमा प्राचार्य श्रीरामा कृष्णा कॉलेज ऑफ कामर्स एण्ड साइंस सतना के निर्देशन में पूरा किया। मनीषा ने अपनी सफलता का श्रेय अपने गुरुजनों डॉ. दीपक नेमा, प्रो. एनपी पाठक, डॉ. कविता परवंदा एवं परिजनों को दिया है। मनीषा को पीएचडी मिलने पर सभी शुभ चिंतकों एवं मित्रों से प्रसन्नता जताई है।

पंचशील बुद्ध धम्म की रीढ़ है: भंते बुद्ध ज्योति

रीवा। ये बुद्ध की धरती युद्ध न चाहे, चाहे अमन परस्ती की अनुगूंज से विंध्य की बुद्ध भूमि देउर कोठार गुंजित हुई। देउर का पूरा वन प्रांतर बुद्ध वाणी के सुमनों से महक उठा। महाकवि विनीत विक्रम बौद्ध जी के परिनिर्वाण दिवस के अवसर पर हर वर्ष आयोजित होने वाले देउर बौद्ध महोत्सव का आगाज भिक्खु संघ द्वारा बुद्ध वन्दना, त्रिशरण, पंचशील और भारतीय संविधान की उद्देशिका के सामूहिक वाचन से हुआ। धम्म सभा को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि भदंत डॉक्टर बुद्ध ज्योति सारनाथ ने कहा कि प्रत्येक मनुष्य का धर्म एक ही है वो है मानव धर्म। पंचशील ही बुद्ध धम्म की रीढ़ है। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में भंते संतरों ने कहा कि बुद्ध की शिक्षाओं को आचरण में उतारना ही वास्तविक धम्म पालन है। इस अवसर पर कई अन्य भिक्षुओं, संगीतकारों ने भी अपनी देशना और प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से वरिष्ठ समाजसेवी वीरभद्र सिंह, डॉ गोमती प्रसाद पटेल, अभयराज बौद्ध, प्रभात वर्मा, आर एस वर्मा, बद्री प्रसाद कुशवाहा, रामगोपाल पटेल, पंकज सिंह, अभिषेक पटेल, फुलेल सिंह, ओमप्रकाश गंधर्व, अनुपमा सिंह रावत आदि गणमान्यजन उपस्थित रहे।

अतिक्रमण किया तो शिवम एंटरप्राइजेज पर 5000 चालान

जागरण, रीवा। नगर निगम द्वारा अब सड़क पर सामान फैलाकर रखने पर दुकानदारों के विरुद्ध चालानी कार्यवाही शुरू कर दी गई है। अतिक्रमणकारियों के विरुद्ध लगातार सख्त कार्यवाही की जा रही है। इसके कारण सड़कों पर यातायात सुगम होता जा रहा है। शहर में बढ़ रहे अतिक्रमण पर निगम आयुक्त डॉ. सौरभ सोनवणे के निर्देशा पर अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा लगातार कार्यवाही की जा रही है। शनिवार को शिवम एंटरप्राइजेज के द्वारा रोड पटरी पर अतिक्रमण करने पर अतिक्रमण प्रभारी द्वारा हटवाने के साथ ही रु.5000 की चालानी कार्रवाई की गई। इसके साथ ही दुकानदार को हिदायत दी गई कि पुनरावृत्ति किये जाने पर कड़ी कार्यवाही की जावेगी। इस अलावा कई दुकानदारों और संस्थानों द्वारा अपने प्रतिष्ठानों के बाहर अवैध बैनर और होर्डिंग लगाए गए थे, जिससे आवागमन में बाधा उत्पन्न हो रही थी जिसे हटाने की कार्यवाही की गई। इसके अलावा सिरमौर चौराहा से विश्वविद्यालय रोड़ की सड़क पटरी खाली कराते हुये यातायात को सुगम बनाया गया। साथ ही धोबिया टंकी से बिछिया अस्पताल तक एवं सिरमौर चौराहा से नये बस स्टैण्ड तक ठेला, गुमटी द्वारा किये गये अस्थाई अतिक्रमण को हटाने की कार्रवाई की गई। उक्त कार्यवाही में अतिक्रमण प्रभारी एवं अतिक्रमण सहायक व अतिक्रमण दल मौजूद रहा।

5वीं की परीक्षा खत्म, 8वीं और बोर्ड की चलती रहेगी

10वीं बोर्ड में एआई, एनएसक्यूएफ के विषयों की हुई परीक्षा

जागरण, रीवा

शनिवार को पांचवी का अंतिम प्रश्न पत्र था। अंतिम प्रश्न पत्र के बाद अब पांचवीं कक्षा की परीक्षाएं खत्म हो गई हैं। वहीं आठवीं,10वीं और 12वीं की परीक्षाएं चलती रहेंगी। शनिवार को 10वीं की आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और एनएसक्यूएफ के सभी विषयों की परीक्षाएं आयोजित की गई। इसके अलावा 12वीं की उर्दू विषय की परीक्षा हुई। इस परीक्षा में 2260 छात्र शामिल हुए, वहीं 21 छात्र अनुपस्थित रहे।

ज्ञात हो कि इस मर्तबा पांचवी, आठवीं और बोर्ड परीक्षाएं एक साथ शुरू हुईं। बोर्ड परीक्षाएं मार्च तक चलेंगी लेकिन पांचवीं और आठवीं की परीक्षाएं अब खत्म होने की कगार पर हैं। शनिवार को पांचवीं का अंतिम प्रश्न पत्र हुआ। 5 मार्च को आठवीं की परीक्षा खत्म हो जाएगी। 10वीं और 12वीं की परीक्षाएं चलती रहेंगी। शनिवार को हाईस्कूल की एनएसक्यूएफ के सभी विषयों और एआई की परीक्षा आयोजित की गई। इस परीक्षा में रीवा और मऊगंज जिला से 2281 छात्र रजिस्टर्ड थे। इनमें से 21 छात्र परीक्षा देने नहीं पहुंचे। आईटी में 1373 छात्रों में 11, ब्यूटी में 332 छात्र रजिस्टर्ड थे। इसमें से 3 छात्र अनुपस्थित रहे। प्राई सिक्यू113 में से 1 छात्र, एआई में 27 में 1 छात्र अनुपस्थित रहे। रिटेल में 14, एप्रियल में 14, प्लम्बर में 38, ऑटो मोटिव में 18, फिजिकल वर्क में 14, बैंकिंग में 16 छात्र परीक्षा में शामिल हुए। इसी तरह एग्रीकल्चर विषय के प्रश्न पत्र देने 217 छात्र पहुंचे, 4 छात्र अनुपस्थित रहे। हायर सेकेण्डरी के उर्दू विषय में एक भी छात्र रजिस्टर्ड नहीं थे।

बीआरसीसी की टीम ने 5वीं, 8वीं की परीक्षा का किया निरीक्षण

बीआरसीसी रीवा की टीम ने परीक्षा केन्द्रों का निरीक्षण किया। 5वीं में सामाजिक विज्ञान और 8वीं में द्वितीय भाषा विषय की परीक्षा शनिवार को आयोजित हुई। टीम ने शासकीय हायर सेकेण्डरी पीके स्कूल का निरीक्षण किया। इस दौरान प्राचार्य वरुणेन्द्र प्रताप सिंह से भी मुलाकात टीम ने की। इसके अलावा जीसस क्राइस्ट मेमोरियल हायर सेकेण्डरी स्कूल, आरपी मेमोरियल स्कूल, साईं पब्लिक स्कूल रीवा का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण दल में बीआरसीसी दीपेन्द्र सिंह, बृजेश तिवारी अकेडमिक प्रभारी, विवेक नामदेव, विशाल शुक्ला, अंकिता तिवारी शामिल रहे।

डीईओ के निरीक्षण दल पहुंचा परीक्षा केन्द्र

बोर्ड परीक्षा सुबह 9 बजे से12 बजे तक आयोजित हुई। परीक्षा के दौरान डीईओ का निरीक्षण दल सक्रिय रहा। निरीक्षण दल 1 ने फ्रोमेंस उमावि रीवा, सरस्वती जेल मार्ग रीवा, शाउमावि बालक गोविंदगढ़, शाउमावि टीकर, शाउमावि खजुहा का निरीक्षण किया। इसी तरह सहायक संचालक राजेश मिश्रा के दल ने शामउमावि रायपुर कर्चुलियान, शाउमावि रघुनाथगंज का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कहीं भी नकल जैसी बातें सामने नहीं आईं। परीक्षाएं शांति पूर्ण ढंग से आयोजित हुईं।

रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाकर होता है स्थायी इलाज

रीवा। मुख्य डाक घर के पीछे सुधार न्यास कॉलोनी रीवा मेँ स्थिति होम्यो केयर एंड क्योर मेँ होम्योपैथिक रिपेरट्राइजेशन द्वारा दवा व पावर चुनाव कर शरीर मेँ उपस्थित सभी रोगों के कारणों का इलाज कर स्थायी रूप से चिकित्सा की जा रही है। इस संस्थान के चिकित्सक डॉ विकास श्रीवास्तव व डॉ रोचना श्रीवास्तव ने बताया की पुराना बुखार एलर्जी अस्थमा स्किन के विभिन्न रोग झाइयां तिल मस्सा बालों के रोग वात रोग असमान्य ग्रोथ जिसमें बच्चे दानी की असमान्य ग्रोथ सिस्ट ट्यूमर फाइब्रेइड, शीत पित्ती,सफेद दाग, माइग्रेन आदि का सफल इलाज हो रहा है।

न्यायपूर्ण समाज की स्थापना के लिए आत्म-नियंत्रण एवं नैतिकता आवश्यक: जस्टिश राठी

न्यायिक सम्मेलन में हुआ न्यायिक प्रणाली के उत्कृष्ट प्रदर्शन परका विमर्श

जागरण, रीवा। ब्रह्माकुमारी संस्थान द्वारा शनिवार को नेशनल ज्यूरिस्ट कॉन्फ्रेंस का आयोजन वृंदावन गार्डन में किया गया। कार्यक्रम का मार्गदर्शन बीके निर्मला दीदी ने किया एवं संचालन में बीके प्रकाश भाई सहित कई वरिष्ठ राजयोगियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। रीवा के अलावा, चाकघाट, देवतालाब, मनगवां, छिजवार, इंदिरा नगर एवं अन्य सेवा केंद्रों से समर्पित भाई-बहनों ने भी अपनी सेवाएँ दीं। कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथियों के पारंपरिक स्वागत से हुई, जिसमें ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा तिलक एवं पुष्पगुच्छ अर्पण किया गया। कुमारी छवि मिश्रा द्वारा प्रस्तुत स्वागत गीत ने सभी का मन मोह लिया। इसके पश्चात बीके इंदु बहन ने संस्थान का परिचय एवं उद्देश्य बताया। मुख्य वक्ता हाई कोर्ट के पूर्व जस्टिस बी. राठी ने समाज में बढ़ते मानसिक तनाव एवं अपराध के पीछे नकारात्मक चिंतन को मुख्य कारण बताया। उन्होंने आध्यात्मिकता के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य को सशक्त करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि स्वस्थ एवं न्यायपूर्ण समाज की स्थापना के लिए आत्म-नियंत्रण एवं नैतिकता आवश्यक है। इसके बाद रीवा संभाग के आईजी श्री साकेत ने पुलिस विभाग में आध्यात्मिकता एवं मानसिक संतुलन की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के दौरान सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ भी हुईं, जिसमें कुमारी अंशिका बहन के भक्ति गीत ने सभी को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। समापन सत्र में नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत सभी प्रतिभागियों ने नशा मुक्ति हेतु संकल्प लिया। अंत में बीके निर्मला दीदी ने सभी अतिथियों एवं सहयोगियों का धन्यवाद ज्ञापित किया और भविष्य में ऐसे आयोजनों की निरंतरता बनाए रखने की बात कही। वरिष्ठ अधिवक्ता केडी सिंह ने भी आभार व्यक्त किया और इस सम्मेलन को समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल बताया।

चौपाटी से समाप्त किया गया अतिक्रमण माफिया का एकाधिकार

नये सिरे से नापजोख कर सभी व्यापारियों को दी गई 100 वर्ग फिट की जगह

लगभग दर्जन भर व्यापारियों ने घेर रखी थी कोठी कंपाउंड चौपाटी की पूरी जगह

जागरण, रीवा। राष्ट्रकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर बाल उद्यान कोठी कंपाउंड का आकार सीमित कर विकसित की गई चौपाटी से भी नगर निगम प्रशासन द्वारा अतिक्रमण माफिया का एकाधिकार समाप्त कर दिया गया है। पूरी चौपाटी की नापजोख कर सभी व्यापारियों को 100 वर्गफिट की जगह उपलब्ध कराई है। पिछले दो दिनों से चौपाटी का पूरा कारोबार लगभग बंद है। नगर निगम की टीम द्वारा नाप की जाकर सभी बराबर स्थान दिया गया है। इससे उन लोगों को भी चौपाटी में स्थान मिल जाएगा जो अभी तक बाहर सड़क पर अपना ठेला लगाकर चाट फुलकी बेच रहे थे। बताया गया है कि यहां भी अतिक्रमण माफिया का राज चल रहा था। कुछ लोगों ने पूरी चौपाटी पर कब्जा कर रखा था। अन्य लोगों को अपनी दुकान लगाने के लिए कोई स्थान ही नहीं था। अब इसी चौपाटी में फिर से आधा सैकड़ा से अधिक लोगों को जगह दी गई है। नगर निगम के अतिक्रमण प्रभारी सुखेन्द्र चतुर्वेदी ने बताया कि कई साल पहले जब इस स्थान पर चौपाटी विकसित की गई थी तब इस चौपाटी में नगर निगम द्वारा 58 व्यापारियों को जगह उपलब्ध कराई गई थी, धीरे-धीरे लोग यहां से निकल बाहर सड़कों पर आ गये। परिणामस्वरूप वर्तमान में यहां पर लगभग दर्जनभर व्यापारी ही काबिज थे और पूरी जगह घेरे हुए थे। निगमायुक्त ने पछले दिनों किये गये भ्रमण के दौरान देखा कि इस चौपाटी में कुछ ही लोग पूरी जगह पर कब्जा किये हुए हैं तो उन्होंने चौपाटी का व्यवस्था नये सिरे से बनाने का निर्देश दिये। निगमायुक्त के निर्देश पर सभी व्यापारियों को 100 वर्ग फिट में सीमित कर दिया गया है। शेष जगह दूसरे व्यापारियों को दी गई है।

प्रख्यात ब्रेन, स्पाइन एवं न्यूरो रोग विशेषज्ञ डॉ सचिन सिंह 02 मार्च रविवार को रीवा में

रीवा। राष्ट्रपति पदक से सम्मानित प्रख्यात ब्रेन, स्पाइन एवं न्यूरो रोग सुपर स्पेशलिस्ट एंडोस्कोपिक सर्जन डॉ सचिन सिंह MBBS, MS, MCh (न्यूरो) PGI, निर्देशक-लाइफ लाइन हॉस्पिटल प्रयागराज, के द्वारा ,दिनांक 02 मार्च 2025 को (प्रत्येक माह के पहले एवं तीसरे रविवार) सुबह 10 बजे से दोपहर 02 बजे तक, कामता मेडिकल (कामता मल्टीस्पेशलिटी क्लीनिक/डाइग्नोस्टिक & विज़न हार्ट सेंटर)- ब्लॉक समदड़िया कॉम्प्लेक्स न्यू बस स्टैंड रीवा में , ब्रेन, स्पाइन एवं न्यूरो से सम्बंधित सभी प्रकार की बीमारियां जैसे रीढ़ की हड्डी की चोट/दर्द, गर्दन, कमर व घुटने का दर्द, लकवा, सिर का दर्द (माइग्रेन की समस्या), मिर्गी रोग, बेहोसी व चक्कर आना, अंगों में कंपन-झुनझुनी-शून्यता, मांसपेशियों/नसों में कमजोरी, मस्तिष्क ज्वर, ब्रेन हैमरेज, सर्वाइकल स्पोंडलाइटिस, स्नायु रोग, साइटिका, रीढ़ की हड्डी की टी.बी., एंडोस्कोपिक स्पाइन सर्जरी आदि न्यूरो से संबंधित सभी प्रकार के रोगों का परामर्श देकर इलाज किया जाएगा, डॉ सचिन सिंह लगभग 15000 (पंद्रह हजार) से ज्यादा ब्रेन, सर्वाइकल एवं स्पाइन से संबंधित सर्जरी सफलता पूर्वक कर चुके है, डॉ सचिन को न्यूरो से सम्बंधित सभी प्रकार की सर्जरी में महारथ हासिल है, डॉ सचिन के द्वारा प्रत्येक माह के पहले एवं तीसरे रविवार को विगत सात (07) वर्षों से कमाता क्लीनिक में मरीजों को OPD परामर्श दिया जा रहा है। क्लीनिक में इकोकार्डियोग्राफी, TMT, ECG, होल्टर, ABPM, पैथोलॉजी, डिजिटल एक्सरे, यूरोफ्लोमेट्री आदि जांचों की सुविधा उपलब्ध है। अधिक जानकारी हेतु कामता मेडिकल रीवा मोबाइल नं 9399312433 में संपर्क करें। -ADVT

अमर सेनानियों के परिजनों को किया सम्मानित

रीवा। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं अमर शहीदों के पुण्य स्मरण की श्रृंखला में विंध्य प्रदेश के संस्थापक सदस्य, लोक सभा सांसद एवं अमर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व.राजभान सिंह तिवारी तथा पूर्व विधायक गुढ़ एवं अमर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व.बृजभान सिंह तिवारी के आवास में पहुंच कर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी उत्तराधिकारी परिवार समिति रीवा के जिला अध्यक्ष डॉक्टर राजा भइया मिश्रा ,उपाध्यक्ष महेंद्र प्रसाद त्रिपाठी सचिव प्रसन्न सिंह परिहार, जिला मऊगंज के सचिव राकेश सिंह तिवारी, जिला रीवा के विशिष्ट सदस्य भगत सिंह परिहार,अवनीश शर्मा ,प्रभात राय दीक्षित गुड्डू , ज्योतिरादित्य सिंह तिवारी,कुशल सिंह तिवारी, रूपाली सिंह तिवारी, श्री पांडे एवं अन्य साथियों के द्वारा अमर सेनानियों को पुष्पांजलि अर्पित कर पुण्य स्मरण किया गया तत्पश्चात उनके परिजन पौत्री एवं पुत्री डा पद्मावती पाण्डेय सेवानिवृत्त सीएमएचओ रीवा को पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया गया तथा राष्ट्रगान का गायन किया गया।

राजेंद्र शर्मा को दी विदाई

रीवा। नगर निगम रीवा जल प्रदाय शाखा धोबिया टंकी से कर्मचारी राजेंद्र शर्मा सेवानिवृत्त हो गये। आयोजित विदाई समारोह में सहायक यंत्री लो.स्वा.या.वि. उप खण्ड रीवा एस.के.सिंह, एसडीओ एस.एन.द्विवेदी, सब इंजीनियर रवि तिवारी, बड़े बाबू महेंद्र शुक्ला, बड़े बाबू हुजूर महेंद्र रावत, गणेश गौतम, ओंकारदास साकेत, दिनेश नायक आदि ने रामचरितमानस, शॉल, श्रीफल, छड़ी, फल, मिष्ठान देकर राजेंद्र शर्मा को सम्मानित करते हुए भावभीनी विदाई दी।

प्रख्यात कैंसर सर्जन डॉ विनीत तिवारी के द्वारा OPD प्रतिदिन रीवा में

रीवा। विंध्य क्षेत्र के प्रथम मान्यता प्राप्त प्रख्यात कैंसर सर्जन एवं कैंसर रोग सुपर स्पेशलिस्ट डॉ विनीत कुमार तिवारी MBBS, MS (Surgery) मेडिकल कालेज जबलपुर, FALS, FIAGES, DrNB सुपर स्पेशलिटी (सर्जिकल ऑन्कोलॉजी) नई दिल्ली, रोबोटिक एवं मिनिमल सर्जरी में फेलोशिप, इंडियन एसोशिएशन ऑफ गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल सर्जन की फेलोशिप कंसल्टेंट सर्जन के द्वारा प्रतिदिन सुबह 11 बजे से दोपहर 02 बजे तक एवं शाम 05 बजे साल से 07 बजे तक, कामता मल्टीस्पेशलिटी क्लीनिक/डाइग्नोस्टिक & विज़न हार्ट सेंटर A ब्लॉक समदड़िया कॉम्प्लेक्स न्यू बस स्टैंड रीवा (कामता मेडिकल) में, कैंसर से सम्बंधित सभी प्रकार की बीमारियां जैसे स्तन कैंसर, बच्चेदानी का कैंसर, मुँह का कैंसर, स्वांस की नली का कैंसर, खाने की नली का कैंसर,अग्नाशय का कैसर, पित्त की थैली (गालब्लैडर)का कैंसर, किडनी का कैंसर, पेशाब की थैली का कैंसर, छोटी बड़ी आँत का कैंसर, आमाशय का कैंसर, थायराइड कैंसर, मांसपेशियों का कैंसर, व अन्य सभी प्रकार के कैंसर का परामर्श देकर प्रतिदिन इलाज किया जाता है, अधिक जानकारी, पंजीयन व परामर्श हेतु कामता मेडिकल रीवा में संपर्क करें। -ADVT

बच्चे ही नहीं, बड़े भी हैं जापानी एनिमेशन 'एनिमे' के फैन

● पूनम बिष्ट ●

फेमस जापानी एनिमेटर हयाओ मियाजाकी को पिछले दिनों रेमन मैग्सायसाय अवॉर्ड के लिए चुना गया है। असल में मियाजाकी एनिमे बनाते हैं जो कि जापानी कार्टून की एक शैली है। एनिमे के फैन दुनिया भर में फैले हैं। बच्चे ही नहीं, बड़े भी। यहां तक कि भारत की वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण भी एनिमे की फैन हैं। रेमन मैग्सायसाय अवॉर्ड उन लोगों या समूहों को दिया जाता है जिन्होंने एशिया इलाके में बड़ा योगदान दिया है। इस अवॉर्ड को एशिया का नोबेल पुरस्कार भी कहा जाता है।

अवॉर्ड के लिए नाम घोषित होने के बाद मियाजाकी ने बताया कि भारत की केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण भी मियाजाकी की जबर्दस्त फैन हैं। उन्होंने एक ट्वीट में मियाजाकी की दो मशहूर फिल्मों माय नेबर टोरोटो और किकीज डिलिवरी सर्विस का जिक्र करते हुए कहा कि मैं इन फिल्मों को जितनी बार हो सके, देख सकती हूं। निर्मला एनिमे के लिए अपना प्यार जाहिर करते हुए यह बताना भी नहीं भूलीं कि एनिमे सिर्फ बच्चों के लिए नहीं, बल्कि यह बड़ों को भी बढ़िया कंटेंट देखने का मौका देता है।

निमला सीतारमण भी हैं एनीमे की फैन

बता दें कि हयाओ मियाजाकी स्टूडियो गिबली के सह संस्थापक हैं। 83 साल के मियाजाकी ने प्रिसेज मोनोनोक, स्पिरिटेड अवे और द बॉय ऐंड द हेरॉन भी बनाई हैं। असल में वह मुश्किल से मुश्किल मसलों को भी अपनी कला के जरिए बच्चों के लिए समझना आसान बना देते हैं। फिर चाहे पर्यावरण सुरक्षा का मसला हो या शांति की बात हो।

100 साल से भी पुराने हैं एनिमे

सौ साल से भी ज्यादा पुराना है एनिमे। 1917 में पहली बार इसे कमर्शियल तौर पर बनाया गया था। 1980 के बाद इनकी लोकप्रियता दुनिया भर में फैलने लगी जब फिल्म में अलग-अलग भाषाओं के सब टाइटल और डबिंग होने लगी। 2010 के बाद विडियो स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म शुरू होने के बाद ये घर-घर में लोकप्रिय हो गए। एनिमे में जहां कुछ ओरिजिनल कैरेक्टर हैं, वहीं ज्यादातर जापानी कॉमिक्स के पात्रों पर बने हैं। एनिमे इंडस्ट्री से 430 प्रॉडक्शन कंपनियां जुड़ी हैं। इनमें स्टूडियो गिबली, क्योटो एनिमेशन, बोन्स बड़े नाम हैं। दुनिया के कुल एनिमेटेड टीवी शो में जापानी एनिमेशन (एनिमे) की हिस्सेदारी 60 फीसदी है।

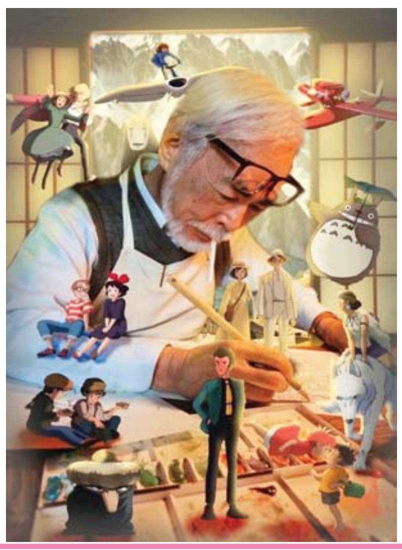

फिल्म को मिल चुका ऑस्कर

हयाओ मियाजाकी के स्टूडियो घिबली ने हाल ही में कान फिल्म फेस्टिवल में मानद पाल्मे डी'ओर से सम्मानित होने वाले पहले ग्रुप के रूप में इतिहास बनाया। रिटायर होने के बावजूद हयाओ ने वापस आकर एनिमेटेड फैंटेसी मूवी 'द ब्वॉय एंड द हेरॉन' बनाई, जिसे बेस्ट एनिमनेटेड फीचर मूवी के लिए ऑस्कर अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

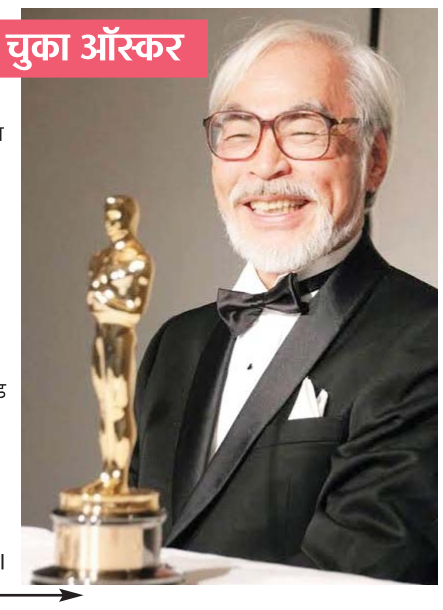

400 साल से वीरान पड़ा है आलीशान सतखंडा महल, आए नहीं जहांपनाह

● भूपेंद्र कुमार ●

इस महल का संबंध ओरछा के राजा वीर सिंह बुंदेला से जुड़ा है। वह चाहते थे कि उनके मित्र और मुगल शासक जहांगीर उनकी भेंट को स्वीकार करें। वर्ष 1635 में मुगल बादशाह शाहजहां यहां आए थे। महल के निर्माण में नौ साल लगे और उस समय 35 लाख रुपये लागत आई। करीब चार सौ वर्षों से सन्नाटा ही इस आलीशान 440 कमरों वाले सात मंजिला महल का हमसफर है। मुगल बादशाह जहांगीर के महज एक दिन रहने के लिए बनाए गए इस महल को सतखंडा महल कहते हैं। अफसोस यह कि जहांगीर यहां कभी नहीं आ पाए, और स्वास्तिक के आकार की यह इमारत आबाद न हो सकी। मध्य प्रदेश के दतिया में स्थित यह महल इतिहास की अजूबी दास्तान समेटे खामोशी से खड़ा है। ओरछा के राजा वीर सिंह बुंदेला (1605-1627) चाहते थे कि उनके मित्र और मुगल शासक जहांगीर उनकी भेंट को स्वीकार करें। लेकिन जहांगीर ने विनम्रता से इस न्योते को ठुकरा दिया। दरअसल, जहांगीर जब शहजादे सलीम थे, तब उन्होंने अकबर के खिलाफ विद्रोह किया था, तो वीर सिंह बुंदेला ने ही मुगल सेनापति अबुल फजल का सिर नरवर में कलम किया था। कुछ लोग इसे पुराना महल भी कहते हैं। इसे गोविंद महल, गोविंद मंदिर, जहांगीर महल, बीर सिंह महल के नाम से भी जाना जाता है। नई दिल्ली के वास्तुविद सर एडवर्ड लुटियंस इस इमारत की वास्तुकला से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने इसका इस्तेमाल दिल्ली में नॉर्थ और साउथ ब्लॉक को डिजाइन करने में किया। 1818 में ब्रिटिश गवर्नर जनरल लॉर्ड हेस्टिंग्स और 1902 में वायसराय लॉर्ड कर्जन ने यहां दरबार लगाया था। मथुरा में वीर सिंह को सोने में तोला गया था, उसका इस्तेमाल इसे बनाने में किया गया। गाइड लखनलाल रजक बताते हैं कि इसकी पांच ही मंजिलें नजर आती हैं, दो मंजिलें जमीन के अंदर हैं। जमीन के नीचे कमरों व सुरंगों का जाल है। यह पूरी इमारत पत्थर और ईंटों के दम पर खड़ी है।

रील्स के जाल में फंसते चले जाते हैं? यानी ब्रेन रॉट के शिकार हो रहे हैं...

मीम्स देखते-देखते क्या आप मन नहीं भरता? इंस्ट्राग्राम रीत्स या टिकटॉक पर क्या आप घंटों तक बिना सोचे-समझे स्क्रॉल करते रहते हैं? अंग्रेज़ी की प्रतिष्ठित ऑक्सफ़र्ड यूनिवर्सिटी प्रेस डिक्शनरी में अब इसके लिए एक शब्द है.....ब्रेन रॉट ! ब्रेन रॉट वर्चुअल लाइफ के खतरों में से एक को दर्शाता है और ये दिखाता है कि हम अपने खाली समय का इस्तेमाल कैसे कर रहे हैं।

● यास्मीन रुफो ●

ब्रेन रॉट एक ऐसा शब्द है, जो सोशल मीडिया पर बेकार ऑनलाइन सामग्री को ज़्यादा देखने के असर को लेकर चिंता जताता है। इसका उपयोग 2023 से 2024 के बीच 230 फीसदी बढ़ गया है। मनोवैज्ञानिक और ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर एंड्रयू प्रिज़बिल्स्की का कहना है कि इस शब्द की लोकप्रियता हमारे समय की सच्चाई को दिखाती है। 'ब्रेन रॉट' ने डिक्शनरी पब्लिशर की शॉर्टलिस्ट में शामिल पांच अन्य शब्दों को पीछे छोड़ दिया, जिनमें डिम्योर , रोमांटैसी और डायनामिक प्राइसिंग जैसे शब्द शामिल हैं।

ब्रेन रॉट क्या है?

पहली बार ब्रेन रॉट का इस्तेमाल हेनरी डेविड थॉरो ने अपनी किताब वाल्डेन में किया था। ब्रेन रॉट का मतलब है किसी व्यक्ति की मानसिक या बौद्धिक स्थिति का कथित रूप से बिगड़ना।इसे बेकार या बेहद आसानी से समझ आने वाली सामग्री के ज़्यादा इस्तेमाल का नतीजा माना जाता है। पहली बार ब्रेन रॉट का इस्तेमाल इंटरनेट के बनने से बहुत पहले दर्ज किया गया था। इसे 1854 में हेनरी डेविड थॉरो ने अपनी किताब वाल्डेन में लिखा था। वो समाज की उस आदत की आलोचना करते हैं, जो जटिल विचारों को कम अहमियत देती है और इसे मानसिक और बौद्धिक गिरावट का हिस्सा मानते हैं। इस पर वो सवाल करते हैं, इंग्लैंड आलुओं को सड़ने से रोकने की कोशिशों में लगा है लेकिन क्या कोई ब्रेन रॉट को ठीक करने की कोशिश नहीं करेगा, क्योंकि ये समस्या कहीं ज्यादा व्यापक और घातक है।

ज़ेन ज़ी और ज़ेन अल्फ़ा से निकल कर आम हुआ शब्द

ये शब्द सबसे पहले सोशल मीडिया पर ज़ेन ज़ी और ज़ेन अल्फ़ा के बीच लोकप्रिय हुआ, लेकिन अब इसे आमतौर पर इस्तेमाल किया जा रहा है ताकि सोशल मीडिया पर मिलने वाले बेकार कॉन्टेंट को नाम दिया जा सके। प्रोफ़ेसर प्रिज़बिल्स्की का कहना है, इसका कोई सबूत नहीं है कि ब्रेन रॉट जैसी कोई चीज़ होती भी है। ये ऑनलाइन दुनिया के लिए हमारी नाराज़गी दिखाता है और ऐसा शब्द है जिससे हम सोशल मीडिया को लेकर अपनी चिंताओं को बयां करते हैं। ऑक्सफोर्ड लैंग्वेजेज़ के अध्यक्ष कैस्पर ग्रैथवॉल कहते हैं कि पिछले दो दशकों के ऑक्सफोर्ड वर्ड ऑफ द ईयर को देखने पर आप कह सकते हैं कि हमारा ध्यान धीरे-धीरे इस बात पर केंद्रित हो रहा है कि हमारी वर्चुअल जिंदगी कैसे बदल रही है और इंटरनेट संस्कृति हमारे व्यक्तित्व और बातचीत का कितना बड़ा हिस्सा बन रही है। वो कहते हैं, पिछले साल जिस शब्द को चुना गया था, वो था 'रिज़', जो इस बात का दिलचस्प उदाहरण था कि कैसे भाषा अब ऑनलाइन समुदायों में बनती, ढलती और साझा होती है। ब्रेन रॉट वर्चुअल लाइफ के खतरों में से एक को दर्शाता है और ये दिखाता है कि हम अपने खाली समय का इस्तेमाल कैसे कर रहे हैं।

पूर्वोत्तर में बड़ा खतरा बनते तेजी से पिघलते ग्लेशियर

● प्रभाकर मणि तिवारी ●

देश के पूर्वोत्तर इलाके में ग्लोबल वार्मिंग का प्रकोप ज्यादा होने की खबरें तो बीते कुछ वर्षो से सामने आ रही हैं। हाल ही में उत्तराखंड में ग्लेशिर टूटने की खबर आई है। एक ताजा अध्ययन रिपोर्ट ने पर्यावरणविदों की चिंता बढ़ा दी है। हाल में नागालैंड विश्वविद्यालय और गुवाहाटी स्थित कॉटन विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने एक ताजा अध्ययन में कहा- अरुणाचल प्रदेश में तीन दशकों से ग्लेशियर प्रति साल 16.94 वर्ग किलोमीटर की दर से पिघल रहा है , यह सिलसिला जारी रहा तो ग्लेशियर के पिघलने से निकलने वाले पानी पर निर्भर रहने वाले समुदायों को भविष्य में खेती और पानी की किल्लत का सामना करना पड़ सकता है। छोटे ग्लेशियरों के पिघलने की रफ्तार और ज्यादा है। वैज्ञानिकों ने बीते 32 वर्षों के आंकड़ों की सहायता से अरुणाचल प्रदेश में ग्लेशियरों की संख्या और उनके घटते आकार का अध्ययन किया है। इससे पता चलता है कि वर्ष 1988 में जहां राज्य का 585 वर्ग किलोमीटर इलाका ग्लेशियर ढका था, वहीं वर्ष 2020 में यह घट कर महज 275 वर्ग किलोमीटर रह गया है। इससे साफ है कि ग्लेशियर के क्षेत्रफल में इस दौरान करीब 53 फीसदी की कमी आई है।

आकलन के लिए ग्लेशिर एक बेहतर पैमाना

बीते महीने जर्नल आफ अर्थ सिस्टम साइंस में छपी इस अध्ययन रिपोर्ट में कहा गया है कि जलवायु परिवर्तन के गंभीर असर के आकलन के लिए ग्लेशियर एक बेहतर पैमाना हैं। अध्ययन टीम के सदस्य डॉ. नबोजित हजारिका कहते हैं कि पूर्वी हिमालय में ग्लोबल वार्मिंग के कारण ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। टीम ने तवांग, वेस्ट कामेंग, अपर सियांग और अपर दिबांग वैली इलाकों में ग्लेशियरों का अध्ययन किया। इस इलाके में ज्यादातर ग्लेशियर समुद्र की सतह से साढ़े चार हजार से 48 सौ मीटर की ऊंचाई पर स्थित हैं। ग्लेशियरों के पिघलने के कारण ग्लेशियल झीलों के निर्माण का खतरा बढ़ जाता है। ऐसी झीलें अक्सर तबाही मचाती हैं। दो साल पहले सिक्किम में ऐसी एक झील के फटने से तबाही मची थी।

जलवायु का प्रतिकूल असर

पूर्वोत्तर इलाके के तमाम राज्यों में बेमौसम की बरसात, भयावह बाढ़, भूस्खलन, असम चाय की पैदावार व गुणवत्ता में कमी और दुनिया के सबसे नम इलाके वाले मेघालय में पीने के पानी की कमी जैसे मामले इसका सबूत हैं। पूर्वोत्तर इलाका अपनी जैव-विविधता के लिए पूरी दुनिया में मशहूर है। अब यहां कई दुर्लभ वनस्पतियों का अस्तित्व खत्म हो रहा है। अरुणाचल प्रदेश के अपर सियांग में जाड़े में भी आम फलने लगे हैं। यह एक नई बात है। मौसम वैज्ञानिक डॉ. भूमिधर बर्मन कहते हैं दुर्गम इलाकों से आंकड़े जुटाने का इंतजाम नहीं है। रिपोर्ट में कहा गया है कि ग्लेशियरों के पिघलने पर लगातार निगरानी के साथ ही जलवायु अनुकूलन रणनीति पर विचार करना और उनको लागू करना जरूरी है।

मसाबा - फैशन वर्ल्ड में मिक्स्ड हैरिटेज की डिजायनर

● शोभा डे ●

जब फैशन की बात आती है तो नीना गुप्ता और विव रिचर्ड्स की बेटी मेरी फेवरिट 35 वर्षीय मसाबा गुप्ता को बहुत पसंद करती हूं। हाल ही मैं उनके लेटेस्ट लॉन्च में शामिल हुई, जिसका शीर्षक आइडेंटिटी क्राइसिस है। एक शानदार, अमेजिंग ज्वैलरी लाइन का बढ़िया कलेक्शन। मसाबा ने एक बेसिक शर्ट को थोड़ा अपस्केल डिजाइन करते हुए 'व्हाइट शर्ट ज्वेलरी' पेश की है। एक स्मार्ट पेशकश के तौर पर कैजुअल से लग्जरी में शिफ्ट करने के लिए इसे डिज़ाइन किया गया है। यह एक 46-पीस संग्रह है जो आपकी पर्सनालिटी को सेलीब्रेट करने के लिए डिजाइन किया गया है।

लॉन्च फंक्शन खुद मसाबा की तरह बहुत ही सिम्पल रखा गया था। जिसमें उनकी मशहूर माँ नीना गुप्ता मसाबा की आकर्षक फिश नेकपीस पहने हुए दिखाई दीं। आज, मसाबा खुद एक माँ है, तीन महीने की नन्ही मतारा की। और, ज़ाहिर है, मसाबा के स्टोर में 'मदर टू मतारा' लेबल पर काम चल रहा है! मुझे कार्यक्रम में मतारा के पिता और मसाबा के पति सत्यदीप मिश्रा से मिलने की उम्मीद थी, लेकिन वह अपने नवजात बेटी की देखभाल करने के लिए पिता की ड्यूटी निभा रहे थे।

मसाबा की कहानी में और भी बहुत कुछ है जिसे आगे खोजा जाना बाकी है। एक मेहनती, सख्त बिजनेस वूमन के रूप में, मसाबा महत्वाकांक्षी योजनाओं के साथ भारत भर में 10 स्टोर की देखरेख करती हैं। मसाबा ने अत्यधिक आकर्षक मेकअप सेगमेंट में प्रवेश (उनके ब्रांड का 51 प्रतिशत हिस्सा आदित्य बिड़ला फैशन एंड रिटेल लिमिटेड के पास है) किया है। वह खुद को सीरियल पार्टनर कहती हैं, जिन्होंने नाइका, सैमसंग, टाइटन रागा और अन्य जैसे ब्रांडों के साथ सफल साझेदारी की है।

मसाबा का मेकअप में प्रवेश के पीछे भी एक शानदार कहानी है। उनके फाउंडेशन, लिप कलर और ग्लॉस विशेष रूप से हमारी खूबसूरत त्वचा टोन के साथ जाने के लिए बनाए गए हैं। दरअसल ज्यादातर विदेशी उत्पाद जो गहरे भूरे रंग से सुनहरे तांबे कलर में होते हैं, कभी भी हमारे पैलेट तक नहीं पहुँच पाए। ऐसे में मसाबा के कलर्स एक वरदान है, यह देखते हुए कि मैंने मसाबा के लिप कलर आज़माए... और वाह! मुझे अब और कुछ देखने ज़रूरत नहीं है! उनका सरल फंडा है मिक्स, मैच करें और इसे पर्सनलाइज्ड बनाएँ।

मसाबा के बारे में आकर्षक बात यह है कि वह हमेशा से ही खुद को पूरी तरह से समर्पित रखती आई है, भले ही उसे अपनी विशिष्ट पृष्ठभूमि और व्यक्तिगत रूप-रंग के कारण चुनौतियों का सामना करना पड़ा हो, आज, वह खुलकर उन नस्लीय कमेंट्स के बारे में बात कर सकती है, जिनका उसे सामना करना पड़ा था। उन गुणों का व्यावहारिक रूपांतरण उसके ब्रांड को अव्यवस्था से अलग करते हैं और उसे अपनी श्रेणी में रखते हैं। एक समय जिस मिश्रित विरासत ने उसे पीड़ा दी थी, आज वह एक ऐसा बैज है, जिस पर वह गर्व करती है।

'मतारा', जो दंपति ने अपनी बेटी के लिए चुना गया असामान्य नाम है, नौ हिंदू देवियों की दिव्य ऊर्जाओं का प्रतीक है, जो उनकी शक्ति और ज्ञान को दर्शाता है। मसाबा कहती हैं, मातृत्व एक अमेजिंग गिफ्ट है। वह अपने व्यस्त करियर को एक नवजात शिशु की थकाऊ मांगों के साथ बैलेंस कर रही हैं। वह कहती हैं- मातृत्व थका देने वाला होता है, लेकिन यह आपको उपलब्धि का एहसास कराता है। लॉन्च से बाहर निकलते हुए मैं देखती हूँ कि मसाबा आम्रपाली के अपने बिजनेस पार्टनर तरंग अरोड़ा के साथ खिलखिला रही हैं। मसाबा कहती हैं, मैं आभूषणों को भविष्य का एक बड़ा हिस्सा मानती हूँ। जाहिर है मसाबा अब रचनात्मक और व्यक्तिगत रूप से ऊंची उड़ान भर रही हैं।

बंद होंगे पुलिस फायर स्टेशन, नगरीय प्रशासन विभाग को मिलेगी जमीन और फायर फाइटर्स

16 साल से नहीं हुई भर्ती, कंडम हो रहे वाहन, सरकार ने घोषित किया था डाइंग कैडर

मुख्य संवाददाता, भोपाल। प्रदेश के भोपाल समेत इंदौर, पीथमपुर और मालनपुर में स्थित पुलिस के सभी फायर स्टेशन जल्द ही बंद हो जाएंगे। फरवरी माह से यहां तैनात पुलिस फायर ब्रिगेड के कर्मचारियों के वेतन का जिम्मा भी सरकार ने नगरीय प्रशासन विभाग को सौंप दिया है। एक समय प्रदेश में लगने वाली बड़ी आग को बुझाने में पुलिस के अग्निशमन दस्ते की अहम भूमिका होती थी, लेकिन 2010 में सरकार ने कैबिनेट से मंजूरी देकर पुलिस के अधीन आने वाले इस विभाग को डाइंग कैडर घोषित कर दिया था। इसके बाद से यहां न तो नए स्टाफ की भर्ती हुई और न ही नए फायर फाइटिंग उपकरण खरीदे गए। सरकार अब इन सभी पुलिस फायर स्टेशनों को नगरीय प्रशासन विभाग को सौंपने जा रही है। इसके अलावा पुलिस फायर सर्विस से एनओसी और फायर ऑडिट का अधिकार भी छीनकर नगरीय प्रशासन को सौंपा जा चुका है। फिलहाल प्रदेश भर में चार स्थानों पर स्थित 8 पुलिस फायर स्टेशन में कुल 209 कर्मचारी ही शेष बचे हैं।

नगरीय प्रशासन विभाग को सौंपी जाएगी जमीन और संसाधन

सरकार पुलिस फायर ब्रिगेड के कर्मचारियों को नगरीय प्रशासन विभाग में मर्ज करने के बाद सभी फायर स्टेशन के संचालन की जिम्मेदारी भी इसी महकमे को सौंपने जा रही है। ऐसे में स्टाफ के साथ पुलिस फायर ब्रिगेड की जमीन, बिल्डिंग और फायर फाइटर्स भी इसी विभाग को दे दिए जाएंगे। सरकार की तरफ से अभी इसकी डेडलाइन तय नहीं हुई है लेकिन जिस तरह से स्टाफ के वेतन भुगतान का जिम्मा नगरीय प्रशासन विभाग को दिया गया है, उससे उम्मीद है कि आगामी एक से दो माह के भीतर ये प्रक्रिया पूरी हो सकती है। भोपाल में मंत्रालय स्थित पुलिस फायर स्टेशन को भोपाल नगर निगम और इंदौर के पांचों फायर स्टेशन इंदौर नगर निगम को दिए जाएंगे। इसके अलावा पीथमपुर और मालनपुर के फायर स्टेशन स्थानीय नगर पालिकाओं को सौंपे जा सकते हैं। इसके अलावा यहां तैनात पुलिस स्टाफ को विगत दो दशकों से प्रमोशन भी नहीं मिला है, जिसकी वजह से यहां के कई कर्मचारी बगैर प्रमोशन के ही रिटायर हो गए।

इन स्थानों पर हैं पुलिस फायर स्टेशन

शहर	जगह का नाम	फायर फाइटर वाहन	स्टाफ
भोपाल	मंत्रालय	5	44
इंदौर	मोती तबेला	6	36
इंदौर	गांधी हॉल	6	25
इंदौर	लक्ष्मीबाई नगर	6	35
इंदौर	सांवेर रोड	2	13
इंदौर	जीएनटी मार्ग	2	11
पीथमपुर	इंडस्ट्रियल एरिया	9	23
मालनपुर	इंडस्ट्रियल एरिया	5	22
योग		41	209

भोपाल में वीवीआईपी भवनों की सुरक्षा का जिम्मा

भोपाल में स्थित पुलिस फायर स्टेशन के पास राजधानी की वीवीआईपी इमारतों में आगजनी रोकने की जिम्मेदारी है। इस स्टेशन के तहत विधानसभा, मंत्रालय भवन, विध्याचल भवन, सतपुड़ा भवन, राजभवन और सीएम हाउस मे होने वाली किसी भी अग्नि घटना को रोकने की जिम्मेदारी है। इसके अलावा शहर में होने वाले बड़े अग्निकांड के दौरान भी पुलिस की फायर ब्रिगेड टीम को आग बुझाने के लिए भेजा जाता है। भोपाल के इस फायर स्टेशन ने साल 2022 में 31, 2023 में 22, 2024 में 22 और 2025 में अब तक 6 घटनाओं पर काबू पाया है। एडीजी पुलिस फायर आशुतोष राय के अनुसार विभाग को समाप्ति की ओर कैडर घोषित कर इसे नगरीय प्रशासन विभाग का हिस्सा बनाने का फैसला 2010 में तत्कालीन कैबिनेट ने लिया था, जिसके कारण यहां नई भर्तियां नहीं हुईं। इसके अलावा इस पुलिस के फायर स्टेशनों को जरूरत पढ़ने पर कलपुर्जों की आपूर्ति भी नगरीय प्रशासन विभाग के जरिए ही होती है।

सौरभ के बाद शरद से आयकर की टीम ने की पांच घंटे पूछताछ

बैंक खातों से हुए करोड़ों के ट्रांजेक्शन की ली जानकारी

मुख्य संवाददाता, भोपाल। इनकम टैक्स, लोकायुक्त और ईडी के छापों में करोड़ों की संपत्ति के मालिक निकले सौरभ शर्मा को पूछताछ से शनिवार को राहत मिल गई। पिछले पांच दिनों से हर दिन लगातार घंटों तक सवाल कर रही आयकर की टीम ने शनिवार को सौरभ के पार्टनर शरद जायसवाल से अकेले में पूछताछ शुरू की। आयकर विभाग की टीम शनिवार की दोपहर 12 बजे सेंट्रल जेल पहुंची और शरद जायसवाल से पूछताछ के दस्तावेज जेल प्रशासन को दिए। इसके बाद शरद को जेल में बने पूछताछ के कमरे में लाया गया। इसके बाद शाम को पांच बजे तक इनकम टैक्स टीम का शरद से सवालों का सिलसिला चला।

अविरल एनर्जी और प्रॉपर्टी से जुड़े सवालों का मांगा जवाब

आयकर विभाग की टीम ने शरद से सबसे पहले अविरल एनर्जी से जुड़े हुए सवाल किए। अविरल एनर्जी नाम की फर्म में सौरभ के साथ चेतन और शरद भी पार्टनर हैं और यह कंपनी पेट्रोल पंपों का संचालन करती है। इस कंपनी से जुड़े हुए वित्तीय लेन-देन को लेकर विभाग ने शरद से कई सवाल किए। इसके अलावा शरद द्वारा किए गए बैंक ट्रांजेक्शन और उसके नाम पर खरीदी गई संपत्ति को लेकर भी जांच दल ने सवाल किए। इस दौरान शरद से उसके बैंक खातों के जरिए किए गए करोड़ों के ट्रांजेक्शन को लेकर भी सवाल किए गए।

जेल में मिलने आ रहे परिजन, बाकी ने बनाई दूरी

सौरभ, चेतन और शरद विगत 17 फरवरी से 2 सप्ताह की रिमांड पर सेंट्रल जेल भोपाल में बंद हैं। इस दौरान सौरभ से चार बार, शरद से तीन बार और चेतन से मिलने चार बार उनके परिजन जेल पहुंचे। 18 फरवरी को सौरभ से मिलने उसकी मां उमा शर्मा पहुंची थी, जबकि 21, 24 और 28 फरवरी को सौरभ की मां उमा और पत्नी दिव्या एक साथ पहुंची। ज्यूडिशियल रिमांड के दौरान शरद से मिलने वालों में उसकी बहन, भांजी और मित्र शामिल हैं। 18 फरवरी को भांजी पलक, 20 फरवरी को पलक एवं मित्र मेहुल और 24 फरवरी को बहन संध्या के साथ पलक और मेहुल ने शरद से मुलाकात की थी। चेतन से 18 और 21 फरवरी को पिता प्रताप, मां किरण और बहन चित्रा मिलने पहुंचे थे।

सैकड़ों भेद के बावजूद विश्वास परंपरा में एकात्म है भारत

मैपकास्ट में राष्ट्रीय शोधार्थी समागम का उद्घाटन

एजुकेशन रिपोर्टर, भोपाल। प्रयागराज में संपन्न महाकुंभ भारतीय एकात्मता का वैश्विक अनुष्ठान है, जिसमें हिंदी, तमिल, तेलगु के लिए लड़ने वाले, आंचलिक भाषाओं के लिए संघर्ष करने वाले, आहार-विहार की विविधता वाले सभी डुबकी लगा रहे थे। भारत अपने विचार परंपरा में विभक्त होने के बाद भी विश्वास परंपरा में एक है। यह कहना है अयोध्या के पीठाधीश्वर आचार्य मिथिलेश नन्दिनीशरण महाराज का। वे शनिवार को मैपकास्ट परिसर में दत्तोपंत ठेंगडी शोध संस्थान द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय शोधार्थी समागम-2025 के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि देश विचार नहीं, विश्वास परंपरा से चलता है। अनादि काल से हमारे ऋषियों ने विचारों को विश्वास की व्यवस्था में ढाला। उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा गुरुकुल में निहित है। आज स्थिति यह हो गई कि समाज में 10 वर्ष से आयु की 50 प्रतिशत बच्चों के नाम गूगल से रखे गए हैं। 50 प्रतिशत नाम अपशब्द है। हम अपनी जड़ों को खुद को काटकर उनसे पिंड छुड़ा चुके लोग हैं और जब हमें यह याद दिलाया गया कि आपकी जड़ों में अमृत था तो हम अपने कटे हुए टुकड़ों को गाड़ अपेक्षा कर रहे है कि अमृत मिल जाए।

समझाया विज्ञान का अर्थ

ज्ञान एवं विज्ञान पर अपनी निजी अवधारणा इंगित करते हुए उन्होंने कहा कि विज्ञान का अर्थ भौतिकी, रसायन और तकनीकी ही नहीं होता, बल्कि उसमें मानवता का कल्याण निहित हो। उन्होंने कहा कि प्रकृति संघर्ष मूलक नहीं बल्कि सामंजस्यमूलक है, लेकिन द्वन्द तो है, और वह सतत् विद्यमान है। जैसे प्रकृति और मनुष्य में द्वन्द है, मनुष्य अपने अस्तित्व को ठीक करने में ही प्रकृति के विरुद्ध हो गया है। आज हमारे राष्ट्र की सारी लड़ाई आस्तिकता के लिए है। उन्होंने कहा कि हमने धरती को कोरा कागज समझ कर जहां चाह वहां नाली, सड़क, नहर, इमारत बना देते है, लेकिन इस बात का ध्यान नहीं रखते कि धरती की भी अपनी संरचना है, उसका अपना आकर्षण-विकर्षण, पंच भूतों की योजना है। हमने वास्तु शास्त्र को अपना लिया लेकिन धरती कीसंरचना को नहीं समझ पाए। भारत के पुनरुत्थान के लिए अनुसंधान विषय पर मुकुल कानिटकर ने कहा कि ज्ञान और आनंद परस्पर जुड़े हुए हैं। बिना आनंद के ज्ञान अधूरा है और बिना ज्ञान के आनंद की अनुभूति भी नहीं हो सकती। यह संवाद केवल चर्चा का माध्यम नहीं बल्कि भारत के विकास और पुनरुत्थान का संकल्प है, जिसमें मित्रता और विचार-विनिमय को प्राथमिकता दी गई है।

शोध को शिक्षण परिसर से बाहर लाना होगा

नन्दिनीशरण महाराज ने कहा कि गुरुकुलों में मिलने वाली मुफ्त विद्या की व्यवस्था को समाप्त कर दिया है। सेवा पारायण लोग सेवा की विद्या पद्धति से ही निर्मित होते हैं, वे न तो द्रव्य की विद्या पद्धति से निर्मित होते हैं और न ही नहीं विद्या पद्धति से। शोध को शिक्षण परिसर से बाहर लाना पड़ेगा। जो देयकों के लिए लिख रहे हैं, उनसे समाज को आशा नहीं। उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान परम्परा गुरुकुल पद्धति में निहित है। शताब्दियों से दासता ग्रस्त हमारी सारी चेतना कुलीनता के विचार को नष्ट करने हेतु प्रतिबद्ध है।

सांची विवि में लद्दाख के बौद्ध दर्शन पर व्याख्यान

एजुकेशन रिपोर्टर, भोपाल। सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में लद्दाख में बौद्ध दर्शन विषय पर विशिष्ट अतिथि और नई दिल्ली के लद्दाख केंद्रीय शोध संस्थान के निदेशक तथा जम्मू कश्मीर सांस्कृतिक अकादमी के पूर्व मुख्य संपादक डॉ. नवांग सेरिंग शाक्सपो ने व्याख्यान दिया। डॉ. नवांग सेरिंग शाक्सपो ने तिब्बती भाषा के भारत में जन्म की बात कहते हुए तिब्बती भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान करने की मांग की। उनके मुताबिक तिब्बती भाषा अधिकतर हिमालयी राज्यों में बोलचाल में प्रयुक्त होती है। उन्होने कनिष्क द्वारा तिब्बत में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका का भी उल्लेख किया। डॉ शेरिंग ने गुरु पद्मसम्भव कश्मीर में राजा जांग्स्कार के समय हुई चौथी बौद्ध संगीतिका तथा कनिष्क के समय बनाए गए कनिका स्तूप का भी जिक्र किया। कुलगुरु वैद्यनाथ लाभ ने सम्राट अशोक के समय ही लद्दाख के भागों में बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार का उल्लेख किया।

धान पर 4 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर अतिरिक्त लाभः सीएम

डॉ. मोहन यादव ने बालाघाट के सम्मेलन में किसानों को दी सौगात

विशेष संवाददाता, भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बालाघाट के किसान सम्मेलन में किसानों को अभूतपूर्व सौगात देते हुए कहा कि अब प्रदेश में धान उत्पादक किसानों को 4 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर अतिरिक्त लाभ दिया जायेगा। उन्होंने कहा कि गेहूं उत्पादक किसानों को भी प्रति क्विंटल 175 रुपए अतिरिक्त बोनस राशि दी जायेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि मूल्य संवर्धन योजना (प्राइस सपोर्ट स्कीम) अंतर्गत वर्ष 2024 में 6.69 लाख किसानों द्वारा 12.2 लाख हेक्टेयर रकबे में उत्पादित धान का विक्रय किया गया है। धान उत्पादक किसानों को मुख्यमंत्री कृषक प्रोन्नति योजना में प्रति हेक्टेयर 4000 रुपए का लाभ मिलेगा। इससे प्रदेश के किसानों को 488 करोड़ रुपए का अतिरिक्त लाभ होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि गेहूं उत्पादक किसानों को भी समर्थन मूल्य 2425 रुपए के अतिरिक्त 175 रुपए प्रति क्विंटल की बोनस राशि दी जायेगी। इस प्रकार गेहूं के उपार्जन पर प्रति क्विंटल 2600 रुपए की राशि मिलेगी। इस वर्ष प्रदेश में 80 लाख मीट्रिक टन गेहूं उपार्जन अनुमानित है। प्रदेश के किसानों को 175 रुपए प्रति क्विंटल बोनस के रूप में मिलने से लगभग 1400 करोड़ रुपए की अतिरिक्त राशि का लाभ होगा।

हॉकी के एस्ट्रो टर्फ का लोकार्पण किया

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बालाघाट के खिलाड़ियों को महत्वपूर्ण सौगात देते हुए हॉकी के एस्ट्रो टर्फ का लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश के लिए गर्व की बात है कि प्रदेश के खिलाड़ी राष्ट्रीय ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर भी पर देश का नाम रोशन कर रहे हैं। पदक प्राप्त करने वाले मध्यप्रदेश के खिलाड़ियों का होना हमें गौरवान्वित करता है। उन्होंने उत्तराखंड में हुए राष्ट्रीय खेलों में मध्यप्रदेश के तीसरे स्थान पर रहने पर हार्दिक प्रसन्नता जताई।

प्रदेश में एक लाख सरकारी पदों पर की जा रही भर्ती

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सरकार सभी वर्गों के कल्याण के लिए संकल्पबद्ध होकर निरंतर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में एक लाख सरकारी पदों पर भर्ती की जा रही है। आने वाले 5 वर्षों में 2 लाख 70 हजार पदों पर विभिन्न सेक्टर में रोजगार उपलब्ध कराए जाएंगे। हमारी सरकार वर्ष 2028 तक सरकार 70 प्रतिशत युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्धता पूर्वक कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सभी वर्गों के कल्याण के लिए प्रदेश में चल रही योजनाएं यथावत चलती रहेंगी। कोई भी योजना बंद नहीं होगी। उन्होंने कहा कि हमारा प्रयास है कि प्रदेश सभी क्षेत्रों में लगातार नंबर वन पर बना रहे। मुख्यमंत्री ने किसान सम्मेलन में सभी को विकास का संकल्प भी दिलाया। मुख्यमंत्री ने सम्मेलन में प्रदर्शनी का अवलोकन किया। उन्होंने 1412 दिव्यांगजनों और 1040 वरिष्ठ नागरिकों को सहायक उपकरण वितरित करने के साथ अन्य विभिन्न योजनाओं के हितग्राहियों को हितलाभ वितरित किये।

सीएम मोहन यादव का सम्मान करेगा भाजपा किसान मोर्चा

विशेष संवाददाता, भोपाल। भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का सम्मान करेगा। किसान मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष दर्शन सिंह चौधरी ने कहा कि सीएम यादव के नेतृत्व में मध्य प्रदेश सरकार लगातार किसानों के हित में काम कर रही है। मुख्यमंत्री ने प्रदेश के किसानों को बड़ी सौगात देते हुए 2600 रुपए प्रति क्विंटल के समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदने का फैसला किया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस किसानों की लाश पर रोटी सेंकती है, भाजपा किसानों को समृद्ध बना रही है। कांग्रेस के शासनकाल में किसान खेती के प्रति उदासीन हो गए थे। चौधरी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किसान सम्मान निधि की राशि डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (डीबीटी) के जरिए किसानों के खातों में भेजकर योजना को लागू किया है। मध्य प्रदेश के 82 लाख किसानों को इस योजना का सीधा लाभ मिल रहा है। सीएम ने मध्य प्रदेश के गेहूं किसानों को नुकसान होने पर प्रति हेक्टेयर दो हजार रुपए का बोनस देने का ऐतिहासिक फैसला लिया है मध्य प्रदेश भाजपा सरकार का यह निर्णय किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त करने का काम करेगा। साथ ही चौधरी ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी जब प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने किसानों के लिए किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) योजना लागू करके किसानों को बहुत कम ब्याज दर पर खेती के लिए ऋण दिलाने का कार्य किए थे।

2600 रुपए प्रति क्विंटल गेहूं खरीदी के फैसले से खुश

हमीदिया में चिलर प्लांट की खराबी से बढ़ रहा लैब का तापमान

कार्यालय संवाददाता, भोपाल। हमीदिया अस्पताल के सेंट्रल क्लीनिकल लैब का चिलर प्लांट बीते कई दिनों से खराब है। मामले में बायोकेमिस्ट्री विभाग ने प्रबंधन को पत्र लिखा है। जिसमें लैब का तापमान बढ़ने से जांच रिपोर्ट गड़बड़ होने की आशंका जताई गई। शुक्रवार को जीएमसी प्रबंधन ने चिलर प्लांट लगाने वाली एजेंसी से रिपेयरिंग ना करने पर सवाल किया तो एजेंसी ने मेंटेनेंस के लिए बजट की मांग की। जिसके बाद प्रबंधन द्वारा एजेंसी से हुए एमओयू को निकाला गया। जिसमें साफ तौर पर लिखा है कि चिलर प्लांट के मेंटेनेंस से लेकर संचालन की जिम्मेदारी एजेंसी की है। जिसके बाद एजेंसी के पदाधिकारियों ने जल्द चिलर प्लांट रिपेयर करने की बात कही है।

एनपीएस में मिसिंग क्रेडिट राशि अब अभिदाता के खाते में जमा होगीः देवड़ा

वल्लभ भवन एवं विध्याचल कोषालय में होगा चालान का सत्यापन

विसं भोपाल। सरकार ने कर्मचारियों के हित में महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए शेयर होल्डरों के खातों में छूटी हुई क्रेडिट की राशि जमा करवाने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। अब गैर अंशदायी पेंशन योजना में भी अंशधारकों के खातों में छूटी हुई क्रेडिट की राशि जमा करवाई जाएगी। उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा ने बताया कि अंशधारकों के खातों में छूटी हुई क्रेडिट की राशि जमा करवाने के लिए 15 मार्च 2025 तक विशेष अभियान चलाया जाएगा।

इस संबंध में विभागीय स्तर पर निर्देश भी जारी कर दिए गए हैं। अंशदायी पेंशन योजना (एनपीएस) राच्य सरकार के अधीन सिविल सेवा पदों पर 1 जनवरी 2005 या उसके बाद नियुक्त सरकारी सेवकों पर लागू है। इसमें सरकारी सेवकों के वेतन से कर्मचारी अंशदान व सरकारी अंशदान संबंधित के स्थाई सेवानिवृत्ति खाता संख्या (प्रदान) में जमा करवाया जाता है। ऐसे सरकारी कर्मचारी, जो प्रतिनियुक्ति पर पदस्थ हैं और उनका अंशदान उनके प्रान में जमा नहीं करवाया गया है, ऐसे मामलों में छूटी हुई क्रेडिट (गुमसुदा कटौत्री) की समस्या आती है। छूटी हुई कटौतियों की समस्या के समाधान के लिए कोष एवं लेखा संचालनालय द्वारा आईएफएसआईसी में एक सुविधा विकसित की गई है। ऐसे शासकीय सेवक जो प्रतिनियुक्ति पर पदस्थ हैं, उनके अंशदान चालान का विवरण कोषाधिकारी द्वारा आईएफएसआईसी में भरा जाएगा। वरिष्ठ कोषालय अधिकारी वल्लभ भवन राजीव सिंह पवैया ने बताया कि वल्लभ कोषालय द्वारा प्रतिनियुक्ति पर पदस्थ कोई भी शासकीय सेवक, जो भारतीय स्टेट बैंक की टीटी नगर, जहांगीराबाद, एमपी नगर, पंचानन एवं बरखेड़ी शाखाओं में चालान जमा करेगा, उसका सत्यापन वल्लभ भवन कोषालय सतपुड़ा भवन द्वारा किया जाएगा।

अनदेखी | व्हाइट रंप्ड वल्चर अब भी आईयूसीएन की गंभीर लुप्तप्राय श्रेणी में, देश भर में संख्या 6 हजार से भी कम

17 साल पहले गिद्ध संरक्षण शुरू, पर बंद नहीं हुआ अवैध पेन किलर का उपयोग

जागरण संवाददाता, भोपाल। पूरे देश में 17 सालों से किए जा रहे वृहद संरक्षण कार्यक्रम के बाद भी इंडियन व्हाइट रंप्ड वल्चर (सफेद पीठ वाला गिद्ध) इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन नेचुरल रिसोर्सेस (आईयूसीएन) की गंभीर लुप्तप्राय श्रेणी से बाहर नहीं आ सका है। आईयूसीएन द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार व्हाइट रंप्ड वल्चर की संख्या पूरे देश में 6 हजार से भी कम है। संस्था द्वारा आखिरी बार साल 2022 में आकंड़े जारी किए गए थे। तब व्हाइट रंप्ड वल्चर की संख्या 4 हजार से 6 हजार के बीच ही पाई गई थी। खास बात यह है कि संरक्षण कार्यक्रम के चलते गिद्धों की यह संख्या स्थिर बनी हुई है। अन्यथा यह प्रजाति कभी की विलुप्त हो गई होती। बता दें कि देश में 1990 के पूर्व गिद्धों की संख्या 4 करोड़ से अधिक थी, लेकिन इसके बाद इनकी संख्या में तेजी से गिरावट आई। कई वर्षों तक चले सर्वे के बाद भारत सरकार के पर्यावरण व वन मंत्रालय के साथ बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी (बीएनएचएस) द्वारा देशभर में गिद्ध संरक्षण के लिए वृहद स्तर पर संरक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, लेकिन इसके बाद भी सफेद पीठ वाले गिद्ध की जनसंख्या में बढ़ोत्तरी नहीं हो रही है। आशा के अनुरूप परिणाम नहीं मिलने के बाद जब एक बार पर्यावरण मंत्रालय द्वारा सर्वे कराया गया तो यह जानकारी सामने आई है कि जानवरों को दी जाने वाली पेन किलर ड्रग डायक्लोफेनिक के अलावा देशभर में 6 अन्य पेन किलर का उपयोग किया जा रहा था, जो गिद्धों के लिए हानिकारक हैं, जिनके चलते अब भी गिद्धों की संख्या तेजी से नहीं बढ़ पा रही है। इनमें से तीन ड्रग बेन की गई हैं, लेकिन दो दवाओं के उपयोग पर अब भी पाबंदी नहीं है। बता दें कि आईयूसीएन द्वारा व्हाइट रंप्ड वल्चर के अलावा पौधों, जानवरों सहित पक्षियों की 132 प्रजातियां ऐसी हैं, जो गंभीर लुप्तप्राय की श्रेणी में शामिल हैं।

संक्रमण फैलने से रोकते हैं गिद्ध

बीएनएचएस से जुड़े बायोलॉजिस्ट डॉ. ए सेमसन बताते हैं कि गिद्धों को प्राकृतिक सफाई कर्मी माना जाता है। किसी भी जानवर की प्राकृतिक मौत होने पर गिद्ध सबसे पहले वहां पहुंचकर उस जानवर को खाकर खत्म कर देते हैं, जिससे उस क्षेत्र में संक्रमण फैलने का खतरा कम हो जाता है। 1990 तक प्रकृति में हर जगह गिद्ध दिखाई देते थे, लेकिन पिछले कुछ सालों में इनकी संख्या तेजी से कम हुई है, जिसका कारण प्रतिबंधित दवाओं का चोरी छिपे उपयोग होना है। इन दवाओं के उपयोग से इन पक्षियों की 99.9 फीसदी आबादी खत्म हो गई है। इसके अलावा लॉन्ग बिल्ड वल्चर (लंबी चोंच वाले गिद्ध) की भी 97 फीसदी आबादी पूरी तरह से विलुप्त हो गई है।

रिसर्च के बाद इन दो दवाओं के उपयोग की अनुमति

रिसर्च के बाद जानवरों की दर्द निवारक के रूप में दो दवाओं मेलॉक्सिकेम और टॉलफिनामिक एसिड के उपयोग की अनुमति दी गई है। जबकि पैरासिटामोल पर रिसर्च जारी है।

आईयूसीएन गिद्धों को लेकर हर 4 साल में जारी सूची

2008	गंभीर लुप्तप्राय
2012	गंभीर लुप्तप्राय
2013	गंभीर लुप्तप्राय
2015	गंभीर लुप्तप्राय
2016	गंभीर लुप्तप्राय
2017	गंभीर लुप्तप्राय
2021	गंभीर लुप्तप्राय
2022	गंभीर लुप्तप्राय

इन दवाओं के चलते नहीं बढ़ रही गिद्धों की आबादी

प्रतिबंधित डायक्लोफेनिक के अलावा अन्य दवाओं का भी जानवरों पर धड़ल्ले से प्रयोग हो रहा है। जानवरों के शरीर में यह दवाएं 6 से 7 दिन तक रहती हैं। यदि इसी बीच जानवर की मौत हो जाती है, तो इसके अंश जानवर के मांस में मौजूद होते हैं और यदि ऐसे में इनका सेवन गिद्ध करते हैं, तो उनकी किडनियां खराब हो जाती हैं और उनकी मौत हो जाती है।

- **एसिलोफनिक** (जून 2023 में बैन)
- **कीटो प्रोफेन** (जनवरी 2025 में बैन)
- **निमुसिलाइड** (जनवरी 2025 में बैन)
- **फ्लूनिक्सिन** (बैन नहीं)
- **कारप्रोफेन** (बैन नहीं)
- **फेनिल बुटाजोन** (बैन नहीं)

प्रथम व पेज तीन की खबरों का शेष ...

बहस के बाद व्हाइट...

ट्रंप ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि जेलेंस्की शांति चाहते ही नहीं हैं। ट्रंप ने दावा किया कि पुतिन शांति के लिए काफी गंभीर हैं। यूक्रेन की मदद बंद करने के सवाल पर ट्रंप ने कहा कि अब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अब वे तभी बातचीत करेंगे, जब जेलेंस्की इस जंग को वाकई में खत्म करना चाहते हों।

दिल्ली में 15 साल ...

माना जाता है। दिल्ली की स्थिति का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि नवंबर-2024 में कुछ इलाकों में 1000 तक एयर क्वालिटी इंडेक्स पहुंच गया था। दिल्ली के 36 में से 33 वायु निगरानी केंद्रों पर एक्यूआई 490 के पार था। 15 पर 500 पर था, जो बेहद खतरनाक की श्रेणी में आता है। चुनाव में भाजपा ने वादा किया था कि वह प्रदूषण कम करने की दिशा में काम करेगी।

पेज-3 का शेष

पीथमपुर में हर...

बाजार खुले हैं। तारपुरा गांव में भी हालात सामान्य हैं। हालांकि लोगों में दहशत है, लेकिन खुलकर बोलने के लिए कोई तैयार नहीं है। पीथमपुर बचाओ समिति के अध्यक्ष हेमंत हीरोले ने बताया कि कानूनी सलाह लेकर आगामी दिनों में जबलपुर हाईकोर्ट में फिर से पक्ष रखेंगे। कानूनी लड़ाई जारी रहेगी।

एक घंटे में 30 बैग भस्मक में डाल रहे : इंसीनरेटर में डालने के लिए 4.5 किलोग्राम वेस्ट में 4.5 किलोग्राम चूना मिलाकर यानी 9 किलोग्राम के बैग बनाए गए हैं। एक घंटे में 30 बैग इंसीनरेटर के प्राथमिक दहन कक्ष में डाले जा रहे हैं। इंसीनरेटर के संचालन से बनने वाली फ्लू गैस के रिफाइनमेंट के लिए स्प्रे ड्रायर, मल्टी सायकलॉन, ड्राय स्क्रबर, बैग फिल्टर, वेट स्क्रबर सभी प्रभावी ढंग से काम कर रहे हैं। चिमनी से हो रहे उत्सर्जन की लगातार जांच के लिए ऑनलाइन मॉनिटरिंग सिस्टम चल रहा है। इससे कार्बन मोनो ऑक्साइड, कार्बन डाई ऑक्साइड, ऑक्सीजन, हाइड्रोजन फ्लोराइड, हाइड्रोजन क्लोराइड, पर्टिकुलेट मैटर, सल्फर डाई ऑक्साइड, नाइट्रोजन के ऑक्साइड, टोटल ऑर्गेनिक कार्बन की जांच की जा रही है।

संक्षिप्त समाचार

सुकमा में पुलिस से मुठभेड़, 2 नक्सली ढेर

सुकमा। छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले में जवानों ने 2 नक्सलियों को मार गिराया है। इनमें एक महिला, एक पुरुष है। दोनों के शव बरामद कर लिए गए हैं, लेकिन पहचान नहीं हो पाई है। 2025 में 83 नक्सली ढेर हुए हैं। मामला किस्टाराम थाना क्षेत्र का है। शनिवार सुबह से पुलिस और नक्सलियों के बड़े लीडर्स से मुठभेड़ चल रही है। दोनों तरफ से रुक-रुककर फायरिंग हुई। किस्टाराम इलाके में कोबरा, डीआरजी और जिला बल के करीब 500 जवानों ने नक्सलियों को घेर रखा है। इसके पहले जवानों ने बीजापुर में 9 फरवरी को जवानों ने 31 नक्सलियों को मार गिराया था। सभी 31 के शव रिकवर कर लिए गए थे। मुठभेड़ में 2 जवान भी शहीद हुए थे।

भाजपा नेता के बिगड़े बोल- कहा, आतिशी शूर्पणखा

नई दिल्ली। दिल्ली में महरौली से भाजपा विधायक गजेंद्र यादव ने सदन में विपक्ष की नेता आतिशी को लेकर विवादित बयान दिया। रिपोर्ट के मुताबिक, गजेंद्र ने आतिशी की तुलना शूर्पणखा से की। शुक्रवार को एक सार्वजनिक कार्यक्रम में गजेंद्र ने कहा, रामायण में रावण और कुंभकर्ण मारे गए, लेकिन शूर्पणखा बच गई। इसी तरह दिल्ली चुनाव में अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया का राजनीतिक करियर खत्म हो गया, लेकिन आतिशी जीत गई। वह शूर्पणखा जैसी हैं। यादव ने आप विधायकों को रुदाली भी कहा। यादव ने कहा, आप विधायकों को केवल रोने और विरोध करने के लिए चुना गया था, जब भी हम सकारात्मक बदलाव लागू करने की कोशिश करते हैं। वे रुदाली शुरू कर देते हैं।

तमिलनाडु भवन को उड़ाने की धमकी, खाली कराया

नई दिल्ली। नई दिल्ली जिले के चाणक्यपुरी इलाके में स्थित तमिलनाडु हाउस को बम से उड़ाने की धमकी मिलने से हड़कंप मच गया। यह धमकी एक ईमेल के जरिए भेजी गई थी। जिसके बाद तुरंत पुलिस को मामले की सूचना दी गई। स्थानीय पुलिस के अलावा दमकल की तीन गाड़ियां, बम निरोधक दस्ता, डॉग स्क्वायड व अन्य एजेंसियां मौके पर पहुंच गईं। तुरंत तमिलनाडु भवन को खाली करा लिया गया। करीब दो घंटे तक चले तलाशी अभियान के बाद कुछ नहीं मिला।

मणिपुर में 21 महीने बाद 8 से शुरू होगी आवाजाही

इंफाल। मणिपुर में 21 महीनों बाद हालात सामान्य होने के आसार हैं। गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को राज्य के हालात पर समीक्षा बैठक की। इस दौरान उन्होंने सड़कें ब्लॉक करने वालों पर सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। गृह मंत्री ने 8 मार्च से मणिपुर में सभी सड़कों पर बेरोकटोक आवाजाही सुनिश्चित करने को कहा है। वहीं, अलग-अलग समुदायों ने 20 फरवरी से अब तक 300 से ज्यादा हथियार सरेंडर किए हैं। राज्यपाल ने 20 फरवरी को अनुरोध किया था कि हिंसा में लूटे गए हथियार सरेंडर कर दें। सीएम बीरेन सिंह ने 9 फरवरी को इस्तीफा दे दिया था। इसके बाद मणिपुर में 13 फरवरी को राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया था।

पार्टी के खिलाफ बयान देने पर होगा एक्शन: कांग्रेस

नई दिल्ली। आगामी चुनावों को लेकर जिन दो राज्यों पर कांग्रेस की उम्मीदें टिकी हुई है, उनमें असम, केरल प्रमुख है। इन दोनों ही राज्यों में सत्ता वापसी की बात हो रही है। केरल चुनाव के मद्देनजर शुक्रवार की शाम नए मुख्यालय में पार्टी के शीर्ष नेतृत्व ने प्रदेश नेताओं से लंबी बैठक की, जिसमें कई पहलुओं पर चर्चा हुई। हाईकमान ने जहां एक और नेताओं को सामूहिक नेतृत्व में चुनाव में उतरने की सलाह दी तो वही दो टूक नसीहत देते हुए कहा कि अगर नेताओं ने बेवजह बयानबाजी की या पार्टी विरोधी बयान दिए तो उनके खिलाफ ऐक्शन होगा।

मार्च में बर्फबारी, 600 सड़कें बंद

▸▸ 3 दिन से भारी बर्फबारी ▸▸ 2300 से ज्यादा ट्रांसफॉर्मर ठप ▸▸ 10 से ज्यादा गाड़ियां बहीं ▸▸ 10वीं-12वीं की एग्जाम डेट आगे बढ़ाई

नई दिल्ली,जेएनएन। फरवरी महीने के आखिरी और मार्च की दस्तक के साथ गर्मी का दौर शुरू हो जाता है। बसंत के बाद पतझड़ ऋतु के साथ मौसम में भी बदलाव होता है, लेकिन इस बार फरवरी महीने में ही देश में दो तरह से मौसम का सामना करना पड़ रहा है। दक्षिण और मध्य के राज्यों में जहां दिन में तेज धूप और तापमान में बढ़ोतरी के चलते गर्मी असर दिखाने लगी है, वहीं उत्तर के राज्यों में अचानक मौसम ने करवट ली है। देश के पहाड़ी राज्यों में भारी बारिश और बर्फबारी जारी है। हिमाचल प्रदेश के ऊंचे क्षेत्रों में 3 दिन से भारी बर्फबारी और निचले इलाकों में बारिश हो रही है। 3 मार्च को फिर से बारिश और बर्फबारी के आसार हैं। वहीं, 5 और 6 मार्च को प्रदेशभर में मौसम पूरी तरह साफ हो जाएगा।

जम्मू-कश्मीर में बारिश से नदियों का जलस्तर 3-4 फीट तक बढ़ा

बर्फबारी और बारिश के चलते सड़कों पर पानी भर गया।

लेह में बर्फबारी और भारी बारिश से सड़कों पर लगे जाम में फंसे वाहन।

कुल्लू में आई बाढ़ से गाड़ियां बहीं

स्टेट इमरजेंसी ऑपरेशन सेंटर के मुताबिक प्रदेश में तीन दिन की बर्फबारी से 650 से ज्यादा सड़कें और 2300 से ज्यादा ट्रांसफॉर्मर ठप हो गए हैं। बद्रीनाथ नेशनल हाईवे बंद हो गया। कांगड़ा और कुल्लू जिले में बादल फटने से आई बाढ़ में 10 से ज्यादा गाड़ियां बह गईं। चंबा और मनाली में भी स्कूल-कॉलेज बंद कर दिए गए हैं। हालांकि, सीबीएसई बोर्ड की परीक्षाएं तय शेड्यूल के हिसाब से होंगी।

जम्मू-कश्मीर में चार फीट तक बर्फबारी

वहीं, जम्मू-कश्मीर में 25 से 28 फरवरी के दौरान गुलमर्ग में सबसे ज्यादा 113 सेमी यानी चार फीट और सोनमर्ग में 75 सेमी बर्फबारी हुई। खराब मौसम की वजह से जम्मू-कश्मीर सरकार ने स्कूलों में विंटर वैकेशन 6 दिनों के लिए बढ़ा दी गई है। इसके अलावा 10वीं से 12वीं तक की 1 और 3 मार्च को होने वाली परीक्षाओं की तारीख आगे बढ़ाई गई हैं। अब ये एग्जाम 24 और 25 मार्च को कराए जाएंगे। लगातार हो रही बरसात ने सर्दियों में बारिश की कमी को 50 फीसदी तक पूरा कर दिया है। इससे नदियों और अन्य वाटर बॉडीज का लेवल 3 से 4 फीट बढ़ गया है। रामबन जिले बटोत में सबसे ज्यादा 163.7 मिमी बारिश दर्ज की गई। इसके बाद कटरा में 118 मिमी और बनिहाल में 100 मिमी हुई।

तुर्किये में थमी 40 साल पुरानी जंग

कुर्द संगठन ने हथियार डाले, अलग देश की लड़ाई में अब तक 40 हजार मौतें

अंकारा,जेएनएन। तुर्किये में कुर्द अलगाववादी और सरकार के बीच 40 साल से जारी संघर्ष खत्म हो गया। आतंकी संगठन कुर्दिस्तान वर्कर्स पार्टी (पीकेके) के उग्रवादियों ने तुर्किये के साथ सीजफायर की घोषणा कर दी। एक दिन पहले जेल में बंद पीकेके नेता अब्दुल्ला ओकलान ने संगठन को भंग करने की आदेश दिया था। पीकेके ने कहा, शांति लोकतांत्रिक समाज के लिए हमारे नेता के आदेश पर हम सीजफायर की घोषणा कर रहे हैं। पीकेके की उत्तरी इराक में मौजूद शाखा ने कहा, हम भी सीजफायर का पालन करेंगे। जब तक हम पर हमला नहीं किया जाता, तब तक हमारी सेना भी हिंसक कार्रवाई नहीं करेगी। तुर्किये, अमेरिका, यूरोपीय संघ ने पीकेके को आतंकी संगठन घोषित कर रखा है। तुर्किये की 8.5 करोड़ आबादी में 1.5 करोड़ यानी 20 फीसदी कुर्दों है।

पीकेके पार्टी भंग होने के बाद तुर्किये में जश्न

1984 से छेड़ रखी थी जंग

1978 में बने इस संगठन की मांग थी कि उन्हें तुर्किये से अलग कर कुर्दिस्तान बनाया जाए या फिर तुर्किये के अंदर कुर्दों को पहले से ज्यादा अधिकार दिए जाएं। इस मांग के साथ संगठन ने 1984 में तुर्किये सरकार के खिलाफ जंग छेड़ी थी। इस जंग में अब तक 40 हजार से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं। इसके चलते तुर्किये, अमेरिका और यूरोपीय संघ इस संगठन को आतंकी घोषित कर चुके हैं। संगठन के नेता अब्दुल्लाह ओकलान को 1999 में तुर्की की स्पेशल फोर्स ने केन्या में पकड़ा था। तब से उसे इस्तांबुल की एक जेल में कैद रखा गया है, जहां वह उम्रकैद की सजा काट रहा है। कुर्दिस्तान वर्कर्स पार्टी मार्क्सवादी-लेनिनवादी कुर्द अलगाववादी समूह है। इसकी स्थापना 1978 में हुई थी। इसका मकसद आजाद कुर्दिस्तान की स्थापना करना है।

खाली हो गई टेंट सिटी वीरान दिख रहा संगम

प्रयागराज। महाशिवरात्रि के साथ ही महाकुंभ भी संपन्न हो गया है। वैसे तो पूर्णिमा के बाद से ही टेंट सिटी खाली होने लगी थी। खासतौर पर मेले के आकर्षण नागा साधु धीरे-धीरे जाने लगे थे, लेकिन 26 फरवरी के बाद का नजारा एकदम ही बदल गया है। डेढ़ महीने से जहां जन सैलाब था आज वह टेंट सिटी वीरान लगने लगी है।महाकुंभ खत्म होने के बाद बचे-कुचे टेंट भी उतार लिए गए हैं। वहीं लंबा चौड़ा एरिया एकदम खाली नजर आ रहा है। संगम स्थान पर बने जिन अस्थायी पुलों पर जनसैलाब दिखाई देता था वे आज खाली पड़े हैं। मेले के बाद बड़े इलाके में फैले कूड़े और कचरे को जलाया जा रहा है। पूरे क्षेत्र को साफ करने का अभियान चलाया गया। महाकुंभ में जो दुकानें लगी थीं वे भी जा रही हैं।

महाकुंभ के बाद चारों तरफ बिखरा सामान

अमेरिका-यूक्रेन के बीच गहमागहमी से दुनिया चकित

40 दिन में दुनिया को झकझोरा 4 साल में क्या करके मानेंगे ट्रंप?

नई दिल्ली,जेएनएन। शक्ति को नियंत्रण में रखना बेहद मुश्किल होता है। अच्छे-अच्छे लोग सत्ता के मद में खुद को भगवान ही मानने लगते हैं। कुछ घंटे पहले पूरी दुनिया ने एक अभूतपूर्व घटना देखी। धरती पर इस समय के सबसे बड़े पावर सेंटर व्हाइट हाउस के ओवल ऑफिस में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की के बीच जिस तरह से 40 मिनट तक झड़प हुई, उसकी कल्पना किसी ने भी नहीं की होगी। ट्रंप-जेलेंस्की के इस संवाद ने तीसरे विश्व युद्ध की जमीन तैयार कर दी है। दूसरी बार दुनिया की सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति की कमान मिलने पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का रवैया सभी को चौंका रहा है। व्हाइट हाउस से बाइडेन को बेदखल किए हुए ट्रंप को 40 दिन हो गए हैं, लेकिन इतने दिनों में ही उन्होंने अपनी चौधराहट पूरी दुनिया पर दिखा दी है। मेक अमेरिका ग्रेट अगेन

के फलसफे पर चल रहे ट्रंप क्या दोस्त और क्या दुश्मन... सभी को एक ही डंडे से हांक रहे हैं। बीते 40 दिनों में उनके कुछ बड़े फैसलों पर गौर करें तो जाहिर होता है कि ट्रंप पावर पाकर बेहद मगरूर हो गए हैं। इमीग्रेशन पॉलिसी ने अमेरिका में बसे अप्रवासी भारतीयों के मन में काफी दहशत तो भर ही दी है। अमेरिका में पढ़ाई और वहां बसने का इरादा रखने वाले भारतीय छात्रों को अब कोर्स करेक्शन की जरूरत है। अपने सपनों को परवान चढ़ाने के लिए उन्हें अब दूसरे विकसित मुल्कों का रुख करना पड़ेगा।

दुनिया को दादागीरी दिखा रहे हैं ट्रंप

अमेरिका फर्स्ट के नाम पर ट्रंप जिस तरह से दुनिया पर दादागीरी दिखा रहे हैं, वो एक तानाशाह की ही मानिंद है। रूस और यूक्रेन के बीच की लड़ाई में ट्रंप ने बाइडेन प्रशासन से उलट पुतिन का साथ दिया है। जेलेंस्की ने बाइडेन की शह पर ही अपने से कई गुना ताकतवर रूस से पंगा लेने की जुर्रत की थी, लेकिन ट्रंप का ट्रैक तो दूसरा ही है, इसकी तस्दीक संयुक्त राष्ट्र में उन्होंने रूस की पैरवी करके कर दी थी। यूक्रेन ही नहीं, ट्रंप अपनी राष्ट्रवादी नीतियों की पैरोकारी करते-करते इस समय उत्तर कोरिया से लेकर सऊदी अरब, बेलारूस और चीन जैसे देशों के पाले में जा खड़े हुए हैं। अधिनायकवादी नेताओं के साथ ट्रंप की ये करीबी भारत के लिए भी मुफीद नहीं है। दुनिया के 5 ताकतवर मुल्कों अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, कनाडा और न्यूजीलैंड के अलायंस फाइव आइज पर भी पड़ा है। कनाडा के नक्शे पर अमेरिकी झंडा लहरा चुके ट्रंप इस गठबंधन से अब कनाडा को हटाने पर तुले हैं, क्योंकि ट्रंप की नजर में कनाडा अमेरिका का ही हिस्सा है! दुनिया के कई देश ट्रंप के इस बर्ताव से हैरान हैं।

टैटू पार्लर के लिए सख्त नियम बनाएगा कर्नाटक

मंत्री बोले-इसकी स्याही में 22 खतरनाक मटेरियल, स्किन डिजीज का खतरा

बेंगलुरू, जेएनएन । कर्नाटक के स्वास्थ्य मंत्री दिनेश गुंडू राव ने ऐलान किया है कि राज्य सरकार टैटू पार्लरों के लिए नए और सख्त नियम लागू करने की योजना बना रही है, ताकि सुरक्षा सेफ्टी को सुनिश्चित किया जा सके। इसके लिए राज्य सरकार केंद्र से हस्तक्षेप की भी मांग करेगी ताकि टैटू प्रक्रिया के लिए उचित दिशा-निर्देश स्थापित किए जा सकें।

टैटू स्याही में मेटल्स, स्वास्थ्य को खतरा

राव ने बताया कि खाद्य सुरक्षा विभाग ने हाल ही में टैटू स्याही के नमूनों का टेस्ट किया जिसमें 22 तरह के खतरनाक मटेरियल पाए गए। इनमें स्किन कैंसर, एचआईवी, हेपेटाइटिस बी और सी और स्टैफिलोकोकस ऑरियस जैसे बैक्टीरिया भी पाए गए। टैटू से जुड़े संक्रमणों के कारण एड्स, कैंसर और स्किन से जुड़ी बीमारियों में काफी बढ़ोतरी हुई है। इसमें खराब सफाई स्टैंडर्ड और टैटू प्रक्रिया में खतरनाक रसायनों के इस्तेमाल पर चिंता जताई गई है।

इडली बनाने में प्लास्टिक के इस्तेमाल पर प्रतिबंध

28 फरवरी को कर्नाटक सरकार ने राज्य के सभी होटलों में इडली बनाने में प्लास्टिक के उपयोग पर रोक लगा दी है, क्योंकि स्वास्थ्य मंत्री ने खतरनाक रसायनों की मौजूदगी को पहचाना था। स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि इडली बनाने में स्वास्थ्य के लिए हानिकारक प्लास्टिक का इस्तेमाल गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है।

प्लास्टिक के उपयोग से स्वास्थ्य जोखिम: राव

स्वास्थ्य मंत्री राव ने कहा, खाद्य एवं सुरक्षा विभाग के टेस्ट में इसकी पुष्टि हुई है और होटलों और रेस्तरां में इडली बनाने के लिए प्लास्टिक के इस्तेमाल पर रोक लगा दी गई है। गुंडू राव ने कहा, प्लास्टिक से निकलने वाले जहरीले रसायन खाने में मिल सकते हैं, जिससे कैंसर सहित गंभीर स्वास्थ्य जोखिम पैदा हो सकते हैं।

अमेरिका में दीवार फांदकर घुसा पानीपत का डिलीवरी बॉय, पकड़े जाने पर डिपोर्ट

एजेंट ने लिए थे 32 लाख

पानीपत, जेएनएन। पानीपत शहर की मुखीजा कॉलोनी में रहने वाले डिलीवरी बॉय को अमेरिका से जबरन डिपोर्ट कर दिया गया। वह एक महीने पहले 28 जनवरी को दीवार फांदकर अमेरिका में घुसा था। अब उसे वापस भेज दिया गया है। यहां आकर उसने मामले की शिकायत पुलिस को दी है। पुलिस ने शिकायत के आधार पर दो सगे भाई एजेंटों के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

पैसा कमाने गया था अमेरिका: मॉडल टाउन थाना पुलिस को दी शिकायत में शुभम ने बताया कि वह मुखीजा कॉलोनी, जाटल रोड का रहने वाला है। वे तीन भाई। सबसे ब?ा वह खुद है। उससे छोटा साहिल व सबसे छोटा सचिन है। जून 2024 में शहर में डिलिवरी ब्वॉय का काम करता था। इस दौरान घर पर दो सगे भाई संदीप व मंदीप निवासी गांव अहर जिला पानीपत आकर मिले। संदीप ने कहा कि वह उसे अमेरिका भिजवा देगा। वहां बहुत पैसा कमा लेगा।

महाकुंभ के दौरान सवा करोड़ श्रद्धालु पहुंचे राम मंदिर

अयोध्या, जेएनएन। प्रयागराज का महाकुम्भ इस बार बड़ा कीर्तिमान गढ़ा गया। 45 दिन तक चले मेले के दौरान अयोध्या में भी श्रद्धालुओं का ऐसा रेला उमड़ा की हर कोई ताजुब कर गया। इतने दिनों में अयोध्या में भी एक इतिहास रच दिया। चार से पांच करोड़ के बीच लोगों के पहुंचने की संभावना जताई जा रही है। ऐसा पहली बार हुआ कि प्रभु श्री रामलला के दर्शन को रात एक-एक बजे तक कपाट खोले रखे गए। श्रद्धालुओं ने योगी सरकार के विकास कार्यों व प्रशासनिक व्यवस्थाओं की जमकर तारीफें भी की हैं। अयोध्या में मकर संक्रांति से श्रद्धालुओं के उमड़ने का क्रम शुरू हुआ तो महाशिवरात्रि तक

जारी रहा। 26 जनवरी से तो मानो प्रयागराज ही उमड़ आया। रोजाना 10 से 12 लाख श्रद्धालु अयोध्या पहुंच रहे थे। श्रद्धालुओं ने न सिर्फ आध्यात्मिक दृष्टि से अयोध्या को देखा बल्कि पर्यटन का भी नजारा लिया।

चुस्त-दुरुस्त इंतजाम

राम मंदिर के दर्शन को पहुंच रहे श्रद्धालुओं की संख्या को देखते हुए जिला प्रशासन ने बड़ी व्यवस्थाएं कर रखी थी। 25 हजार लोगों के ठहरने के लिए आश्रय स्थल, शौचालय, पेयजल, साफ - सफाई व्यवस्था आदि का इंतजाम किया गया था। इसके अलावा रुट डायवर्जन भी किया गया था। भीड़ बढ़ती देख जिले की सीमाओं पर होल्डिंग एरिया बनाये गए थे। मण्डलायुक्त गौरव दयाल ने बताया कि 45 दिन तक चले मेले के दौरान अयोध्या पहुँचने वाले श्रद्धालुओं को सुरक्षा मानकों के अनुसार दर्शन कराए गए। देश के विभिन्न कोने-कोने से श्रद्धालु अयोध्या पहुंचे थे।

संजय को स्क्रिप्ट सुनाने नशे में गए थे महेश

नई दिल्ली,जेएनएन। महेश मांजरेकर के निर्देशन में बनी पहली फिल्म वास्तव अंडरवर्ल्ड-थीम वाली फिल्मों के गोल्डन युग में रिलीज हुई, यह फिल्म गंभीर कहानी, संजय दत्त की बेस्ट परफॉर्मेंस, क्लाइमेक्स के लिए आज भी याद की जाती है। हाल ही एक इंटरव्यू में महेश माजरेकर ने फिल्म वास्तव से जुड़ा हैरान करने वाला किस्सा सुनाया। उन्होंने बताया कि वो संजय के पास शराब पीकर वास्तव की स्क्रिप्ट सुनाने गए थे। संजय के साथ वहां पर संजय छेल भी थे। छेल के पिता फिल्म के प्रोडक्शन डिजाइनर थे और उन्होंने मेरी ओर देखकर हाथ हिलाया। संजय दत्त ने पलटकर मेरी ओर देखा और अजीब सा रिएक्शन दिया।

दावा | सुपर कंप्यूटर सिमुलेशन से देखी भविष्य की झलक, धरती पर रहना होगा मुश्किल

धरती से खत्म होने वाली है इंसानियत ?

नई दिल्ली, जेएनएन। वैज्ञानिकों ने एक सुपरकंप्यूटर सिमुलेशन की मदद से पृथ्वी के भविष्य की झलक देखी है, जिससे पता चलता है कि आने वाले सालों में धरती पर रहना मुश्किल हो सकता है, नतीजे को देखकर कहा जा सकता है कि दुनिया के अंत का समय तय हो चुका है। कुछ प्राचीन मिथकों, पंचांगों और वैज्ञानिक शोधों में पृथ्वी की उम्र और उसके अंत के बारे में बताया गया है, लेकिन हाल ही में सुपरकंप्यूटर ने भी दुनिया के अंत की भविष्यवाणी की है, जिससे नई चर्चाएं शुरू हो गई हैं। नए सुपरकंप्यूटर सिमुलेशन ने वैज्ञानिकों को पृथ्वी के भविष्य की झलक दिखाई है, अध्ययन से संकेत मिलता है कि पृथ्वी पर जीवन बेहद कठिन हो सकता है। 250 मिलियन वर्षों में ग्रह को विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा।

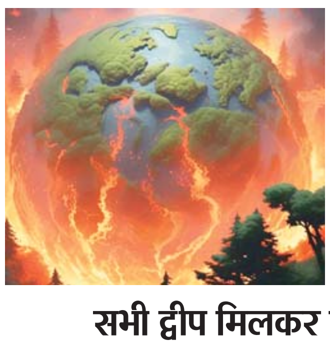

तेजी से बढ़ रहा तापमान

धरती का तापमान जिस तेजी से बढ़ रहा है, उसने वैज्ञानिकों को चिंतित कर दिया है। एक नए अध्ययन के मुताबिक, यह स्थिति एक ऐसी दुनिया की ओर इशारा कर रही है, जहां इंसानों समेत कई जीव विलुप्त हो सकते हैं। अत्यधिक गर्मी और बढ़ती ज्वालामुखीय गतिविधियों के कारण भविष्य में पृथ्वी पर जीवन मुश्किल हो सकता है।

सभी द्वीप मिलकर बनाएंगे सुपरकंटिनेंट

ब्रिस्टल विवि के शोध में अनुमान लगाया गया है कि 250 मिलियन वर्षों में पृथ्वी के सभी महाद्वीप मिलकर एक नया सुपरकंटिनेंट बनाएंगे, जिसे पैंजिया अल्टिमा कहा जाएगा। इस विशाल भूभाग पर भीषण गर्मी होगी और कई जगहों पर तापमान 50 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच सकता है, जिससे जीवन मुश्किल हो जाएगा। यह नया महाद्वीप जो संभवतः भूमध्य रेखा के पास बनेगा, बेहद गर्म और दमघोंटू होगा। यहां अत्यधिक तापमान, भारी नमी और तेज ज्वालामुखीय गतिविधियां होंगी। इन कठोर परिस्थितियों के कारण, पृथ्वी का अधिकांश हिस्सा स्तनधारी जीवों के रहने लायक नहीं रहेगा और जीवन का अस्तित्व खतरे में पड़ सकता है।

पृथ्वी का 92 फीसदी भाग रहने लायक नहीं होगा

अध्ययन में पृथ्वी का 92 फीसदी भाग इंसानों के रहने लायक नहीं रहेगा। वैज्ञानिकों का मानना है कि सिर्फ ध्रुवीय और तटीय क्षेत्रों में ही जीवन संभव हो सकेगा। जलवायु वैज्ञानिक डॉ. अलेक्जेंडर फार्नस्वर्थ ने इसे स्तनधारियों के लिए ट्रिपल व्हैमी (तीनहरी मार) कहा है। उनका कहना है कि अत्यधिक गर्मी, दमघोंटू आर्द्रता और बढ़ती ज्वालामुखीय गतिविधियां मिलकर खतरनाक परिस्थितियां बना देंगी, जिससे पृथ्वी पर जीवित रहना लगभग असंभव हो जाएगा। इस तरह की रिपोर्ट्स से यह स्पष्ट होता है कि पृथ्वी का भविष्य अनिश्चित बना हुआ है। हालांकि, यह भी सच है कि हमारे द्वारा प्रकृति के विरुद्ध किए गए कार्य धीरे-धीरे विनाश की ओर संकेत कर रहे हैं।

14वें बच्चे के पिता बने अरबपति मस्क

वॉशिंगटन डीसी। इलॉन मस्क 14वें बच्चे के पिता बन गए हैं। उनकी कंपनी न्यूरालिंक की एग्जीक्यूटिव शिवॉन जिलिस इस बच्चे की मां हैं। बच्चे को सेल्डन लाइकर्गस नाम दिया गया है। शिवॉन जिलिस ने शुक्रवार को बच्चे के जन्म की जानकारी एक्स पर दी। उन्होंने लिखा कि इलॉन से बातचीत के बाद हमने महसूस किया कि हमारे अद्भुत और अविश्वसनीय बेटे के बारे में जानकारी शेयर करना बेहतर होगा। हालांकि, उन्होंने ये नहीं बताया कि बेटे का जन्म कब हुआ है। शिवॉन ने लिखा, वह एक शक्तिशाली योद्धा की तरह मजबूत है और उसका दिल सोने जैसा निर्मल है। हम उसे बहुत प्यार करते हैं। शिवॉन और मस्क के पहले से 3 बच्चे हैं। इनमें दो जुड़वां बच्चे- स्ट्राइडर और एज्योर और बेटी अर्काडिया हैं।

कानूनी प्रक्रिया में नहीं फंसेगी ट्रैप में जब्त शिकायतकर्ता की राशि

मुख्य संवाददाता, भोपाल। रिश्वतखोरों को पकड़वाने वाले शिकायतकर्ताओं को अब रिश्वत के रूप में दी गई अपनी रकम पाने के लिए सालों तक लंबा इंतजार नहीं करना होगा। प्रदेश सरकार जल्द ही एक विशेष फंड बनाने जा रही है, जिससे शिकायत करने वालों को अभियोजन की कार्रवाई शुरू होते ही राशि लौटा दी जाएगी। प्रदेश में अगले माह अप्रैल से सामान्य प्रशासन विभाग लगभग 40 लाख रुपये का विशेष कोष बना रहा है। प्रारंभिक तौर पर यह व्यवस्था पहले लोकायुक्त पुलिस में लागू होगी, बाद में इसे आर्थिक अपराध प्रकोष्ठ में भी लागू करने की तैयारी है। विशेष कोष के जरिए सरकार ट्रैप की रकम शिकायतकर्ताओं को अभियोजन की कार्रवाई शुरू होते ही रिफंड कर देगी। इससे शिकायतकर्ताओं को आर्थिक नुकसान नहीं होगा। ऐसे में जब फैसला आएगा तो रिश्वत के रूप में जब्त की गई रकम इस कोष में चली जाएगी। इससे भ्रष्टाचारियों पर भी लगाम कसेगी क्योंकि लोग ज्यादा से ज्यादा शिकायतें जांच एजेंसियों को करेंगे। अगर आंकड़ों की बात करें तो लोकायुक्त पुलिस ने 2022 में लगभग 250, 2023 में 180 और 2024 में लगभग 200 कर्मचारियों और अधिकारियों को रिश्वत लेते पकड़ा है।

फैसले के बाद मिलती है रकम

लोकायुक्त पुलिस के ट्रैप प्रकरणों में अब तक लगभग तीन करोड़ की रिश्वत के रूप में दी गई राशि अटकी हुई है। ये रकम शिकायतकर्ता को तब वापस मिलती है जब कोर्ट उस केस पर फैसला सुना देता है। सामान्य तौर पर कोर्ट से प्रकरण का निपटारा होने में कई बार 15 साल तक लग जाते हैं। कोर्ट के फैसले के बाद शिकायतकर्ता को मूल राशि ही मिलती है।

खुद का वेतन दो लाख, चौकीदार से मांगी 9000 की घूस, अरेस्ट

भोपाल। धार जिले के कानवन में स्थित शासकीय महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. मंजू पाटीदार को लोकायुक्त पुलिस इंदौर की यूनिट ने रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ पकड़ा। उन्होंने कॉलेज में ही पदस्थ एक चौकीदार का वेतन जारी करने नौ हजार के लिए घूस मांगी थी। इसकी शिकायत लोकायुक्त पुलिस को किए जाने के बाद महिला प्राचार्य को ट्रैप करने का प्लान बनाया गया। इसके बाद चौकीदार और प्रिंसिपल मैडम के बीच फोन पर बातचीत टैप की गई। महिला प्राचार्य ने जैसे ही अपने ऑफिस में शनिवार को घूस के पैसे लिए, वैसे ही लोकायुक्त पुलिस की टीम ने उसे पकड़ लिया। आरोपी प्राचार्या के खिलाफ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 की धारा 7 के अंतर्गत केस दर्ज किया गया है। प्राचार्या डॉ. मंजू पाटीदार के खिलाफ कॉलेज के चौकीदार विजय बारिया ने 26 फरवरी को लोकायुक्त पुलिस को शिकायती आवेदन दिया था। 21 साल के विजय ने अपनी कंप्लेन में बताया था कि सितंबर से दिसंबर 2024 तक 4 महीने का वेतन निकालने के लिए डॉ. मंजू पाटीदार 13 हजार रुपए की रिश्वत मांग रही है। लोकायुक्त पुलिस ने योजना बनाकर विजय को प्रिंसिपल डॉ. मंजू पाटीदार से फोन पर बात करने को कहा।

संक्षिप्त खबरें

रील बनाने भगवान की मूर्ति पर चढ़कर सिगरेट पी रहे अघोरी की साधुओं ने की पिटाई

उज्जैन। महाकुंभ में अपनी अजीबो गरीब हरकत और रहन-सहन से चर्चा में आए उज्जैन के एक अघोरी ने रील

बनाने के लिए भगवान की प्रतिमा पर ही चढ़ गया। इतना ही नहीं, मंदिर की मर्यादा तोड़ते हुए वह अघोरी भगवान की प्रतिमा पर बैठकर सिगरेट भी पीने लगा। यह देख मंदिर के आसपास बैठे बाबा और संतों ने ही अघोरी की ऐसी धूल उड़ाई कि फिर वो नाक रगढ़कर माफी ही मांगता रहा। यह उज्जैन के चक्रतीर्थ श्मशान घाट के विक्रांत भैरव मंदिर की घटना है। इसका वीडियो भी वायरल हो रहा है। मंदिर की मर्यादा लांघने वाले अघोरी का नाम यशवंत है। वह काला चश्मा और काली पगड़ी पहनकर उंगलियों में सिगरेट फंसाकर पहुंचा था। पैरों में घुंघरू बांधकर छम-छम करते मंदिर में पहुंचा। फिर देखते ही देखते भगवान विक्रांत भैरव की प्रतिमा पर चढ़कर सिगरेट पीने लगा। इसका वीडियो सामने आते ही शमशान में रहने वाले बाबा बम बम नाथ महाराज के शिष्यों ने आरोपी को पकड़ लिया। पहले डंडों से, फिर लात-घूंसों से उसकी जमकर पिटाई कर दी। इस दौरान वह सड़क पर गिर पड़ा। लोगों में गुस्सा इस कदर था कि आरोपी को लगातार पीटते रहे। जमकर हुई पिटाई के बाद वह बाबा बम बम नाथ के पैर पकड़कर माफी मांगता रहा।

खंडवा में जिला जल अभावग्रस्त घोषित किया गया, निजी बोरिंग पर रोक

जागरण, खंडवा। सर्दी अभी खत्म भी नहीं हुई और न गर्मी ही शुरू हुई, लेकिन खंडवा जिले में जल संकट ने दस्तक दे दी है। कलेक्टर ऋषव गुप्ता ने पूरे जिले को जल अभावग्रस्त क्षेत्र घोषित कर दिया है। कलेक्टर के आदेशानुसार अब बिना अनुमति के कोई भी व्यक्ति निजी तौर पर बोरिंग और नलकूप खनन नहीं करा सकेगा। हालांकि, सरकारी काम के लिए नलकूप खनन पर प्रतिबंध लागू नहीं होगा। कलेक्टर ऋषव गुप्ता ने बताया कि निजी ड्रिलिंग मशीनों के वाहनों का जिले के भीतर की सीमा में आवागमन बिना सक्षम अधिकारी की स्वीकृति के पूरी तरह प्रतिबंधित रहेगा। बिना अनुमति के नलकूप खनन करने पर दोषी व्यक्ति को दो साल तक की जेल और दो हजार रुपए के जुर्माने से दंडित किया जाएगा। खंडवा शहर एवं तहसील के लिए नलकूप की स्वीकृति एसडीएम खंडवा की ओर से दी जाएगी। इसके अलावा तहसील पुनासा व मूंदी के लिए एसडीएम पुनासा, तहसील हरसूद, किल्लोद व खालवा के लिए एसडीएम हरसूद, तहसील पंधाना व छैगांवमाखन के लिए एसडीएम पंधाना द्वारा अनुमति दी जाएगी।

राजाधिराज महाकाल बाबा ने अपने भक्तों को दिए पंच मुखारबिंद दर्शन

साल में केवल एक बार होता है महाकाल महाराज का ऐसा श्रृंगार

जागरण उज्जैन । राजाधिराज श्री महाकालेश्वर मंदिर में बाबा महाकाल ने आज अपने पंच मुखारविंद स्वरुप में भक्तों को दर्शन दिए, महाकाल राजा वर्ष में केवल एक बार इस स्वरुप में अपने भक्तों को दर्शन देते हैं। कहा जाता है कि आज की तिथि को ही बाबा ने चंद्रमा को अपने मस्तक पर धारण किया था। उज्जैन में विराजमान बाबा महाकाल फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया तिथि के मौके पर पंच मुखारविंद स्वरुप में नजर आए वैसे तो श्री महाकालेश्वर मंदिर में बाबा का रोज ही अलग अलग श्रृंगार होता है, लेकिन शिव नवरात्रि के अंतिम दिन यानी फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया को बाबा अपने सभी पंच स्वरुपों में दर्शन देते हैं। वह एक साथ अपने पांचों स्वरूप छबीना, मनमहेश, उमा-महेश, होलकर और शिवतांडव के रूप में भक्तों के सामने उपस्थित होते हैं.एक साथ उनके इन सभी स्वरुपों का दर्शन पाने के लिए भक्तों का रेला उमड़ता है। महाकालेश्वर मंदिर के पुजारी के मुताबिक महाशिवरात्रि के बाद बाबा फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा पर चंद्र दर्शन के दिन हर साल इस रूप में भक्तों को दर्शन देते हैं। हालांकि इस बार प्रतिपदा तिथि के क्षय होने की वजह से बाबा द्वितीया तिथि को पंच मुखारविंद स्वरुप में सामने आए पुजारी के मुताबिक श्री महाकालेश्वर मंदिर की परंपरा के मुताबिक हर साल फाल्गुन कृष्ण पंचमी से फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी महाशिवरात्रि तक 9 दिन का शिव नवरात्रि उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है।

मस्तक पर चंद्रमा को धारण करने की तिथि

मंदिर के पुजारी पं महेश शर्मा बताते हैं कि भगवान शिव को पंचानन कहा जाता है और वे पांच स्वरूप में जगत का कल्याण करते हैं। इसीलिए फाल्गुन शुक्ल पक्ष की द्वितीया का दिन ही एक ऐसा अनोखा अवसर होता है, जब बाबा महाकाल चंद्र दर्शन के दिन साल में सिर्फ एक बार भक्तों को अपने पांच स्वरूपों में दर्शन देते हैं। दरअसल बाबा ने इसी तिथि को चंद्रमा का कल्याण करते हुए उन्हें अपने मस्तक पर स्थान दिया था।

बुरहानपुर में वर्ल्ड रिकार्ड की तैयारी

21 कलाकार बिना रुके कर रहे भगोरिया-फगुआ नृत्य

जागरण, बुरहानपुर। शहर में निमाड़ी लोक संस्कृति को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने का प्रयास किया जा रहा है। परमानंद गोविंदजीवाला ऑडिटोरियम में नेपानगर जागृति कला केंद्र के मुकेश दरबार के नेतृत्व में 21 कलाकार लगातार लोक नृत्य की प्रस्तुति दे रहे हैं। यह आयोजन मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड भोपाल और जिला प्रशासन की पहल पर किया जा रहा है। कार्यक्रम का उद्घाटन शुक्रवार दोपहर खंडवा लोकसभा सांसद ज्ञानेश्वर पाटील, बुरहानपुर विधायक अर्चना चिटनिस और नेपानगर विधायक मंजू दादू सहित अन्य जनप्रतिनिधियों और बुरहानपुर कलेक्टर हर्ष सिंह ने किया।

लंदन से आज आएगी गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड की टीम

ढोल, मांदल और बांसुरी के साथ दे रहे परफॉर्मेंस: कलाकार भगोरिया, फगुआ और गणगौर जैसे पारंपरिक नृत्यों की प्रस्तुति दे रहे हैं। इन नृत्यों में ढोल, मांदल और बांसुरी जैसे पारंपरिक वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जा रहा है। यह विश्व का पहला ऐसा आयोजन है, जहां बिना रुके लोक नृत्य की प्रस्तुति दी जा रही है। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य बुरहानपुर में पर्यटन को बढ़ावा देना और स्थानीय संस्कृति को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करना है। लंदन की टीम 2 मार्च को इस प्रदर्शन के लिए वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड का अवॉर्ड प्रदान करेगी। वहीं इस दौरान सांसद पाटील ने कहा कि मेरे संसदीय क्षेत्र के पर्यटन विकास के लिए चारों जिला कलेक्टरों को पर्यटन स्थलों को विकसित करने के लिए डीपीआर तैयार करने के निर्देश दिए हैं।

ट्रैक्टर-थ्रेसर पलटते ही लगी आग दो युवक जिंदा जलें, दमकल बिगड़ी

छतरपुर का मामला, लोग बचाने दौड़े लेकिन समय ही नहीं मिला

जागरण, छतरपुर। फसलों की थ्रेसिंग के लिए जा रहे ट्रैक्टर-थ्रेसर में पलटने से आग लग गई। ट्रैक्टर की रफ्तार इतनी तेज थी कि पलक झपकते ही आग भभक उठी और इसमें दबे युवकों को बचाने जब तक लोग इकट्ठा हुए। दोनों की चीखें हमेशा के लिए शांत हो गईं। घटना बक्सवाहा थाना क्षेत्र में गुगवारा-सेदरा रोड पर शनिवार शाम 4 बजे की है। मृतकों की पहचान महुटा गांव के अशोक यादव (25) और मोहित गौड़ (17) के रूप में हुई है। दोनों बमोरी से महुटा गांव की ओर फसल की थ्रेसिंग के लिए जा रहे थे। तभी ट्रैक्टर पलटने से दोनों युवक इसके नीचे दब गए और तत्काल ही ट्रैक्टर में आग लग गई। सड़क पर खड़े लोगों ने पुलिस और प्रशासन को सूचना दी, लेकिन पुलिस देरी से पहुंची। वहीं फायर ब्रिगेड जैसे ही घटना स्थल के लिए निकली, उसकी साफ्ट टूट गई और वह बीच रास्ते में ही खड़ी हो गई। लोगों का आरोप है कि दमकल समय पर पहुंचती तो दोनों की जान बचाई जा सकती थी। अब पुलिस मामले की जांच में जुटी है। वह फायर ब्रिगेड बिगड़ने की भी जांच कराएगी।

बिजनेस प्लस

केंद्रीय बजट 2025-26 में किसानों के लिए बड़ी राहत

जागरण,भोपाल। केंद्रीय बजट 2025-26 ने किसानों के लिए कई महत्वपूर्ण घोषणाएं की गई हैं। इनमें से एक प्रमुख घोषणा संशोधित ब्याज सहायता योजना के तहत ऋण सीमा को 3 लाख से बढ़ाकर 5 लाख रूपए करना है। इससे छोटे और सीमांत किसानों पर वित्तीय तनाव कम होगा और कृषि में अधिक निवेश को बढ़ावा मिलेगा। इसके अलावा, भारतीय रिजर्व बैंक ने जमानत-मुक्त केसीसी ऋण को 1.6 लाख रूपए से बढ़ाकर 2 लाख रूपए कर दिया है। इन पहलों के माध्यम से सरकार का लक्ष्य 2023-24 में कृषि अल्पकालिक ऋण को 9.81 लाख करोड़ रुपये से बढ़ाकर 2029-30 तक 20 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचाना है। सरकार ने पिछले दशकों में मिस के माध्यम से किसानों को 1.44 लाख करोड़ रुपये प्रदान किए हैं। इसके अलावा, केंद्रीय बजट 2025-26 में कृषि विकास के लिए कई अन्य महत्वपूर्ण घोषणाएं भी की गई हैं। इनमें प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना, ग्रामीण समृद्धि और लचीलापन का निर्माण, दलहनों में आत्मनिर्भरता मिशन शामिल हैं।

बैंक घोटाले मामले में प्रकाश चंद्र गुप्ता गिरफ्तार

जागरण,भोपाल। कोहेफिज़ा पुलिस ने एक बड़े बैंक घोटाले का पर्दाफाश करते हुए प्रकाश चंद्र गुप्ता को गिरफ्तार किया है। उन्होंने केनरा बैंक की कोहेफिज़ा शाखा से 2.60 करोड़ रुपये का लोन लिया था, जो 7 जनवरी 2024 को एनपीए हो गया। पुलिस के अनुसार, प्रोपराइटर बूटकाम सिस्टम्स प्रकाश चंद्र गुप्ता ने बैंक द्वारा ऋण राशि चुकाने के अनुरोध के बाद 1.20 लाख रुपये जमा किए, लेकिन उन्होंने डिपॉजिट स्लिप को कूटरचित करके राशि को 2.21 करोड़ रुपये तक बढ़ा दिया। इस मामले में प्रकाश चंद्र गुप्ता के खिलाफ थाना कोहेफिज़ा में एफआईआर दर्ज की गई और उन्हें 28 फरवरी को पुलिस ने गिरफ्तार किया। यह बताया गया है कि उन्होंने अन्य बैंकों और व्यक्तियों के साथ भी इस तरह के अपराध किए हैं, जिसके कारण उनके खिलाफ कई मामले विभिन्न न्यायालयों में पंजीबद्ध हैं।

अपनी ही सरकार में नहीं हो रहे विकास कार्य, 10 पार्षदों ने इस्तीफा सौंपा

जागरण, देवास। इसे दुर्भाग्य कहा जाए या फिर सरकार की उदासीनता मानी जाए कि प्रदेश में भाजपा की सरकार होते हुए नगर परिषद लोहारदा में भाजपाई पार्षदों को विकास कार्य नहीं होने के कारण त्यागपत्र देना पड़ रहा है। हालांकि त्यागपत्र देने वाले 10 पार्षदों में 2 कांग्रेस के व एक निर्दलीय भी शामिल है। इससे पहले भाजपा की नगर परिषद अध्यक्ष संध्या सुनील मालू भी अपने पद से त्यागपत्र दे चुकी है। हालांकि 6 माह बीत जाने के बाद भी उनका त्यागपत्र मंजूर नहीं हुआ है। इसीलिए आज उन्होंने पार्षद पद से भी त्यागपत्र दे दिया है। पार्षदों ने अपने सामूहिक त्यागपत्र अवकाश वाले दिन सीएमओ अब्दुल रजाक को सौंपे है, जो सोमवार को कलेक्टर को भेज दिए जाएंगे। प्राप्त जानकारी के अनुसार 6 माह पूर्व 12 अगस्त को लोहारदा नगर परिषद अध्यक्ष संध्या सुनील मालू ने विकास कार्य नहीं होने व उनकी सुनवाई नहीं होने के चलते अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया था।

डीएनएस सीक्वेंसर मशीन से चलेगा पता सिकल सेल होने की कितनी संभावना

बीएमएचआरसी में आई मशीन, मरीजों के लिए होगी फायदेमंद

कार्यालय संवाददाता, भोपाल। सिकल सेल एनीमिया उन्मूलन मिशन के तहत भोपाल स्मारक अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र (बीएमएचआरसी) में डीएनए सीक्वेंसर मशीन स्थापित की गई है। यह मशीन सिकल सेल एनीमिया की आनुवंशिक जांच में सहायक होगी, जिससे बीमारी के कारणों की स्पष्ट पहचान संभव हो सकेगी और अधिक प्रभावी उपचार की दिशा तय की जा सकेगी। आपको बता दें कि सिकल सेल एनीमिया एक अनुवांशिक बीमारी है, जो माता-पिता से बच्चों में आती है। यह एचबीबी जीन में होने वाले म्यूटेशन के कारण होता है। वर्तमान में प्रचलित अन्य जांच विधियां हीमोग्लोबिन के प्रकारों की पहचान करती हैं, लेकिन डीएनए सीक्वेंसर मशीन सीधे जीन स्तर पर जाकर म्यूटेशन की सटीक पहचान करती है। यह मशीन बीमारी की जड़ तक पहुँचकर यह बताने में सक्षम है कि एचबीबी जीन में कौन-सा म्यूटेशन मौजूद है, जिससे मरीजों के लिए अधिक प्रभावी और व्यक्तिगत उपचार योजना बनाई जा सकती है। यह भी तय किया जा सकता है कि किस मरीज को कौन-सा जीन एडिटिंग टूल या थेरेपी दी जानी चाहिए।

डीएनए सीक्वेंसर मशीन के लाभ

1. यह मशीन सीधे डीएनए का विश्लेषण कर सिकल सेल एनीमिया के लिए जिम्मेदार एचबीबी जीन के म्यूटेशन की सटीक पहचान करती है।
2. यह स्पष्ट जानकारी देती है, जहां अन्य पारंपरिक जांच विधियां भ्रमित कर सकती हैं।
3. डीएनए सीक्वेंसर का उपयोग गर्भस्थ या नवजात शिशुओं में सिकल सेल बीमारी की पहचान के लिए किया जा सकता है।
4. यह व्यक्ति के सिकल सेल एनीमिया का वाहक है या नहीं पता लगाती है।
5. यह मशीन उन मरीजों के लिए भी उपयोगी है, पहचान और उन्नत उपचार रणनीतियों के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।

जीन एडिटिंग से मिलेगी बीमारी से मुक्ति डीएनए सीक्वेंसर मशीन जीन एडिटिंग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह मशीन जीन में मौजूद म्यूटेशन की सटीक पहचान करके यह जानकारी देती है कि किस स्थान पर बदलाव की आवश्यकता है। सीआर आईएस पीसर जैसी जीन एडिटिंग तकनीकों की सहायता से इस म्यूटेशन को ठीक किया जा सकता है।

मुंबई के बीकेसी में खुलेगा टेस्ला का पहला शोरूम

मुंबई, जेएनएन। दुनिया की सबसे बड़ी इलेक्ट्रिक व्हीकल (ईवी) मैन्युफैक्चरर टेस्ला भारत का अपना पहला शोरूम मुंबई में खोलेगी। यह मुंबई के बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स (बीकेसी) में होगी। कंपनी ने हाल ही में डील फाइनल की है। प्रॉपर्टी मार्केट के सोर्सेस के अनुसार, टेस्ला बीकेसी में एक कॉमर्शियल टावर के ग्राउंड फ्लोर पर 4,000 स्क्वायर फीट की जगह ले रही है। यहां वह अपने कार मॉडल्स को शोकेस करेगी और बेचेगी। कंपनी इस जगह के लिए मंथली लीज रेंट करीब 900 रुपए प्रति वर्ग फीट या करीब 35 लाख रुपए देगी। लीज एग्रीमेंट पांच साल के लिए है। खबर थी कि कंपनी दिल्ली और मुंबई में अपना स्टोर खोलेगी। उम्मीद है कि टेस्ला दिल्ली के एयरोसिटी कॉम्प्लेक्स में दूसरा शोरूम खोलेगी। सीईओ इलॉन मस्क ने हाल ही में पीएम मोदी के अमेरिका दौरा में मुलाकात की थी।

भारत में बजट सेगमेंट की कार लाएगी टेस्ला : कंपनी यहां सबसे किफायती ईवी उतारने की तैयारी में है। इसकी कीमत 25 हजार डॉलर (21.71 लाख रुपए) हो सकती है। यह कौन-सा मॉडल होगा, इसकी जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन, ईवी कार को लेकर भारत की मौजूदा इंपोर्ट पॉलिसी हिसाब से 21 लाख रुपए की कार भारतीय बाजार में 36 लाख रुपए तक हो सकती है। अभी बाहर से आने वाली इलेक्ट्रिक कारों पर 75 प्रतिशत तक बेसिक कस्टम ड्यूटी लगती है।

उत्तराखंड एवलांच: 5 लोग अभी भी लापता

अस्पताल ले जाने के लिए मजदूर को एयरलिफ्ट करते जवान।

रेस्क्यू किए गए 50 मजदूरों में से चार की इलाज के दौरान मौत

चमोली, जेएनएन। उत्तराखंड के चमोली एवलांच में अब तक 4 लोगों की मौत हो चुकी है। हादसे के दूसरे दिन शनिवार को 17 मजदूरों को रेस्क्यू किया गया। इससे पहले शुक्रवार को 33 लोगों को बचाया गया था। इनमें गंभीर रूप से घायल 4 लोगों की इलाज के दौरान मौत हो गई। 5 मजदूर अब भी लापता हैं।

बता दें कि हादसा चमोली के माणा गांव के नजदीक 28 फरवरी की सुबह 7.15 बजे हुआ था। मोली-बद्रीनाथ हाईवे पर बॉर्डर रोड ऑर्गेनाइजेशन के 55 मजदूर कंटेनर हाउस में रुके थे, तभी बर्फ का पहाड़ खिसक गया। सभी मजदूर इसकी चपेट में आ गए थे। रेस्क्यू में सेना के 4 हेलिकॉप्टर के अलावा एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, आईटीबीपी और आर्मी के 200 से ज्यादा जवान लगे हुए हैं। आईटीबीपी कमांडेंट विजय कुमार पी ने कहा कि जिन मजदूरों की हालत गंभीर रही, उन्हें गंभीर हेड इंजरी थी। देर रात आईटीबीपी ने बताया कि लापता हुए पांच मजदूरों में से फिलहाल किसी का भी सुराग नहीं मिला है। हालांकि, आईटीबीपी डीजी ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि बर्फ में दबे मजदूर जीवित होंगे।

मजदूरों में सबसे ज्यादा बिहार और उत्तरप्रदेश के

जो 55 मजदूर फंसे थे, उनमें बिहार के 11, उत्तर प्रदेश के 11, उत्तराखंड के 11, हिमाचल प्रदेश के 7, जम्मू-कश्मीर के 1 और पंजाब के 1 मजदूर शामिल हैं। 13 मजदूरों का पता और मोबाइल नंबर नहीं है। उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी ने शनिवार सुबह घटनास्थल का दौरा किया और मजदूरों से मुलाकात की। इससे पहले सीएम से प्रधानमंत्री ने बातचीत की और रेस्क्यू ऑपरेशन का जायजा लिया।

नशे की गिरफ्त में बीयू के छात्र दोस्तों के डर से ले रहे हैं ड्रग्स

एजुकेशन रिपोर्टर, भोपाल। बरकतउल्ला विश्वविद्यालय में छात्रों का काफी आतंक है। इनके डर से छात्रावास में रहने वाला एक छात्र नशे का आदी हो गया है। छात्रों ने यूजीसी की एंटी रैगिंग हेल्पलाइन पर शिकायत दर्ज करा दी है। हेल्पलाइन से निर्देश मिलने के बाद बीयू ने जांच शुरू कर दी है। रिपोर्ट तैयार कर कुलपति सुरेश कुमार जैन को सौंप दी गई है। अब बीयू प्रबंधन आगे की कार्रवाई करेगा। बीयू के छात्रावास में छात्रों के बीच विवाद के चलते छात्रों के नशे के आदी होने की बात सामने आई है। नशा करने वाले चतुर्थ वर्ष के छात्र ने एंटी रैगिंग हेल्पलाइन पर शिकायत दर्ज कराते हुए बताया कि बीयूआईटी के अंतिम वर्ष में उसके साथ पढ़ने वाले आधा दर्जन छात्र छात्रावास में रहने वाले छात्रों के साथ मारपीट करते हैं। यहां तक कि एक छात्र अनाधिकृत रूप से छात्रावास में आकर अन्य छात्रों से जबरन वसूली भी करता है। मैं अपने सहपाठियों से भी परेशान हो गया हूं। इसलिए मैंने नशा करना शुरू कर दिया है। इससे छात्रों का भविष्य दांव पर लग रहा है। इससे उनका भविष्य बर्बाद हो सकता है। छात्र कल्याण अधिष्ठाता और एंटी रैगिंग स्क्वॉड ने हास्टल पहुंचकर उक्त विद्यार्थियों से पूछताछ की तो सामने आया कि आरोपी विद्यार्थी हास्टल में नहीं रहते हैं।

रेलवे ने ट्रेन डिमांड यूटिलिटी-माड्यूल तैयार किया, यात्रियों के पांच साल का डाटा अपलोड

सॉफ्टवेयर बताएगा किस रूट पर कितनी विशेष ट्रेन चाहिए

क्राइम रिपोर्टर, भोपाल। देशभर में यात्रियों की भारी भीड़ बढ़ने पर रेलवे विभाग की ओर से तैयार किया गया ट्रेन डिमांड यूटिलिटी-माड्यूल सॉफ्टवेयर बताएगा कि किस रूट पर कितनी विशेष रेल गाड़ियों की आवश्यकता है। इसके लिए न केवल यात्रियों के पुराने इतिहास को सॉफ्टवेयर खंगालेगा, बल्कि दूसरे जोन से इस रूट पर आई मांग का भी आकलन करेगा। सॉफ्टवेयर में साल 2019 से अब तक के यात्रियों का डाटा अपलोड किया गया है। इस डाटा को खंगालकर यह मॉड्यूल बताएगा कि किस समय में कौन से रूट पर विशेष रेलगाड़ी की मांग रहती है। इसी माड्यूल के जरिए स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय हो सकेगा। इसके लिए अधिकारी आवेदन भी ऑनलाइन करेंगे। इसकी मंजूरी भी ऑनलाइन ही मिलेगी। हर साल होली, ग्रीष्मकालीन अवकाश, छठ और अन्य त्यौहारों के अवसर पर रेल यात्रियों की संख्या काफी बढ़ जाती है। ऐसे समय में विशेष ट्रेनें चलाई जाती हैं। इसके लिए वाणिज्यिक एवं परिचालन विभाग द्वारा जोनल रेलवे के माध्यम से रेलवे बोर्ड के पास प्रस्ताव भेजा जाता है। वहां से अनुमति मिलने के बाद जोनल रेलवे की ओर से ट्रेन चलाने की योजना बनाई जाती है। इसके बाद

यात्रियों के लिए इसकी घोषणा की जाती है। इसमें लंबा पत्र व्यवहार किया जाता है। इस प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए क्रिस (सेंटर फॉर रेलवे इंफार्मेशन सिस्टम) द्वारा ट्रेन डिमांड यूटिलिटी-माड्यूल विकसित किया गया है। इसमें पांच वर्षों का डाटा डाला गया है, जिससे यह पता चल सकेगा कि किस समय में कौन से रूट पर गाड़ियों की मांग अधिक रहती है। यह भी पता चल सकेगा कि गाड़ियों के कितने फेरे इस रूट पर लगाए जा सकते हैं। वाणिज्यिक और परिचालन से जुड़े अधिकारी अब प्राइमस और आईसीएमएस प्लेटफार्म पर इस मॉड्यूल का इस्तेमाल कर विशेष रेलगाड़ी की मांग कर सकते हैं। रेलवे बोर्ड द्वारा ऑनलाइन ही निर्णय लिया जाएगा, जिससे काफी समय बचेगा।

साल 2019 से अब तक के डाटा को खंगालकर देगा परिणाम

आरपीएफ से जुड़े अधिकारी ने बताया कि इस माड्यूल में जनवरी 2019 से लेकर अब तक का यात्रियों एवं रेलगाड़ियों का डाटा डाला गया है। इस डाटा को खंगालकर यह मॉड्यूल बताएगा कि किस समय में कौन से रूट पर विशेष रेलगाड़ी की मांग रहती है। आवेदक दो तारीखों के बीच रेल यात्रियों द्वारा किन स्टेशनों के बीच ज्यादा मांग रहती है, यह भी पता लगा सकेंगे। इसके अलावा यह भी पता चलेगा कि रेलगाड़ी का चार्ट बनने के बाद किन गाड़ियों में कितने यात्रियों ने वेटिंग टिकट रद्द किया और कितनों ने उस पर सफर किया। इससे मांग का आकलन करने में उन्हें मदद मिलेगी।

सॉफ्टवेयर में यह विशेष सुविधाएं

- सॉफ्टवेयर बताएगा कि पहले एवं आखिरी स्टेशन के बीच यात्रियों के लिए चलने वाली गाड़ी के कितने फेरों की आवश्यकता है।
- तारीखों का उपयोग कर स्टेशनों के बीच गाड़ियों की मांग का आकलन किया जा सकता है।
- कॉमर्शियल से लेकर परिचालन विभाग तक विशेष ट्रेनों की मांग को जोनल रेलवे से ऑनलाइन भेजेंगे और इसकी मंजूरी भी ऑनलाइन ही मिलेगी।
- पहले से परिचालित हो रही गाड़ियों में खाली सीटों का भी पता चलेगा।
- यह पता चलेगा कि कितने रैक और अतिरिक्त कोच वास्तविक समय में उपलब्ध हैं।
- अन्य जोनल रेलवे के प्रस्ताव की जानकारी भी दूसरे जोन को मिलेगी, ताकि वह अपनी मांग का आकलन कर सकें।

ग्वालियर-इंदौर के बीच परीक्षा स्पेशल ट्रेन

कार्यालय संवाददाता, भोपाल। रेल प्रशासन द्वारा रेलवे भर्ती बोर्ड द्वारा आयोजित कंप्यूटर आधारित परीक्षा में शामिल होने वाले परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए ग्वालियर से इंदौर एवं इंदौर से ग्वालियर के बीच परीक्षा विशेष अनारक्षित ट्रेन चलाई जा रही है। यह ट्रेन भोपाल मंडल के बीना एवं संत हिरदाराम नगर स्टेशनों पर ठहराव के साथ संचालित होगी। गाड़ी संख्या 01825 ग्वालियर-इंदौर परीक्षा विशेष ट्रेन 1 से 11 मार्च एवं 16 व 17 मार्च को ग्वालियर स्टेशन से दोपहर 1 बजे प्रस्थान कर शाम 5 बजे बीना, 7.30 बजे संत हिरदाराम नगर और मार्ग के अन्य स्टेशनों से होते हुए रात के 2 बजे इंदौर स्टेशन पहुंचेगी।

साहित्य सृजन

बसंत फिर आना तुम बन-ठनकर

बसंत फिर आना तुम बन-ठनकर,
लाना खुशियां तुम चुन-चुनकर,
झरे पात नव कोपल होगी,
यौवन मन में नवप्रीत जगेगी,
प्रथम मिलन का चुंबन बनकर
बसंत फिर आना तुम बन-ठनकर।।
सब सह लूंगा तुम्हारे खातिर,
जग से लडूंगा तुम्हारे बादिर,
जेठ जलायेगा बनकर घाम,
काया का होगा काम तमाम,
सांझ पहर नयनों में छन-छनकर
बसंत फिर आना तुम बन-ठनकर।।
माह फिर आयेगा अषाढ़,
कोर-कसर यह लेगा काढ़,
ऊपर से मेंढक की चित्कार,
प्रणय आरजू की विह्वल पुकार
सह लूंगा सब सिसक-सिसककर
बादल का रूप तुम धर-धरकर
बसंत फिर आना तुम बन-ठनकर।।
उफनाएगा सावन में दिल का प्रवाह,
कौन नापेगा टूटे दिल की अकूत थाह,
चिढ़ाएंगे मुझको कामुक भ्रमर-कली,
देखूंगा! मधु होंठ भरी गागर छलकी-छलकी,
कहर ढायेगा ये मधु का मास,
चहुंओर दिखेगी प्यास ही प्यास,
बच जाऊंगा मैं जल-जलकर,
बसंत फिर आना तुम बन-ठनकर।।
अब फागुन की मस्त बयार लिए,
ज्यों पाहुन का मन में दीदार लिए,
देना दस्तक तुम मेरे बसंत,
करना समुची त्रास का अंत,
मैं हूँ चातक बस एक बूंद की आस,
सच मानों! बुझ जायेगी मेरे जीवन भर की प्यास।
हर रचना में बंद बन-बनकर,
कविता-कविता में छंद बन-बनकर,
रूप-अलंकारों से सज-धजकर,
बसंत अब ठहर जाना तुम बन-ठनकर।।

विजय शर्मा 'स्वामी' रीवा

तुम किसकी तलाश में हो

क्या चाहिए तुम्हे ,सब कुछ तो है यहां
ये बहती नदियां
ये सरसराती हवाएं
ये लचकती डालियां
ये सर्दी की धूप
ये गर्मी की छांव
ये रिमझिम सी बारिश
वो मिट्टी की खुशबू
ये खुला आसमां, आसमां में तारे
आखिर क्या चाहिए तुम्हे ,
तुम किसकी तलाश में हो
, यहां सब कुछ तो है
ये चिड़ियों की चहचहाहट
ये कोयल की कूक
ये पेड़ों की हरियाली
ये फूलों की खुशबू ...
यहां सब कुछ तो है
मां की ममता
पिता की छांव
बहन का प्यार
भाई का साथ
तुम्हारी सांसें , इतना बड़ा संसार
आखिर क्या चाहिए तुम्हे
यहां सब कुछ तो है।

देवांशु शर्मा , बहुरीबांध

मन

मन शुद्ध है तो बुद्ध है
मन कुद्ध है तो युद्ध है
मन साध्य है तो संत है
असाध्य मन तो अंत है
मन सूक्ष्म भी है वृहद भी
मन है हलाहल शहद भी
मन सखा भी है शत्रु भी
मन यत्र है सर्वत्र भी
मन अग्नि है मन नीर है
मन अबल है मन वीर है
मन लौह है मन स्वर्ण है
मन शाख विच्छिन्न पर्ण है
मन शांति है मन क्रांति है
मन चेतना मन भ्रांति है
मन सरल है मन जटिल है
मन ही मनहिमन कुटिल है
पलता जो भीतर द्वेष है
मन के अनेकों भेष है
साध लिया जो मन को तो चैतन्य स्वयं हो जाओगे
गर मन ने तुमको साध लिया तो माया में खो जाओगे।

प्रद्युम्न विश्वकर्मा, सतना

मिलन पिय से

गोरी रूप बनाय के,
राह निहारति कन्त।
सोचति होई आजु अब,
इंतजार के अन्त।
इन्तजार के अन्त,
मिलन अब पिय से होई।
बची अधूरी बाति,
आजु सब पूरी होई।
कहै प्रदीप सुनाय,
मीठ मिसरी कस घोरी।
दूबर पातरि ठाढ़,
सजी इक सुंदर गोरी।
ऐना देखत ठाढ़ि है,
मंद मंद बिदुराति।
लट उलझी सुलझाइ के,
खुदहूं से बतियाति।
खुदहूं से बतियाति,
न जानी कब तक अइहीं।
भरि अपने अकबार,
प्यार से गरे लगइहीं ।
कहैं सत्यव्रत आजु,
प्रेम बस व्याकुल मैना।
लिहे मिलन कै आस,
बिचारी देखत ऐना।

डॉ प्रदीप सत्यव्रत,सीधी

बता! आज कौन सी बात लिखूं

थोड़ा सोचूं फिर एक बात लिखूं,
जज्बात लिखूं या हालात लिखूं,
या मेरे हाथों में तेरा हाथ लिखूं,
तुझे देखूं या तेरी बात लिखूं ,
तेरी तारीफ लिखूं या
फरियाद लिखूं,
तेरे पीछे खुद को आबाद लिखूं ,
या तन्हाई में खुद को बर्बाद लिखूं,
तुझे दिन या खुद को रात्रि लिखूं ,
बता आज कौन सी बात लिखूं ।

पियूष तिवारी, बक्छेरा रीवा

अनशनकारियों के खिलाफ सख्त हुआ प्रशासन, गिरफ्तार कर रुकवाया अनशन

टेंट सहित सामग्री जब्त

जागरण, रीवा

जनपद कार्यालय रीवा एवं एसडीएम कार्यालय सिरमौर के सामने बीते 6 दिवस से किए जा रहे अनशन को अंततः प्रशासन ने सख्ती से हटा दिया। अनशन कर रहे अनशनकारियों को गिरफ्तार कर टेंट सहित सभी सामग्री पुलिस प्रशासन द्वारा जप्त कर ली गई साथ ही प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की गई है। जानकारी के अनुसार बिरसा मुंडा मंच के बैनर तले एवं आदिवासियों द्वारा विष्णु कांत कुशवाहा के नेतृत्व में लगातार 6 दिन से भूख हड़ताल एवं अनशन प्रदर्शन किया जा रहा था। अनशनकारी एसडीएम के स्थानांतरण, एक आदिवासी के नाम भूमि पट्टा सहित मांगों को लेकर अनशन पर बैठे हुए थे। वहीं अधिवक्ता संघ सिरमौर एवं आम जनमानस सिरमौर द्वारा अनशन को गलत ठहराते हुए एसडीएम सिरमौर को एक ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में आदिवासियों का भड़काने का आरोप लगाया गया। हालांकि पहले राजस्व विभाग के अधिकारियों ने भूख हड़ताल में बैठे लोगों को समझाया एवं जांच कर कार्यवाही की बात भी की, इसके बाद भी जब अनशनकारी नहीं मानें और हुज्जतबाजी करने लगे तो पुलिस की मदद से अनशनकारियों को गिरफ्तार कर कार्रवाई की गई।

गरीबों और पिछड़ों के अधिकारों के लिए जारी रहेगा संघर्ष : देवेन्द्र सिंह

सिरमौर। बिरसा मुंडा विचार मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष देवेंद्र सिंह ने बताया कि मंच द्वारा आदिवासी, दलित और गरीबों के अधिकारों की रक्षा के लिए चलाए जा रहे अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल को पुलिस प्रशासन ने बलपूर्वक कुचलने का प्रयास किया है। प्रदेश अध्यक्ष विष्णुकांत कुशवाहा सहित कार्यकर्ताओं, महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों को गिरफ्तार कर बर्बरता पूर्वक दमन किया गया। यह कार्रवाई सरकार की तानाशाही मानसिकता को दर्शाती है, जो गरीबों और वंचित वर्गों की आवाज को दबाने के लिए हरसंभव कोशिश कर रही है। लेकिन बिरसा मुंडा विचार मंच किसी भी कीमत पर अन्याय और शोषण को बर्दाश्त नहीं करेगा। ज्ञात हो कि पूर्व में भी इस मुद्दे को लेकर आंदोलन किया गया था, जिस पर सिरमौर एसडीएम ने उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया था, लेकिन अब तक कोई भी ठोस कदम नहीं उठाया गया। अधिकारियों की इस उपेक्षा और अन्यायपूर्ण रवैये के कारण ही आंदोलन को फिर से अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल का रूप देना पड़ा। इस आंदोलन के दौरान माननीय न्यायालय से संघर्षशील कार्यकर्ताओं की जमानत प्राप्त की गई। इसके पश्चात, राष्ट्रीय अध्यक्ष देवेंद्र सिंह ने नारियल पानी पिलाकर प्रदेश अध्यक्ष विष्णुकांत कुशवाह का अनशन तुड़वाया और आंदोलन को अगले चरण में ले जाने की घोषणा की। बिरसा मुंडा विचार मंच ने प्रशासन को चेतावनी दी है कि गरीबों, आदिवासियों और पिछड़ों के साथ शोषण और अन्याय अब सहन नहीं किया जाएगा। यदि न्यायोचित मांगों को तत्काल नहीं माना गया, तो यह आंदोलन और बड़ा रूप लेगा।

श्रीरामकथा संस्कार, मर्यादा एवं गृहस्थ जीवन की पाठशाला है : अन्नपूर्णा देवी

पंचदिवसीय श्रीराम कथा की पूर्णाहुति पर उमड़ा अपार जनसैलाब

देवतालाब। यदि संकल्प शुभ सकारात्मक व पारमार्थिक हो तो नियन्ता-नियति, परमात्मा-प्रकृति व सकल दैव सत्ता उसकी सिद्धि साकारता में सहायक होने लगते है। सत्कर्म प्रीति, परमार्थ और निःस्वार्थ सेवा, सरल स्वभाव एवं सामाजिक उदारता से परिपूर्ण आध्यात्मिक संपन्न व्यक्ति डॉ एस एस तिवारी जिनके भगीरथ प्रयास से विगत तेरह वर्षों से शिवनगरी देवतालाब में महाशिवरात्रि पर्व पर रामकथा अनवरत कराई जा रही है। कथा के संपूर्णता दिवस पर मानस कोकिला साध्वी अन्नपूर्णा माता के द्वारा हनुमान जी के सुंदर चरित्र का व्याख्यान करते हुए कहा कि हनुमान जी की शक्ति भक्ति की कृपा,अनुग्रह पाने के लिए श्रीराम के गुणगान करते हुए सद्मार्ग पर चलना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि माता पिता एवं वृद्धजन घर के देवता है उनकी सेवा करना हमारा परम कर्तव्य होना चाहिए। रामकथा के महत्व को बताते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति को समझना है तो हमें राम को समझना होगा। सच मानिए, बिना राम के भारत को जाना नहीं जा सकता है। राम के बिना भारत की कल्पना नहीं की जा सकती। राम एक संस्कृति हैं। साध्वी अन्नपूर्णा माता ने कहा कि श्रीराम कथा का सारांश यही है कि हमें प्रभु श्रीराम की तरह मर्यादित होकर अपने जीवन के उत्तरदायित्व को निभाना होगा। श्रीराम कथा आदर्श पथ पर चलने की प्रेरणा देती है।

महाप्रसाद की रही व्यापक व्यवस्था

कथा की संपूर्णता एवं पूर्णाहुति के बाद महा प्रसाद का आयोजन हुआ जिसमें हजारों की तादात में लोग प्रसादी ग्रहण करते हुए परम आनंद को प्राप्त हुए।आयोजक डॉ एस एस तिवारी एवं उनके कार्यकर्ता सभी श्रोता श्रद्धालुओं को महाप्रसाद पवाने में पूरे तन मन से समर्पित रहे।

व्यास पीठ से दिया आशीर्वाद

रामकथा की वक्ता मां शारदा शक्ति पीठाधीस्वरी मानस कोकिला महामंडलेश्वर साध्वी अन्नपूर्णा माता के द्वारा आए हुए सभी श्रोता श्रद्धालुओं को अपना स्नेह,आशीर्वाद अनुग्रह प्रदान किया। साध्वी अन्नपूर्णा माता ने रामकथा आयोजन के लिए डॉ एस एस तिवारी का साधुवाद किया। वहीं डॉ एस एस तिवारी ने कहा कि हम तो मात्र इस कथा के निमित्त मात्र हूं। इस पंचदिवसीय रामकथा महोत्सव को निर्विघ्न रूप से सम्पन्न होने में हमारे गुरुजन, आचार्यगण, विप्रगण, नारी शक्तियां, मित्रमंडली, परिवार, सम्बन्धीजन, कार्यकर्तागण एवं पड़ोसी समुदाय इत्यादि का विशेष योगदान रहा है। इस अवसर पर प्रमुख रूप से श्रीराम कथा के आयोजक डॉक्टर एस.एस. तिवारी एवं उनकी सहधर्मिणी तथा सम्पूर्ण परिवार, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष एवं विधायक देवतालाब गिरीश गौतम, जिला अध्यक्ष डॉ राजेंद्र मिश्रा जिला उपाध्यक्ष जयप्रकाश मिश्रा, जिला महामंत्री महेंद्र सिंह अतरैला, जिला महामंत्री सरिता सिंह पटेल, मुरलीधर द्विवेदी नईगढ़ी नगर परिषद अध्यक्ष नागिता गुप्ता, मंडल अध्यक्ष विभा शर्मा, पूर्व मंडल अध्यक्ष विजय गुप्ता रघुराजगढ़ मंडल अध्यक्ष लवकुश सिंह, तमरी मंडल अध्यक्ष नागेंद्र पटेल, विमल पांडे मिश्रा घोरहा महाराज,रामबहादुर शर्मा, सुरेंद्र सिंह चंदेल, मंडल अध्यक्ष विनोद कोल, पूर्व मंडल अध्यक्ष संजय सोनी गणमान्य नागरिक व श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही।

सोनपुल नहीं है जीबीआर के अधीन : नानीबाबू

2016 से ही जीबीआर से पृथक कर दूसरी कंपनी को दे दिया गया था निर्माण कार्य का काम

हनुमना, नि.प्र.। लगभग ढाई वर्ष से अधिक समय से क्षतिग्रस्त सीधी जिले के सोनपुल के चलते जहां हजारों यात्री प्रतिदिन परेशान हो रहे हैं वहीं हनुमना के नयागांव स्थित जीबीआर कंपनी पर भी आरोप लगाए जाते रहे हैं। इस विषय पर पत्रकारों से रुबरु होते हुए कंपनी के मैनेजर नानी बाबू ने स्पष्टीकरण देते हुए कहा कि यह बात सत्य है कि सोनपुल क्षतिग्रस्त होने से हजारों यात्री प्रतिदिन परेशान हो रहे हैं, वहीं वाहनों के कम आवागमन से हनुमना टोल नाका भी घाटे में चल रहा है लेकिन यह भी जानकारी देना आवश्यक है कि 2016 के बाद से ही सोनपुल के मेंटेनेंस एवं निर्माण का काम जीबीआर कम्पनी से अलग कर दूसरे कंपनी को कंस्ट्रक्शन का काम दे दिया गया है अर्थात 1.5 किलोमीटर की सोनपुल क्षेत्र अलग कर दिया गया है। अभी तक पुल का निर्माण क्यों नहीं कराया गया यह एमपी आरडीसी के अधिकारी या कांसट्रक्सन कम्पनी ही जाने। उपरोक्त बातें सोन नदी पर बने क्षतिग्रस्त पुल के बाद नवीन पुल के अभी तक निर्माण पूरा न होने से लगातार कंपनी पर लग रहे आरोपों का स्पष्टीकरण करते हुए मैनेजर नानीबाबू ने पत्रकारों के सामने पूछे गए सवालों का जवाब देते हुए दिया। उन्होंने यह भी बताया कि 48 किलोमीटर के कंपनी के हनुमना टोल नाके के अधीन एरिया में सड़क मेंटेनेंस का कार्य सतत जारी रहता है, एक बार पुनः मेंटेनेंस का कार्य कंपनी करने जा रही है, जिससे वाहनों के आने-जाने में किसी प्रकार के दिक्कत का सामना न करना पड़े।

कंपनी पर उठाए जा रहे थे सवाल

यहां यह भी उल्लेख करना आवश्यक है कि समाचार पत्रों में भी कई बार सोन नदी पर बने क्षतिग्रस्त पुल से ही कंपनी एवं कंपनी के टोल नाका नयागांव पर सवाल उठाए जाते रहे हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि सोनपुल जब से छतिग्रस्त हुआ है। नवीन पुलिया का निर्माण चालू है जिसके चलते हनुमना से सिंगरौली जाने के लिए लोगों को सीधी होकर जाना पड़ता है जिससे तकरीबन 50 से 60 किलोमीटर की अतिरिक्त दूरी तय करके ही वाहनों को जाना पड़ता है या फिर कितने लोग पैदल चलकर इस पार से उस पार तकरीबन 5 से 10 किलोमीटर की यात्रा जहां पूरी करते हैं वही हनुमना मार्केट में सुबह 7:00 बजे से शाम 7:00 बजे तक नो एंट्री होने से बड़े वाहन विभिन्न मार्गो से होकर निकल जाते हैं फिर चाहे वह पिपराही से उत्तर प्रदेश मार्ग हो या पटपरा हो या फिर प्रतापगंज से होकर हनुमना नेशनल हाईवे पहुंच मार्ग से बड़े वाहन निकल जाते हैं जिनसे बड़ी राशि टोल टैक्स के रूप में मिलती है जिसके चलते हनुमना टोल घाटे में भी चल रहा है।

प्रोग्रेसिव पेंशनर एसोसिएशन का जिला स्तरीय सम्मेलन आज

विधायक के मुख्य आतिथ्य में होगा कार्यक्रम

मनिकवार नि.प्र.। क्षेत्रीय विधायक प्रदीप पटेल के मुख्य आतिथ्य में आज 2 मार्च को दोपहर 2:30 बजे से हनुमना तहसील क्षेत्र के ग्राम बिरहा दुर्गा मंदिर परिसर में प्रोग्रेसिव पेंशनर्स एसोसिएशन का जिला स्तरीय सम्मेलन आयोजित किया गया है जिसमें 80 वर्ष से अधिक उम्र के पेंशनर साथियों का जहां विशेष सम्मान किया जाएगा । वहीं पेंशनरों को आने वाली विभिन्न समस्याओं को लेकर मुख्य अतिथि को ज्ञापन के माध्यम से विशेष चर्चा भी की जाएगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रोग्रेसिव पेंशनर एसोसिएशन के मऊगंज जिला अध्यक्ष कर्दम ऋषि करेंगे। उपरोक्त जानकारी जारी प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से प्रोग्रेसिव पेंशनर्स एसोसिएशन विकासखंड शाखा हनुमना के अध्यक्ष रामाश्रय मिश्रा ने देते हुए समस्त पेंशनर साथियों से अधिक से अधिक संख्या में कार्यक्रम स्थल पर समय पर उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील की है।

माइनर नहर में विभाग ने नहीं छोड़ा पानी तो किसानों ने खोल दिया फाटक

विभाग पर लगाया गुमराह करने व मनगवां विस के किसानों के साथ भेदभाव का आरोप

जागरण, रीवा। शासन प्रशासन व जल संसाधन विभाग से अनुनय-विनय के बाद भी जब नेबूहा माइनर नहर में सिंचाई के लिए पानी नहीं छोड़ा गया तो किसानों से लौआ एक्वाडक्ट के पास स्वयं ही पाठक खेल दिया गया। किसानों का कहना है कि विभाग द्वारा सीडब्ल्यूसी व मेन कैनाल में डेड बॉडी तलाशने के लिए बंद किए जाने का बहाना किया जा रहा लेकिन ऐसा नहीं था। लौवा एक्वाडक्ट से नेबूहा माइनर के लिए पानी नहीं छोड़ा जा रहा था। बताया कि एक दो फाटक ऐसे थे कि कभी खुले ही नहीं । बड़ी मुश्किल से खोला गया। किसानों ने आरोप लगाया है कि जल संसाधन विभाग द्वारा जान बूझकर नेबूहा माइनर में पानी नहीं छोड़ा जा रहा था, जिसकी वजह से एक दर्जन गावों के किसानों की गेंहू की फसल पानी नहीं पा रही थीं। पानी काफी कम मात्रा में खोला गया था जिससे नहर में पानी बहुत कम आ रहा था। पानी का दबाव न होने से टेल की बात दूर, नहर के मध्य में ही खेतों में पानी नहीं पहुंच पा रहा था। राष्ट्रीय किसान मजदूर संघ के राष्ट्रीय महामंत्री रविदत्त सिंह ने जल संसाधन विभाग पर आरोप लगाया कि रीवा व गुढ़ विधानसभा से जुड़े गावों में पानी पहुंचाने के लिए मनगवां विधानसभा क्षेत्र के गावों को सिंचाई के पानी से दूर रख जा रहा है। श्री सिंह ने कहा कि इस क्षेत्र के किसान जलकर के साथ अन्य सभी कर देते हैं, इसके बावजूद भी विभाग द्वारा सौतेला व्यवहार किया जा रहा है। श्री सिंह ने बताया कि आसपास के सैकड़ों किसान माड़ौ गांवों पहुंचे और यह निर्णय लिया कि अनुनय -विनय के बाद भी जल संसाधन विभाग हठधर्मिता कर रहा है तो स्वयं लौवा एक्वाडक्ट से फाटक खोलने का निर्णय लिया। उल्लेखनीय है कि किसानों ने नहर पानी न छोड़े जाने पर राष्ट्रीय-किसान मजदूर महासंघ के बैनर तले हाईवे जाम करने का ऐलान किया था। विभाग द्वारा पानी तो छोड़ा गया लेकिन अपर्याप्त था, लिहाजा किसानों ने ही फाटक खोल दिया।

महासंघ की मासिक बैठक भी हुई

राष्ट्रीय किसान-मजदूर महासंघ ग्राम इकाई माड़ौ विकास खण्ड सिरमौर की मासिक बैठक ग्राम इकाई अध्यक्ष नारायण सिंह की अध्यक्षता में रविदत्त सिंह राष्ट्रीय संगठन महामंत्री के मकान में सम्पन्न हुई। बैठक में प्रमुख रूप से शोभनाथ कुशवाहा महाकौशल प्रांत अध्यक्ष, नारेन्द्र सिंह सेंगर जिला अध्यक्ष, भक्त प्रह्लाद जिला अध्यक्ष रीवा, मीडिया प्रभारी विवेक पटेल जिला रीवा, संभागीय मंत्री राकेश रतन सिंह पटेल नरैनी मऊगंज, कसिहाई ग्राम इकाई अध्यक्ष वीरेन्द्र सिंह परिहार एवं आस-पड़ोस के किसान मौजूद रहे। बैठक में पदाधिकारियों ने सिंचाई के लिए बिजली पानी को लेकर चर्चाएं की गईं। इसके अलावा जिला अध्यक्ष भक्त प्रह्लाद द्वारा जीतेन्द्र सिंह तनय स्व श्रीमान पाल सिंह, पैपखरा ग्राम इकाई अध्यक्ष, दीपेश्वर सिंह तनय स्व. रणवीर सिंह उपाध्यक्ष ग्राम इकाई माड़ौ, अजीत सिंह तनय नारायण सिंह उपाध्यक्ष ग्राम इकाई, अमित सिंह तनय स्व. शीलध्वज सिंह सचिव ग्राम इकाई मौजूद रहे।

मऊगंज जिले के नगर पालिका क्षेत्र में नो एंट्री का आदेश जारी

मऊगंज ब्यूरो। मऊगंज कलेक्टर अजय श्रीवास्तव ने नगर परिषद हनुमना, मऊगंज एवं नईगढ़ी के शहरी क्षेत्र में सीमा के अंदर सभी प्रमुख मार्गों पर सुबह 6:00 से रात 10:00 बजे तक भारी वाहनों के प्रवेश पर रोक लगा दी है। पुलिस अधीक्षक, मऊगंज के पत्र क्रमांक-पुअ/मऊगंज/स्टेनो/692-ए/25, 28 फरवरी 2025 के प्रतिवेदन अनुसार नवगठित जिला मऊगंज में नगर परिषद क्षेत्र मऊगंज, नगर परिषद क्षेत्र हनुमना एवं नगर परिषद क्षेत्र नईगढ़ी अंतर्गत नेशनल हाईवे, स्टेट हाईवे तथा अन्य प्रमुख मार्गो से शहर के अंदर प्रवेश करने वाले रास्तों पर यातायात व्यवस्था को दुरस्त बनाये रखने तथा नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु ऐसे समस्त रास्तों को प्रातः 06 बजे से रात्रि 10 बजे तक के लिये भारी वाहनों को प्रवेश करने से प्रतिबंधित किया गया है। ऐसे समस्त प्रवेश बिन्दुओं पर बोर्ड लगाकर इस प्रतिबंध की जानकारी प्रदर्शित का निर्देश कलेक्टर ने दिया है। तथा उक्त आदेश का कड़ाई से पालन किये जाने का निर्देश दिया गया है।

मीटर वाचक के साथ मारपीट करने के लगे आरोप

शिकायत हनुमना थाने में दर्ज, कार्यवाही की मांग

हनुमना, नि.प्र.। बिजली विभाग पदस्थ आउटसोर्स कर्मचारी संजय सिंह चौहान पिता संदीप सिंह चौहान मीटर वाचक के पद पर पदस्थ हैं उनके द्वारा दी गयी जानकारी के अनुसार वह अपनी ड्यूटी करने के मीटर वाचन के लिए ग्राम पंचायत चरैया गए थे। उन्होंने आरोप लगाया है कि मीटर रीडिंग करते समय 12:00 बजे के लगभग उपभोक्ता दीपक तिवारी नामक व्यक्ति आया और मुझे गाली गलौज करते हुए जान से मरने तक की धमकी एवं अभद्र भाषा का प्रयोग उनके द्वारा किया गया और दीपक तिवारी द्वारा कहा गया की रीडिंग तूने ही किया है न और साथ ही साथ मुझे मारने पीटने लगे, जिससे मेरे नाक में चोट लग गई है और मैं अपनी जान बचाकर वहां से भाग निकला तब जाकर मेरी जान बची जिसकी जानकारी अपने विभाग के अधिकारियों को दिया गया एवं थाना हनुमना पहुंचकर मैंने लिखित शिकायत थाना प्रभारी हनुमना को अपने अधिकारी के साथ दे दिया गया। मुझे जटिल चोट नहीं लगी इसलिए मैंने एमएलसी नहीं कराया प्रार्थी संजय सिंह चौहान ने पुलिस अधीक्षक मऊगंज एवं थाना प्रभारी हनुमना से कार्यवाही की मांग की है।

जिले के सभी थानों में प्रारंभ की गई माईक्रोबीट प्रणाली

मऊगंज ब्यूरो। पुलिस महानिदेशक के निर्देशानुसार मऊगंज जिले के सभी थानों में माइक्रोबीट सिस्टम लागू किया गया है जिसके तहत जिला मऊगंज अन्तर्गत आने वाले समस्त थाना के क्षेत्रों को अलग-अलग बीट में विभाजित कर बीट प्रभारी नियुक्त किये गये है एवं उनके सहायतार्थ प्र.आर. /आरक्षक तैनात किये गये हैं। प्रत्येक बीट में निर्धारित किये गये ग्राम/कस्बा क्षेत्र में घटित होने वाली किसी भी प्रकार की घटना, समंस वारंट तामीली, शिकायत, जन सुनवाई, सीएम हेल्पलाइन, आरोपियों की पता साजी, संदिग्ध गतिविधियाँ, अवैध मादक पदार्थ नशीली दवाओं आदि के क्रय-विक्रय पर प्रतिबन्ध एवं अन्य समस्त अवैधानिक गतिविधियों पर नियंत्रण का संपूर्ण दायित्व बीट प्रभारी एवं उसकी टीम का रहेगा। अपराधों के नियत्रण के लिये इस पारंपरिक व्यवस्था को लागू करने हेतु पुलिस महा निदेशक म.प्र. भोपाल की विशेष पहल पर यह व्यवस्था 01 मार्च 2025 से मऊगंज जिले में भी लागू की गई है। इस व्यवस्था के पर्यवेक्षण का दायित्व अनुविभागीय अधिकारी पुलिस एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मऊगंज का होगा।

भारतीय जनता पार्टी मंडल अतरैला में समर्पण निधि का लक्ष्य हुआ पूरा

समर्पण निधि कार्यकर्ताओं में समर्पण भाव जागरण का एक अनुष्ठान है : सालिक राम

अतरैला नि.प्र.। भारतीय जनता पार्टी द्वारा पूरे प्रदेश में समर्पण निधि का अभियान चलाया जा रहा है। जिसने पूरे जिले सहित मंडलों में भी पार्टी के निष्ठावान कार्यकर्ताओं एवं मंडल अध्यक्षों द्वारा समर्पण निधि का काम किया जा रहा है। जिसने समर्पण निधि अभियान में अतरैला मंडल के मंडल अध्यक्ष सालिक राम साहू के नेतृत्व में समर्पण निधि अभियान के लक्ष्य को सफलता पूर्वक पूरा कर लिया गया है। जिसमे मंडल सालिक राम साहू के द्वारा कहा गया कि यह समर्पण निधि एक मात्र धन संग्रह नहीं है, बल्कि भारतीय जनता पार्टी के एक, एक कार्यकर्ताओं के द्वारा किया जाने वाला अनुष्ठान है। जिसमें सभी कार्यकर्ता समर्पण भाव से भाग लेना चाहते है। जिससे संगठन के प्रति मजबूती और विकास कार्यों के प्रति समर्पित होना चाहता है। इस अभियान को कार्यकर्ताओं की निष्ठा और समर्पण का प्रतीक माना जाता है। जिसके प्रति कार्यकर्ताओं ने पार्टी की विचारधारा और संगठन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया है। इस समर्पण निधि अभियान में सहयोग देने वाले सभी समर्पित कार्यकर्ताओं को मंडल अध्यक्ष अतरैला सालिक राम साहू के द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया है और भविष्य में इसी प्रकार सहयोग की कामना की है।

न्यूजीलैंड के खिलाफ स्पिन को बेहतर खेलने पर रहेगा भारत का फोकस

दोनों कीवी स्पिनर सेंटनर और ब्रेसवेल अच्छे फॉर्म में

मैच का प्रसारण दोपहर 2.30 से स्टार स्पोर्ट्स पर

हेड टू हेड

कुल मैच	118
भारत जीता	60
न्यूजीलैंड जीता	50
ड्रा मैच	07
टाई	01

दुबई, जेएनएन। अब तक अपराजेय भारतीय टीम का फोकस स्पिन को बेहतर खेलने पर होगा और न्यूजीलैंड के खिलाफ चैम्पियंस ट्रॉफी के आखिरी ग्रुप मैच में रविवार को उन खिलाड़ियों को मौका मिल सकता है जो अब तक बाहर बैठे हैं। आखिरी ग्रुप मैच जीतने से भारत ग्रुप ए में शीर्ष पर रहेगा। अब सेमीफाइनल में भारत का सामना दक्षिण अफ्रीका या आस्ट्रेलिया से होगा और दोनों के पास बेहतरीन स्पिनर हैं। भारत ने दोनों मैच जीते हैं लेकिन स्पिनरों ने भारतीयों को परेशान किया है और सेमीफाइनल के लिये क्वालीफाई कर चुकी न्यूजीलैंड टीम इसका फायदा उठा सकती है।

भारत के स्टार बल्लेबाजों ने बांग्लादेश के स्पिनरों मेहदी हसन मिराज और रिशाद हुसैन के खिलाफ जोखिम लेने से बचने की रणनीति अपनाई। यही तरीका उन्होंने पाकिस्तान के स्पिनर अबरार अहमद के खिलाफ भी अपनाया और ये तीनों गेंदबाज काफी किफायती साबित हुए। अब उनके सामने मिचेल सेंटनेर और माइकल ब्रेसवेल की चुनौती होगी जो इस टूर्नामेंट में स्पिन के सामने सबसे कठिन परीक्षा भी रहेगी। दोनों कीवी स्पिनर अच्छे फॉर्म में हैं और दुबई की पिच पर और प्रभावी साबित हो सकते हैं। भारतीय बल्लेबाज स्पिनरों को इक्के दुक्के रन लेकर बड़े शॉट तेज गेंदबाजों के खिलाफ खेलते आये हैं। लेकिन अब उन्हें 20 ओवर सेंटनेर और ब्रेसवेल का सामना करना है जबकि ग्लेन फिलिप्स भी अनियमित स्पिन गेंदबाज हैं। पिछले साल के आखिर में घरेलू टेस्ट श्रृंखला में सेंटनेर और फिलिप्स के खिलाफ भारत का अनुभव अच्छा नहीं रहा है।

भारत को उसमें 0.3 से पराजय झेलनी पड़ी थी और अब यहां इन दोनों के साथ ब्रेसवेल भी हैं जिन्होंने अब तक दो मैचों में 3.2 की औसत से ही रन दिये हैं। ऐसे में फॉर्म में चल रहे शुभमन गिल, पाकिस्तान के खिलाफ नाबाद शतक जमाने वाले विराट कोहली, श्रेयस अय्यर और केएल राहुल को प्रभावी प्रदर्शन करना होगा।

भारत : रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल , विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, केएल राहुल , हार्दिक पंड्या, अक्षर पटेल, वाशिंगटन सुंदर, कुलदीप यादव, मोहम्मद शमी, अर्शदीप सिंह, हर्षित राणा, ऋषभ पंत , रविंद्र जड़ेजा, वरुण चक्रवर्ती।

न्यूजीलैंड : मिशेल सेंटनर (कप्तान), माइकल ब्रेसवेल, मार्क चैपमैन, डेवोन कॉनवे, लॉकी फर्ग्यूसन, मैट हेनरी, टॉम लैथम, डेरिल मिशेल, विल ओ'रूर्के, ग्लेन फिलिप्स, रचिन रवींद्र, नाथन स्मिथ, केन विलियमसन, विल यंग, जैकब डफी।

भारत-न्यूजीलैंड भिड़ंत में टीम इंडिया का पलड़ा है भारी

नई दिल्ली, जेएनएन। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 अपने आखिरी पड़ाव पर है। भारत और न्यूजीलैंड के बीच रविवार को दुबई के मैदान पर टूर्नामेंट का आखिर लीग मैच खेला जाएगा। ग्रुप-ए का हिस्सा दोनों टीमें सेमीफाइनल में पहुंच चुकी हैं। रोहित शर्मा के नेतृत्व वाली भारतीय टीम और न्यूजीलैंड ने अभी तक दोनों मैचों (पाकिस्तान और बांग्लादेश के खिलाफ) में विजयी परचम फहराने के बाद चार-चार अंक बटोरे हैं। अब दुबई में जो भी टीम जीत दर्ज करेगी, वो ग्रुप में शीर्ष पर रहेगी। न्यूजीलैंड की बागडोर मिशेल सैंटनर संभाल रहे।

यूएई में 27 साल बाद दोनों के मैच

चैंपियंस ट्रॉफी 2025 की मेजबानी पाकिस्तान के पास है लेकिन भारत हाइब्रिड मॉडल के तहत अपने सभी मैच संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के दुबई में खेल रहा है। भारत और न्यूजीलैंड की टीमें 27 साल बाद यूएई की सरजमीं पर वनडे में टकराएंगी।

चैंपियंस ट्राफी में 2000 में हुई थी भिड़ंत

चैंपियंस ट्रॉफी इतिहास में भारत और न्यूजीलैंड की केवल एक बार भिड़ंत हुई है। दोनों ने साल 2000 में चैंपियंस ट्रॉफी का फाइनल मुकाबला खेला था। भारत को नैरोबी में आयोजित फाइनल में न्यूजीलैंड के हाथों चार विकेट से हार का मुंह देखना पड़ा।

विराट कोहली नया इतिहास रचने की दहलीज पर

नई दिल्ली, जेएनएन। भारत और न्यूजीलैंड की रविवार को चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में दुबई के मैदान पर टक्कर होगी। विराट कोहली न्यूजीलैंड के खिलाफ मुकाबले में सचिन तेंदुलकर का धांसू रिकॉर्ड तोड़ सकते हैं। भारत के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली नया इतिहास रचने की दहलीज पर हैं। दरअसल, कोहली इंडिया वर्सेस न्यूजीलैंड वनडे मैचों में सचिन तेंदुलकर को पछाड़कर सबसे ज्यादा रन बनाने वाले प्लेयर बन सकते हैं। कोहली के खाते में फिलहाल न्यूजीलैंड के खिलाफ 31 वनडे मैचों में 58.75 की औसत से 1645 रन हैं। उन्होंने इस दौरान 6 शतक और 9 अर्धशतक जमाए। कोहली को दुबई में सचिन रिकॉर्ड तोड़ने के लिए 105 रनों की जरूरत है। महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर ने इंडिया वर्सेस न्यूजीलैंड वनडे मैचों में सर्वाधिक 1750 रन बनाए। उन्होंने न्यूजीलैंड के विरुद्ध 42 वनडे मुकाबले खेले, जिसमें 46.05 का औसत रहा। सचिन ने कीवियों के सामने 5 शतक और 8 अर्धशतक लगाए। लिस्ट में तीसरे नंबर पर रॉस टेलर हैं।

सर्वाधिक रन बनाने वाले खिलाड़ी

खिलाड़ी	मैच	रन	शतक	अर्धशतक
सचिन तेंदुलकर	42	1750	5	8
विराट कोहली	31	1645	6	9
रोस टेलर	35	1385	3	8
नाथन एस्टल	29	1207	5	5
वीरेन्द्र सहवाग	23	1157	6	3

मैदान से हटकर

ग्राउंड से पानी हटाते हुए धड़ाम से गिरा मैदान कर्मी

चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में शुक्रवार को बारिश होने के कारण ऑस्ट्रेलिया वर्सेस अफगानिस्तान मैच रद्द हो गया। ये तीसरा मौका है, जब टूर्नामेंट में बारिश के कारण मैच रद्द हुआ है। बारिश के कारण गीली आउटफील्ड को सुखाने के लिए अलग-अलग तरीकों का इस्तेमाल किया जाना कोई नई बात नहीं है। क्रिकेट के मैदान पर गीली आउटफील्ड को सूखाने के लिए हेयर ड्रायर, फैन और अन्य चीजों का इस्तेमाल करते हुए देखा जा चुका है। शुक्रवार को लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम के ग्राउंडस्टाफ ने कवर से पानी साफ करने के लिए बड़े मोपर्स का इस्तेमाल किया। हालांकि इस दौरान ग्राउंडस्टाफ जमीन पर गिर गए। पिच के आस-पास की जगह को बारिश आने के बाद कवर कर दिया गया था। लेकिन कवर हटने के बाद उसके आस-पास पानी जमा हो गया था, जिसे हटाने के लिए ग्राउंडस्टाफ ने काफी प्रयास किए। इस दौरान मैदानकर्मियों ने मोपर्स का भी इस्तेमाल किया। हालांकि इस दौरान एक मैदानकर्मी ग्राउंड पर फिसलकर गिर गया। इस दौरान कैमरा ग्राउंडस्टाफ पर ही था। (जेएनएन)

दक्षिण अफ्रीका की धमाकेदार जीत इंग्लैंड टीम की चैंपियंस ट्रॉफी से विदाई

कराची, जेएनएन। साउथ अफ्रीका ने चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया है। टीम ने शनिवार को ग्रुप-बी के आखिरी मुकाबले में इंग्लैंड को 7 विकेट से हराया। कराची के नेशनल स्टेडियम में इंग्लैंड ने टॉस जीतकर बैटिंग करने का फैसला लिया। टीम 38.2 ओवर में 179 रन पर ऑलआउट हो गई। रूट ने सबसे ज्यादा 37 रन बनाए। वहीं, जोस बटलर ने 21 और जोफ्रा आर्चर ने 25 रन का योगदान दिया। मार्को यानसन और वायन मुल्डर ने 3-3 विकेट लिए। इस तरह इंग्लैंड को एक बार फिर हार का सामना करना पड़ा है। इस बार दक्षिण अफ्रीका ने इंग्लैंड को सात विकेट से हराया। इस तरह 2025 चैंपियंस ट्रॉफी में इंग्लैंड की जीत का खाता नहीं खुल सका। टूर्नामेंट के अपने आखिरी लीग मैच में इंग्लैंड की टीम पहले खेलने के बाद सिर्फ 179 रन बना सकी थी। दक्षिण अफ्रीका ने इस मामूली से लक्ष्य को 29.1 ओवर में सिर्फ तीन विकेट खोकर आसानी से जीत लिया। दक्षिण अफ्रीका ने इस धमाकेदार जीत के साथ ग्रुप-बी में पहला स्थान हासिल कर लिया है। दक्षिण अफ्रीका की इस जीत में चार खिलाड़ियों को अहम योगदान रहा। पहले मार्को यानसेन और वियान मुल्डर ने गेंदबाजी से कहर ढाया। फिर रासी वान डर डुसेन और हेनरिक क्लासेन ने बैटिंग से धमाल मचाया। यानसेन और मुल्डर ने तीन-तीन विकेट झटके। वहीं वान डर डुसेन ने नाबाद 72 और क्लासेन ने 64 रनों की पारी खेली। इंग्लैंड से मिले 180 रनों के लक्ष्य को दक्षिण अफ्रीका ने सिर्फ 29.1 ओवर में हासिल कर लिया। 180 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए दक्षिण अफ्रीका ने पहला विकेट जल्दी गंवा दिया था। ट्रस्टन स्टब्स ओपनिंग करते हुए शून्य पर आउट हो गए। हालांकि, रियान रिकल्टन ने अपने नेचुरल अंदाज में खेलना जारी रखा। उन्होंने 25 गेंद में पांच चौकों की मदद से 27 रनों की पारी खेली। 47 रनों पर दो विकेट गिर गए थे। फिर रासी वान डर डुसेन और हेनरिक क्लासेन ने 127 रनों की साझेदारी कर अपनी टीम की जीत पक्की कर दी। इस तरह इंग्लैंड की टीम 2025 चैंपियंस ट्रॉफी में जीत का खाता नहीं खोल सकी। इंग्लैंड को अपने तीनों मैचों में हार का सामना करना पड़ा।

72 रन बनाकर वान डर डुसेन नाबाद लौटे। उन्होंने 87 गेंदों का सामना किया। उनके बल्ले से 6 चौके और 3 छक्के निकले। वहीं क्लासेन ने सिर्फ 56 गेंद में 11 चौकों की मदद से 64 रनों की ताबड़तोड़ पारी खेली। अंत में डेविड मिलर ने छक्का लगाकर टीम को जीत दिलाई। वह दो गेंद में सात रनों पर नाबाद रहे।

रणजी ट्रॉफी फाइनल

नायर की शतकीय पारी से केरल के खिलाफ विदर्भ की स्थिति मजबूत

नागपुर, जेएनएन। शानदार लय में चल रहे करुण नायर की मौजूदा रणजी सत्र में चौथी शतकीय पारी से विदर्भ ने केरल के खिलाफ खिताबी मुकाबले के चौथे दिन शनिवार को यहां अपनी दूसरी पारी में तीन विकेट पर 189 रन बना कर अपनी स्थिति काफी मजबूत कर ली है। अपने तीसरे रणजी खिताब की ओर बढ़ रहे विदर्भ ने पहली पारी में 37 रन की बढ़त हासिल की थी जिससे उसकी कुल बढ़त 226 रन की हो गयी है। चाय के विश्राम के लिए खेल रोको जाते समय नायर 187 गेंद में 100 रन बनाकर क्रीज पर मौजूद थे। उन्होंने तीसरे विकेट के लिए दानिश मालेवर के साथ 182 रन की बड़ी साझेदारी कर मैच पर विदर्भ का दबदबा कायम किया। मालेवर ने 161 गेंद में पांच चौके की मदद से 73 रन बनाये। विदर्भ की टीम अपनी दूसरी पारी में सात रन पर दो विकेट गंवा कर मुश्किल में थे लेकिन नायर और मालेवर ने धैर्य और एकाग्रता से बल्लेबाजी करते हुए उसे मजबूत स्थिति में पहुंचाया। अक्षय चंद्रन ने मालेवर को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। इससे पहले अनुभवी स्पिनर जलज सक्सेना ने पहली ही गेंद पर पार्थ रेखाडे (एक) को आउट किया। वहीं मध्यम तेज गेंदबाज एम डी निधीश ने ध्रुव शोरे (पांच) को अगले ओवर में पवेलियन भेजा।

'फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल' को समर्थन देंगे ओलंपियन नीरज

नयी दिल्ली, जेएनएन। दो बार के ओलंपिक पदक विजेता नीरज चोपड़ा ने शनिवार को सरकार के 'फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल' अभियान को समर्थन देने का संकल्प लिया और कहा कि इस पहल से लोगों को सिर्फ अपनी फिटनेस सुधारने में ही मदद नहीं मिलेगी बल्कि वे प्रदूषण को नियंत्रित करने में भी योगदान करेंगे। भाला फेंक सुपरस्टार ने लोगों से हर रविवार को समय निकालकर इस पहल में शामिल होने का आग्रह किया। चोपड़ा ने मंत्रालय की एक विज्ञप्ति में कहा, नमस्ते 'फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल' अपनी फिटनेस सुधारने और प्रदूषण को नियंत्रित करने में योगदान देने का एक शानदार तरीका है। इसलिए मैं आपसे कहना चाहूंगा कि अगर आप हर दिन समय नहीं निकाल पा रहे हैं तो कृपया हर रविवार को साइकिल चलाएं। साइकिलिंग अभियान की शुरुआत पिछले साल 17 दिसंबर को खेल मंत्री मनसुख मंडाविया ने 'फिटनेस का डोज, आधा घंटा रोज' और प्रदूषण का समाधान खोजने के समग्र उद्देश्य के साथ की थी।

अगले मैच में नहीं खेलेंगे रोहित और शुभमन गिल?

नई दिल्ली, जेएनएन। चैंपियंस ट्रॉफी में भारतीय टीम की अजेय बढ़त जारी है। दो मैचों में लगातार जीत दर्ज कर टीम इंडिया ने सेमीफाइनल में एंट्री कर ली है। वहीं, भारतीय टीम का अगला मुकाबला न्यूजीलैंड से है। हालांकि न्यूजीलैंड की भी सेमीफाइनल में एंट्री तय मानी जा रही है। हालांकि दोनों देशों के लिए अगला मैच बेहद अहम होने वाला है। लेकिन मैच से एक दिन पहले टीम इंडिया के लिए चिंताजनक खबर सामने आ रही है। दरअसल दो दिन पहले ये खबर आई थी टीम इंडिया के दोनों ओपनर रोहित शर्मा और शुमन गिल फिट नहीं हैं। वहीं, अब खबर आ रही है कि न्यूजीलैंड के खिलाफ होने वाले मैच में दोनों को आराम दिया जा सकता है। बात करें कप्तान रोहित शर्मा की तो पाकिस्तान के खिलाफ मैच के दौरान उन्हें हेमस्टिंग इंजरी आई थी।

शमी हो सकते हैं बाहर

नई दिल्ली, जेएनएन। भारतीय टीम प्रबंधन रविवार को न्यूजीलैंड के खिलाफ चैंपियंस ट्रॉफी के मैच में मोहम्मद शमी की जगह अर्शदीप सिंह को मौका दे सकता है। न्यूजीलैंड की टीम में पांच बाएं बल्लेबाजों की मौजूदगी और पाकिस्तान के खिलाफ मोहम्मद शमी को आई हल्की चोट के कारण टीम मैनेजमेंट ये फैसला कर सकता है।

पंत के लिये टीम से बाहर रहना काफी कठिन है : डोइशे

दुबई, जेएनएन। भारत के सहायक कोच रियान टेन डोइशे ने कहा कि स्टार विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत के लिये चैम्पियंस ट्रॉफी मैच बाहर से देखना कठिन है लेकिन इस स्तर पर खेल की यही प्रकृति है। पिछले दो ग्रुप मैचों में पंत अंतिम एकादश से बाहर रहे हैं जबकि केएल राहुल ने विकेटकीपिंग की है। उन्होंने मध्यक्रम में अच्छी बल्लेबाजी के साथ विकेट के पीछे भी अपने काम को बखूबी अंजाम दिया । डोइशे ने शुक्रवार को पत्रकारों से कहा ऋषभ के लिये बाहर रहना काफी कठिन रहा है। लेकिन इस स्तर पर खेल का यही स्वभाव है। उन्होंने कहा केएल का प्रदर्शन अच्छा रहा है।

खेल एक नजर

प्राग मास्टर्स में प्रज्ञानानंदा ने पहली जीत दर्ज की, अरविंद को एकल बढ़त हासिल

प्राग, जेएनएन। भारतीय ग्रैंडमास्टर आर प्रज्ञानानंदा ने चेक गणराज्य के एनगुयेन थाई डाई वान के खिलाफ आसान जीत दर्ज की जबकि हमवतन अरविंद चितंबरम ने प्राग मास्टर्स के तीसरे दौर में चीन के शीर्ष वरीय वेई यी को हराकर एकल बढ़त हासिल की। टूर्नामेंट के प्रबल दावेदारों में से एक प्रज्ञानानंदा ने 14वीं चाल में यह प्रभावशाली जीत दर्ज की। पहले दो दौर में दो ड्रॉ खेलने के बाद उनके लिए यह जीत अहम रही। उन्होंने अपने प्रदर्शन के बारे में कहा, कल (दूसरा दौर) कुछ खास नहीं था। पहले दौर में मेरी स्थिति अच्छी थी। प्रज्ञानानंदा की यह पहली जीत रही जबकि हमवतन अरविंद चिथमबरम लाइव रेटिंग में दुनिया के शीर्ष 20 खिलाड़ियों में प्रवेश करने के बाद पहली बार एलीट टूर्नामेंट में खेल रहे हैं। अरविंद के इस जीत से तीन में से 2.5 अंक हो गए। वहीं अमेरिका के सैम शंकलैंड को जर्मनी के विंसेंट कीमर से हार मिली। प्रज्ञानानंदा और कीमर दो दो अंक लेकर संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर हैं। वियतनाम के क्वांग लीम ले, चेक गणराज्य के डेविड नवारा, हॉलैंड के अनीश गिरी और शंकलैंड संयुक्त रूप से चौथे स्थान पर हैं, ये डाई वान और तुर्किये के गुरेल एडिज से आधा अंक आगे हैं। शीर्ष वरीय वेई यी 10 खिलाड़ियों की तालिका में सबसे निचले स्थान पर हैं। राउंड-रॉबिन टूर्नामेंट में अभी छह दौर बाकी हैं। साथ ही खेले जा रहे चैलेंजर्स वर्ग में दिव्या देशमुख को तीन दिन में दूसरी हार का सामना करना पड़ा। उन्हें उज्बेकिस्तान की नोडिरबेक याकूबबोव से हार मिली।

आस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका भारत के खिलाफ सेमीफाइनल खेलें या न खेलें दुबई तो पहुंचना ही पड़ेगा

दोनों टीमों के सामने यात्रा की चुनौती

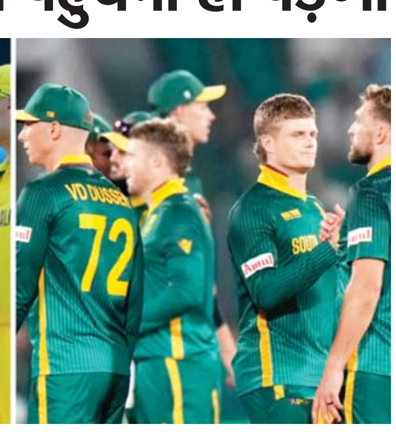

दुबई, जेएनएन। ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका की क्रिकेट टीमें चैंपियंस ट्रॉफी के अंतिम चार मैच से पहले दुबई के लिए उड़ान भरेंगी लेकिन अभी यह तय नहीं है कि उनका सेमीफाइनल दुबई में होगा या पाकिस्तान में। चैंपियंस ट्रॉफी का पहला सेमीफाइनल चार मार्च (मंगलवार) को खेला जायेगा जबकि लाहौर बुधवार को दूसरे सेमीफाइनल की मेजबानी करेगा। चैंपियंस ट्रॉफी के पहले सेमीफाइनल में भारत की मौजूदगी तय है लेकिन रोहित शर्मा की टीम के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका में से किसका सामना होगा इसका पता रविवार को भारत और न्यूजीलैंड के बीच ग्रुप ए के आखिरी मैच के नतीजे पर निर्भर करेगा। पाकिस्तान में सुरक्षा चिंताओं के कारण भारत अपने सभी मैच दुबई में खेल रहा है। ग्रुप ए में दूसरे स्थान पर रहने वाली टीम ग्रुप बी में शीर्ष स्थान पर रहने वाली टीम से भिड़ेगी। भारत अपना नॉकआउट मैच मंगलवार को दुबई में खेलेगा चाहे वह ग्रुप ए में पहले स्थान पर रहे या दूसरे स्थान पर। दूसरे सेमीफाइनल के लिए कौन सी टीम लाहौर लौटेगी, इसका पता चलने से पहले ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका दोनों को दुबई जाना होगा और रविवार के मैच के नतीजे का इंतजार करना होगा। बीबीसी ने शनिवार को लिखा, ग्रुप बी का समापन शनिवार को इंग्लैंड के खिलाफ दक्षिण अफ्रीका के मैच के साथ होगा लेकिन रविवार को न्यूजीलैंड के खिलाफ भारत के मैच के समापन तक दक्षिण अफ्रीका या ऑस्ट्रेलिया में से किसी को भी अपने सेमीफाइनल के स्थान के बारे में पता नहीं चलेगा। उन्हें (ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका) अपने मैच के बारे में जानने के लिए सोमवार तक इंतजार करना होता और अगर वे कार्यक्रम की पुष्टि होने पर यात्रा करते है तो इससे दुबई में अभ्यास का मौका नहीं मिलेगा।

प्रज्ञानानंदा ने शीर्ष 10 में वापसी की

डी गुकेश अपने करियर के सर्वश्रेष्ठ तीसरी रैंकिंग पर

नयी दिल्ली, जेएनएन। मौजूदा विश्व चैंपियन भारत के डी गुकेश फिडे की शनिवार को जारी नवीनतम क्लासिकल रेटिंग में अपने करियर की सर्वश्रेष्ठ तीसरी रैंकिंग पर पहुंच गए, जबकि हमवतन आर प्रज्ञानानंदा फिर से शीर्ष 10 में वापसी करने में सफल रहे। गुकेश दिसंबर में सिंगापुर में चीन के डिंग लिरेन को हराकर विश्व खिताब जीतने के बाद से शानदार फॉर्म में चल रहे हैं। 18 साल के इस खिलाड़ी ने इस दौरान 10 रेटिंग अंक हासिल किए हैं। अब उनके नाम कुल 2787 रेटिंग अंक हो गये हैं। गुकेश हाल ही में विज्क आन जी में टाटा स्टील मास्टर्स को टाईब्रेक में प्रज्ञानानंदा से हार गए थे। वह रैंकिंग में दूसरे स्थान पर काबिज हिकारू नाकामुरा (2802) से 15 अंक पीछे हैं। नॉर्वे के मैग्नस कार्लसन (2833) दुनिया में शीर्ष रैंकिंग के शतरंज खिलाड़ी बने हुए हैं। गुकेश ने इस रैंकिंग में हमवतन अर्जुन एरिगैसी और अमेरिका के फैबियानो कारूआना को पीछे छोड़ दिया है। एरिगैसी इससे पहले लंबे समय तक शीर्ष रैंक वाले भारतीय थे। वह 2777 की रेटिंग के साथ पांचवें स्थान पर खिसक गए हैं। प्रज्ञानानंद टाटा स्टील मास्टर्स में जीत से पिछले साल जुलाई के बाद पहली बार शीर्ष 10 में वापसी करने में सफल रहे।

दैनिक जागरण
रीवा, 02 मार्च 2025
रीवा शहर
www.dainikjagranmpcg.com

उप मुख्यमंत्री आज बसामन मामा में निर्माण कार्यों की करेंगे समीक्षा

रीवा। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल दो मार्च को प्रातः 9 बजे गौवंश वन्य विहार में आयोजित बैठक में गौ वन्य विहार की विभिन्न गतिविधियों तथा निर्माण कार्यों की समीक्षा करेंगे। उप मुख्यमंत्री प्रातः 10.30 बजे कार द्वारा प्रस्थान कर प्रातः 11.15 बजे निज निवास रीवा पहुंचेंगे।

तनाव प्रबंधन के लिए ऑनलाइन प्रशिक्षण 11 मार्च को

रीवा। प्रशासनिक अधिकारियों को तनाव प्रबंधन तथा समस्याओं के समाधान के संबंध में ब्रम्हकुमारी संस्थान द्वारा 11 मार्च को ऑनलाइन प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण सुबह 10 बजे से 11 बजे तक आयोजित किया जा रहा है। संस्थान के मुख्यालय माउंट आबू राजस्थान से राजयोगी शिक्षक बीके सूरज तनाव प्रबंधन तथा समस्याओं के सम्पूर्ण समाधान के संबंध में प्रशिक्षण देंगे।

सुपर और एसजीएमएच में सुविधाओं का लगने वाला है डबल तड़का

सुपर स्पेशलिटी में MRI तो एसजीएमएच में लग रही CT स्कैन

मरीजों को मिलेगी बड़ी राहत, जांच होगी सस्ती, आउटसोर्स से मिलेगी मुक्ति

जागरण, रीवा। सुपर स्पेशलिटी और संजय गांधी अस्पताल में सुविधाओं का डबल तड़का लगने वाला है। मरीजों को बड़ी राहत देने की तैयारी है। दो बड़ी और महंगी मशीनें लगने जा रही हैं। एक मशीन आ चुकी है और दूसरे की नापजोख शुरू हो गई है। यह दोनों मशीनें मरीजों की जांच और बीमारियों की तलाश को काफी आसान कर देंगी। अभी इन्हीं जांचों के लिए मरीजों को महंगी कीमत चुकानी पड़ती थी। अब सस्ती दर पर आसानी से जांच हो जाएंगी।

मेडिकल हब की दिशा में रीवा में हर संभव सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है। रीवा के संजय गांधी अस्पताल और सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में आने वाले समय में कोई ऐसी मशीन शेष नहीं रह जाएगी जिसकी कमी से जांच प्रभावित होगी, या फिर मरीजों को इनकी कमी के कारण बाहर जांच कराने जाना पड़ेगा। संजय गांधी अस्पताल में सीटी स्कैन मशीन के स्थापना की अड़चनें दूर हो गई हैं। अभी तक संजय गांधी अस्पताल में सीटी स्कैन मशीन नहीं थी। सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में सीटी स्कैन मशीन थी लेकिन एमआरआई नहीं थी। अब दोनों ही जगहों की मशीन वाली समस्या खत्म होने जा रही है। आउटसोर्स कंपनी के भरोसे चल रहे मरीजों को अब राहत मिलेगी। उन्हें महंगी दरों पर जांच से गुजरना नहीं पड़ेगा।

8 करोड़ की लागत से लग रही सीटी स्कैन मशीन : संजय गांधी अस्पताल में जल्द ही सीटी स्कैन मशीन इंस्टाल की जाएगी। मशीन की खरीदी की स्वीकृति भोपाल से पहले ही मिल गई थी। 8 करोड़ स्वीकृत किया गया था। इस राशि का भुगतान पीजी सीट उन्नयन मद से किया गया है। स्वीकृति मिलने के बाद श्याम शाह मेडिकल कॉलेज डीन कार्यालय से मुम्बई की कंपनी को ऑनलाइन ऑर्डर भी कर दिया गया है। 7 करोड़ 99 लाख से सीटी स्कैन मशीन आ रही है। मुम्बई की अर्बल्स इंजीनियरिंग मशीन की सप्लाई कर रही है। यह मशीन एक्वालियन प्राइम एसपी/टीएसएस 3038मॉडल है और कैनन कंपनी की है। ऑर्डर के बाद मशीन को इंस्टाल करने की भी तैयारियां शुरू हो गई हैं। रेडियोलॉजी हॉल में ही इसे भी इंस्टाल किया जाएगा।

8 करोड़ की लागत से एमआरआई मशीन पहुंची : सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में एमआरआई मशीन लगाई जा रही है। सीटी स्कैन के पास ही इसके इंस्टालेशन की प्रक्रिया शुरू हो गई है। कंपनी के इंजीनियर भी पहुंच गए हैं। कक्ष और बेस बनाने का काम जारी है। एमआरआई के कुछ पार्ट पहुंच भी गए हैं। कुछ हिस्सा शेष है। जल्द ही वह भी पहुंच जाएगा। सूत्रों की मानें तो अप्रैल तक इस मशीन को इंस्टाल करने के साथ ही इसका शुभारंभ भी कर दिया जाएगा।

पुरानी सीटी स्कैन की जगह होगी स्थापित

संजय गांधी अस्पताल के रेडियोलॉजी विभाग में कई साल पहले एक सीटी स्कैन मशीन स्थापित की गई थी। सोनोग्राफी जांच सेंटर के बगल में और एचओडी ऑफिस के सामने पुरानी सीटी स्कैन मशीन स्थापित है। यह कई सालों से उपयोग में नहीं आई। यह मशीन स्थापित होने के एक साल तक ही चली। इसके बाद यह ठप पड़ गई थी। इसी जगह पर नई सीटी स्कैन मशीन स्थापित करने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। पुरानी मशीन को हटाकर नई मशीन लगाई जाएगी। नापजोख का काम पूरा हो गया है।

हत्या के विरोध में 4 घण्टे सड़क पर शव रखकर किया प्रदर्शन

मनिकवार में वृद्ध को धारदार हथियार से आरोपियों ने उतारा था मौत के घाट

जागरण, रीवा। मनगवां थाना क्षेत्र के रघुनाथगंज चौकी अंतर्गत मनिकवार नंबर 2 में गुरुवार की रात हुई वृद्ध की हत्या के मामले में आरोपियों की गिरफ्तारी और परिवार की सुरक्षा की मांग को लेकर ग्रामीणों ने शनिवार को मनिकवार-मिसिरगवां मार्ग पर शव रखकर चकाजाम कर दिया। करीब 4 घंण्टे से अधिक समय तक ट्रैक्टर में शव रखकर परिजन प्रदर्शन किए। इस दौरान भारी पुलिस बल भी मौजूद रहा। मनगवां एसडीओपी, थाना प्रभारी सहित आसपास के थानों का पुलिस बल तनाव को शांत कराने में जुटा रहा और आक्रोशित लोगों को समझाइश देने का प्रयास किया गया। दरअसल गुरुवार की रात्रि खेत में सिंचाई करने गए हीरामणि वर्मा उम्र 65 वर्ष की हत्या धारदार हथियार से कर दी गई थी। बताया गया कि मृतक अपने बहू की हत्या का चश्मदीद गवाह था। परिजनों का आरोप है कि हत्या की वारदात को अंजाम देने वाले आरोपियों के परिजन और फरार आरोपी लगातार हीरामणि पर केस वापस लेने की धमकी दे रहे थे इसको लेकर कई बार विवाद भी हुआ, जिसकी सूचना संबंधित थाने को दी गई थी, लेकिन पुलिस द्वारा किसी भी प्रकार की कार्रवाई आरोपियों पर नहीं की गई। इसी बीच हीरामणि की भी हत्या कर दी गई। परिजनों का आरोप है की वारदात को उन्हीं लोगों ने अंजाम दिया है जिन्होंने एक वर्ष पूर्व हीरामणि की बहू की हत्या और उसके बेटे पर प्राणघातक हमला किया था। पुलिस ने मामले में 4 आरोपियों को गिरफ्तार कर पूरी घटना का खुलासा कर दिया है। घटना का विरोध करते हुए ग्रामीण सहित परिजन मृतक के शव को ट्रैक्टर में लेकर ग्रामीणों के साथ मनगवां के समीप नेशनल हाईवे पर जाम करने जा रहे थे। इसी दौरान पुलिस ने उन्हें रास्ते पर ही रोक लिया, जहां भारी भीड़ के बीच परिजनों को समझाइश दी जिसके काफी देर बाद परिजन मानने को तैयार हुए। परिजनों ने सभी आरोपियों की शीघ्र गिरफ्तारी के साथ परिवार को सुरक्षा दिलाए जाने की मांग की है।

ये आरोपी गिरफ्तार : हीरामणि हत्याकांड मामले में मनगवां पुलिस ने ने आरोपी धीरज दुबे उर्फ भइया पिता राजकिशोर दुबे उम्र 31 वर्ष, बाबूलाल (मुड़हा) वर्मा पिता रमई वर्मा 65 वर्ष, सत्य प्रकाश दुबे उर्फ पिन्टू दुबे पिता मोतीलाल दुबे 31 वर्ष व अशोक कुमार दुबे पिता गणेश प्रसाद दुबे 53 वर्ष को गिरफ्तार किया है।

पुल के नीचे मिली अज्ञात युवक की लाश

रीवा। मऊगंज जिले के नईगढ़ी थाना क्षेत्र अंतर्गत कोट कुशहा गांव स्थित पहाड़ी क्षेत्र में पुल के नीचे अज्ञात युवक की लाश मिलने से सनसनी फैल गई। शव दो से तीन दिन पुराना बताया जा रहा है। बताया गया कि युवक का चेहरा भी जला हुआ है, साथ ही उसकी जीभ बाहर निकली हुई है। आशंका है कि गला दबाकर पहले आरोपियों ने युवक की हत्या की, इसके बाद पहचान छिपाने उसके चेहरे को आग से जला दिया। जानकारी के मुताबिक ग्राम पंचायत कुशहा क्षेत्र में प्रधानमंत्री सड़क में पुल के नीचे युवक की लाश आसपास से गुजर रहे कुछ छात्रों ने देखी थी जिन्होंने ग्रामीणों को घटना की जानकारी दी और पुलिस को सूचना दी गई। लाश को देखकर उसकी उम्र 22 से 26 वर्ष के बीच बताई जा रही है। बताया गया कि एक छात्र स्कूल की परीक्षा देकर जा रहा था और वह शौच के लिए वहां बैठा तभी उसकी नजर पुल के नीचे पड़ी लाश पर गई और उसने स्थानीय सरपंच अली अहमद को जानकारी दी। पुलिस शिनाख्तगी के प्रयास में है।

नाबालिग किशोरी ने बहुती प्रपात में छलांग लगाकर दी जान

नईगढ़ी पुलिस मर्ग कायम कर कारणों का लगा रही पता

जागरण, रीवा। नईगढ़ी थाना क्षेत्र अंतर्गत बहुती जल प्रपात में एक किशोरी का शव मिलने से हड़कंप मच गया। स्थानीय लोगों ने मामले की सूचना नईगढ़ी पुलिस को दी थी जिसके बाद पुलिस ने ग्रामीणों के सहयोग से शव को प्रपात से बाहर निकलवाया। घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार रैना विश्वकर्मा उर्फ पार्वती पिता नंदलाल विश्वकर्मा उम्र 17 वर्ष निवासी रतनगवां थाना मऊगंज शुक्रवार को दिन में 11 बजे घर से मऊगंज कॉलेज के लिए निकली थी। दोपहर 2 बजे की गाड़ी से छात्रा जब घर नहीं पहुंची तो पिता द्वारा मोबाइल से बार-बार संपर्क करने के बाद भी उसका फोन नहीं उठा और परिजनों ने किशोरी की तलाश शुरू की जब जानकारी नहीं मिली तो परिजनों ने शाम 6 बजे मऊगंज थाना पहुंचकर गुमशुदगी दर्ज कराई। इस दौरान छात्रा का बैग प्रपात के पास देखा गया, जिसमें उसके घर का नाम पता फोन नंबर लिखा हुआ था। क्षेत्रीय व्यक्ति ने बैग खोलकर देखा तो उसके पिता का मोबाइल नंबर मिला, उन्होंने सूचना दी की एक बैग मिला है। पिता सुबह प्रपात के पास पहुंचे तो बैग देखकर पहचान गए कि यह उनकी पुत्री रैना का बैग है। इसके बाद प्रपात के आसपास पता तलाश करने लगे। कुछ देर में चट्टानों के बीच शव दिखाई दिया। पिता ने कपड़े से बेटी की पहचान की, जिसके बाद तत्काल नईगढ़ी पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस मौके पर पहुंची और ग्रामीणों की मदद से शव को बाहर निकलवाकर पीएम के लिए अस्पताल भिजवाया। मृतका के बैग में एक सुसाइड नोट भी मिला है। फिलहाल नईगढ़ी पुलिस मर्ग कायम कर पूरी घटना की गंभीरता से जांच कर रही है।

कुएं में गिरने से नव विवाहिता की मौत

रीवा। मऊगंज जिले के नईगढ़ी थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम अकौरी में एक नव विवाहिता की कुंए में गिरने से मौत हो गई। बताया गया कि नव विवाहिता कुंए में पानी भरते समय हादसे का शिकार हो गई। पानी भरने के दौरान अचानक उसका पैर फिसल गया और वह कुंए में समा गई। आसपास के लोगों को जब इसकी जानकारी हुई और उसे बाहर निकाला गया तब तक उसकी मौत हो चुकी थी। घटना में रंजना साकेत पति बृजेश साकेत 23 वर्ष की मौत हो गई। मृतका रोज की तरह कुआं में पानी भरने गई थी। जहां वह अनियंत्रित होकर गिर गई। जब तक उसे कुएं से बाहर निकाला गया तब तक उसकी जान जा चुकी थी।

विधानसभा अध्यक्ष तीन मार्च को आएंगे रीवा

रीवा। विधानसभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर तीन मार्च को वायुयान द्वारा दोपहर 12.45 बजे रीवा एयरपोर्ट पहुंचेंगे तथा सर्किट हाउस रीवा पहुंचकर अपरान्ह 1.30 बजे जनप्रतिनिधियों से मुलाकात करेंगे। विधानसभा अध्यक्ष अपरान्ह 2.30 बजे प्रदेश मंत्री राजेश पाण्डेय के निवास पर उनके पिता एवं वरिष्ठ नेता केशव पाण्डेय के निधन पर शोक संतप्त परिजनों से भेंट करेंगे। तदुपरांत अपरान्ह 3.30 बजे वरिष्ठ नेता अर्जुन सिंह चौहान के निधन पर उनके निवास पहुंचकर शोक प्रकट करेंगे। विधानसभा अध्यक्ष शाम 4.15 बजे सतना जिले के रामपुर बघेलान के लिए प्रस्थान करेंगे।

दुष्कर्म के आरोपी को शाहपुर पुलिस ने किया गिरफ्तार

रीवा। दुष्कर्म के आरोपी को शाहपुर पुलिस ने पीड़िता की शिकायत के बाद पुलिस ने गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया जहां से उन्हें जेल भेज दिया है। पीड़िता ने घटना की शिकायत शाहपुर थाना में 27 फरवरी को दर्ज करवाई थी, आरोपी ने जबरन पीड़िता को अपनी हवस का शिकार बनाया था। जिसके बाद पुलिस ने आरोपी के खिलाफ धारा 74,75,76 बी.एन.एस का अपराध पंजीबद्ध कर पीड़िता के धारा 183 बी.एन.एस .एस के कथन माननीय न्यायालय हनुमना से कराया। जिसके बाद आरोपी मोहम्मद रहीश बक्स पिता मुराद बक्स 38 वर्ष निवासी ग्राम ठुर्रिहा थाना शाहपुर को पुलिस ने गिरफ्तार किया है।

चर्म, सौन्दर्य, एलर्जी एवं स्कीन केयर
डॉ. सिद्धार्थ तिवारी MBBS, MD (Dermatology & STD)
परामर्श शुल्क मात्र 300/-
मिलने का समय प्रतिदिन सुबह 10 से 2 बजे सायं 4 से 7 बजे (रविवार अवकाश)
चर्म, सौन्दर्य, नाखून, बाल, कुष्ठ, गुप्त (यौन) एवं एलर्जी रोग विशेषज्ञ
कामता मेडिकल ए-ब्लॉक समदड़िया, न्यू बस स्टैन्ड रीवा (म.प्र.)
9399312433 9981287311

INDIAN EXCELLENCE HR. SEC. SCHOOL
रीवा शहर में संचालित एकमात्र सर्वसुविधा युक्त उत्कृष्ट आवासीय विद्यालय
हमारी सुविधाएं
100% Result in Board Classes
प्रवेश प्रारंभ नर्सरी से 12वीं तक
TEACHER'S REQUIREMENTS
P.R.T./T.G.T./P.G.T. - All Subject & P.T.I. Male / Female
D.Ed/B.Ed. Compulsory
Submission of Resumes till 15.03.2025
कान्हा पार्क के सामने, खदान रोड संजय नगर, रीवा
9165793088, 6260194481, 7415272281
www.iesrewa.com iesrewa@gmail.com

GYANASTHALI Sr. Sec. School
[Affiliated to CBSE, New Delhi]
Sirmour Chouraha, Rewa (M.P.)
23 YEARS
ADMISSIONS OPEN
Largest infrastructure
innovative teaching techniques
100+Faculty 80+Rooms (with Smart Class)
Zee Media Group Award for Excellence in Education
Air Conditioned Classrooms for Pre-Primary
French Class 100+ Computer Labs Artificial Intelligence Class
Basketball Taekwondo Skating Volleyball
Contact No.: 9981499988 | www.gyanasthali.org

REWA INTERNATIONAL PUBLIC SCHOOL
Affiliated to CBSE New Delhi
WALK IN INTERVIEW
on 8th & 9th March 2025
PGT English, History, Polity, Physics, Economics, Math
PGT English, Computer Dance, S.S.T.
PRT 5 Teachers | PPRT 3 Teachers
Call: 9806154224, 8120154224
Add.: Ward 15, Gadariya, Ratahara, Rewa (M.P.)
Email: ripsrewaschool@gmail.com

कामता मल्टी स्पेशलिटी क्लीनिक एन्ड डायग्नोस्टिक, रीवा में
ब्रेन, स्पाइन एवं न्यूरो रोग परामर्श OPD 02 मार्च, रविवार
डॉ. सचिन सिंह ब्रेन, स्पाइन एवं न्यूरो रोग सुपर स्पेशलिस्ट
कामता मेडिकल ए-ब्लॉक समदड़िया, न्यू बस स्टैन्ड रीवा (म.प्र.)
मो.: 9399312433, 9981287311

कॉस्मेटिक स्किन एंड प्लास्टिक सर्जरी क्लीनिक
डॉ. सौरभ सक्सेना एम.बी.बी.एस., एम.एस. (सर्जरी), MCH (प्लास्टिक सर्जरी)
07662.352194, 9827268788, 9825935433
फेस रिजुवनेशन | लेजर ट्रीटमेंट
समय: 4:00 PM से 7:30PM सोमवार से शनिवार, रविवार 12 PM- 02:00PM

डॉ. निशा डायलिसिस सेंटर
पता- अग्रवाल नर्सिंग होम, खुटेही, रीवा
24/7 Our Services Dialysis (डायलिसिस)
9174566996 7771009417 9302496943
अन्य सुविधाएं: 24x7 मेडिसिन विशेषज्ञ डॉ. ईशान गायेल, 24x7 स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. रेनू यादव, वेंटिलेटर एवं Bipap, 24x7 मेडिकल स्टोर

कैंसर OPD प्रतिदिन रीवा में
डॉ विनीत कुमार तिवारी (कैंसर सर्जन) MBBS, MS (सर्जरी)
कामता मेडिकल ए-ब्लॉक समदड़िया, न्यू बस स्टैन्ड रीवा (म.प्र.) मो.: 9399312433, 9981287311

द हार्ट क्लीनिक
डॉ. शिरीष मिश्रा M.D. मेडिसिन, D.N.B. कार्डियोलॉजी, कंसल्टेंट इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट
हृदय रोग विशेषज्ञ
पूर्व कंसलटेंट - मैक्स हॉस्पिटल & B.L.कपूर हॉस्पिटल, नई दिल्ली
प्रतिदिन रहेंगे उपलब्ध
आराध्या मेडिकल स्टोर समदड़िया गोल्ड मॉल, शॉप नं. 27 मी एण्ड मोम्स के बगल में, बाल भारती स्कूल के सामने, सिरमौर चौक, रीवा (म.प्र.)
फोन न.- 07662 454917 मोबाइल न.: 9752244218
व्यवस्थापक :- राहुल तिवारी निरंजन मेडिकल

विंध्य की एक मात्र महिला चर्म रोग विशेषज्ञ
डॉ. कोम्पल अग्रवाल MBBS, MD (Dermatology & STD)
चर्म, सौंदर्य, नाखून, बाल, यौन, एवं कुष्ठ रोग विशेषज्ञ
मो.- 7223850184, 7247097637
सौन्दर्य क्लीनिक शॉप नं. 86 तानसेन कॉम्पलेक्स कृष्णा राजकपूर ऑडिटोरियम के सामने सिरमौर चौराहा रीवा (म.प्र.)

मिनर्वा आई.व्ही.एफ. (टेस्ट ट्यूब बेबी सेन्टर)
(निः संतान दंपतियों के लिए)
डॉ. ज्योति ओझा मिश्रा स्त्री एवं प्रसूति रोग MBBS, MD (ऑब्स & गायनी)
मध्यप्रदेश की प्रथम एवं अत्याधुनिक ICSI मशीन द्वारा इलाज उपलब्ध
टोल फ्री : 18008892250, मो.: 8878819362, 9303733830
खन्ना टॉवर, पुराना बस स्टैण्ड, रीवा

जागरण पब्लिकेशन प्रा. लिमि. के लिए मुद्रक/प्रकाशक मदन मोहन गुप्ता द्वारा दैनिक जागरण प्रेस गांधी नगर उर्रहट रीवा (म.प्र.)से मुद्रित एवं प्रकाशित। सम्पादकः **मदन मोहन गुप्ता**। आर.एन.आई. नं- 1505/57, डाक पंजीयन क्र.- रीवा संभाग 04 /म.प्र. संस्थापक **स्व. गुरुदेव गुप्त**
कार्यालय:- मोबाइल नं रीवा- 9098357869, 9425018958 **सतना** - 9993315949 **सीधी**-7089620900 **सिंगरौली**-9424652999 E-mail: rewajagrannew2015@gmail.com